

तरेगन

(बाल-किशोर प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ऐ पोथिक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैए।

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-२५-९

मूल्य : भा. रू. २००/-

पहिल संस्करण : २०१०

दोसर संस्करण : २०१३

सर्वाधिकार © श्रीमती रामसखी देवी

पता : गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी
(बिहार) पिन- ८४७४१०

श्रुति प्रकाशन :

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : <http://www.shruti-publication.com>

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

मुद्रक: अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

अक्षर-संयोजक: श्री उमेश मण्डल

डिट्रिब्यूटर:

पल्लवी डिट्रिब्यूटर, वार्ड न. ६, निर्मली (सुपौल), मो. ९५७२४५०४०५,
९९३९६५४७४२

**TAREGAN : Children Maithili Short Stories by Sh. Jagdish Prasad
Mandal.**

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फूलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...

परिचय-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल**जन्म** : ५ जुलाई १९४७ ई.मे**पिताक नाओं** : स्व. दल्लू मण्डल।**माताक नाओं** : स्व. मकोबती देवी।**पत्नी** : श्रीमती रामसखी देवी।**पुत्र** : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।**मातृक** : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।**मूलगाम** : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०**मोबाइल** : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१**ई-पत्र** : jpmandal.berma@gmail.com**शिक्षा** : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।**सम्मान** : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह “तरेगन” लेल “बाल साहित्य विदेह सम्मान” २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।**साहित्यिक कृति** :**उपन्यास** : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३ ई.मे) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।**नाटक** : (१) मिथिलाक बेटा (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३ ई.मे) प्रकाशित।**लघु कथा संग्रह** : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३ ई.मे)**विहनि कथा संग्रह** : (१) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह। पहिल संस्करण-२०१० तथा दोसर २०१३), (२) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३ ई.मे)**एकांकी संग्रह** : (१) पंचवटी (२०१३ ई.मे)**दीर्घ कथा संग्रह** : (१) शंभुदास (२०१३ ई.मे)**कविता संग्रह** : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३ ई.मे)**गीत संग्रह** : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३ ई.मे)

भूमिका

अपने लोकनिक बीच विहनि-कथाक छोट-छीन संग्रह उपस्थित अछि। प्रस्तुत संग्रह एक-लगाति नै लिखि डेढ़-दू सालक बीच लिखल कथा-संग्रह छी, जइमे मौलिक कथाक संग विश्व भरिक साहित्यक सार संक्षेप नेना आ बढ़ैत नेना सभ लेल जुटौल गेल अछि, सबहक प्रति आभार जइसँ रंग-बिरंगक विषय-वस्तुक ई जमघट भऽ गेल अछि।

आजुक भाग-दौड़क जिनगीमे दीर्घ कथा पढ़ैक पलखति नै रहने लघु तथा विहनि कथाक महत स्वतः बढ़ि गेल अछि।

कथा-लेखनमे श्रीनिवास जीक (डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास) सहयोगक चर्च करब केना बिसरि सकै छियनि।

समए-समएपर गजेन्द्र जीक आग्रह आ सुझाव आ संगहि श्रुति प्रकाशनक श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारीक भरपुर सहयोग भेटलासँ लिखैक नव उत्साहो आ अशो मनकें सकत बना देने अछि।

ऐ पोथीक नाओं “तरेगन” श्री धीरेन्द्र कुमार (निर्मली) जीक देल अछि।

अंतमे, कथा-प्रेमी सभसँ आग्रह जे अपन अमूल्य सुझावसँ अवगति करा आगू लेल उत्साहित करथि।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

बाल दिवस,

१४ नवम्बर २००९

एकसत्तरि-

स्रष्टाक समग्र रचना	मनुखक मूल्य
प्रतिभा	मदति नै चाही
मर्म	मेहनतिक दरद
अधखरूआ	मैक्सिम गोर्की
समैक बेरबादी	मूलधन
पहिने तप तखनि ढलिहँ	कपटी मित
खलीफा उमरक सिनेह	भीख
जखने जागी तखने परात	भगवान
अस्तित्वक समाप्ति	एकाग्रचित
खजाना	सीखैक जिज्ञासा
उग्रघारा	अनुभव
बेवहारिक	आसिरवादक विरोध
समर्पण	धर्मक असल रूप
उत्थान-पतन	सौन्दर्य
देवता	स्तब्ध
पाप आ पुण्य	एकता
परख	विधवा बिआह
आलसी	देश सेवाक वृत
प्रेम	आत्मबल- १
हैरियट स्टो	स्वाभिमान
बुझैक ढंग	कलंक
श्रमिकक इज्जत	बुलकी
वंश	भद्रपुरुष
तियाग	झूठ नै बाजब
सद्विचार	आर्दश माए
साहस	नारी सम्मान
बरदास	अनुशासन
भूल	सादा जिनगी
धैर्य	विचारक उदय

पुष्ट इकाइसँ समर्थ राष्ट्र बनैत
डर नै करी
आसिरवाद उलटि गेल
रत्न गमेवाक दुख
निसाँ
सामना
शिष्टाचार
ठक
पत्नीक अधिकार
शिनीची सिनेह
सिखबैक उपए
कर्तव्यपरायन तोता
तस्वीर
मितक खगता
स्वार्थपूर्ण विचार
संगीक महत
उपहास
महादान
भाग्यवाद
सद्गति
आश्रम नै स्वभाव बदली
पुरुषार्थ
नैष्ठिक सुधन्वा
सद्गृहस्त
सद्भाव
आलस्य वनाम पिशाच
स्वर्ग आ नर्क

यथार्थक बोध
विद्वताक मद
अनंत
हँसैत लहास
अनगढ़ चेतना
सत्य विद्या
समता
जेते चोट तेते सक्कत
परिष्कार
कथनी नै करनी
शालीनता
मजूरी
जीवन यात्रा
ज्योति
पवनक विवेक
आत्मबल-२
खुदीराम बोस
शिष्यकेँ शिक्षेता नै परीक्षो
लौह पुरुष
जंग लगल
जीवकक परीक्षा
तप
उल्टा अर्थ
जाति नै पानि
ऊँच-नीच
पागलखाना

स्रष्टाक समग्र रचना

सृष्टि निर्माणक काज सम्पन्न भऽ गेल छल। प्राणी सभकेँ बजा ब्रह्मा अपन-अपन कमीक पूर्ति करा लइले कहलखिन। सभ प्राणी अपन-अपन कमीक चरचा करए लगल। मुदा एक्के बेर जे सभ बाजए लगैत तँ हल्लामे कियो केकरो बात सुनबे ने करैत। तखनि सभकेँ शान्त करैत ब्रह्मा बेरा-बेरी बजैले कहलखिन। सबहक बात सुनि ब्रह्मा केकरो अठन्नी, केकरो चौबन्नी, केकरो दस-पैसी सुधार कऽ देलखिन।

अखनि धरि मनुख पछुआएले छल। पहिने ब्रह्मा नारीकेँ पुछलखिन-

“अहाँमे की कमी रहि गेल अछि, बाजू?”

तमतमाइत नारी कहलकनि-

“हमरा तँ बड़ सुन्नर बनेलौं मुदा अपना सन दोसर नारीकेँ देखि मनमे जलन हुआ लगैए। तँए एक रंग दूटा नारी नै बनबिऔ।”

मुस्कीआइत ब्रह्माजी एकटा ऐना आनि नारीक हाथमे दैत कहलखिन-

“बस, एक्केटा सहेली अहाँ सन बनेलौं। जखनि मन हुआए तखनि आगूमे ऐना रखि देखि लेब। जाँ सेहो देखैक मन नै हुआए तँ ऐना देखबे ने करब।”



प्रतिभा

डाक्टर राममनोहर लोहिया जेहने विद्वान तेहने देशभक्त रहथि। देश-प्रेमक विचार पितासँ विरासतमे भेटल रहनि। तेतबे नै, ओहने मस्त-मौला सेहो रहथि। सदिखन चिन्तन आ आनन्दमे जिनगी बितबैत रहथि। विदेशसँ अबैकाल मद्रास बन्दरगाहपर जहाजसँ उतरला। कलकत्ता जेबाक छेलनि। मुदा संगमे टिकटोक पाइ नै रहनि। बिना भाडा देने केना जइतथि? बंदरगाहसँ उतरि सोझे हिन्दू अखबारक कार्यालयमे जा सम्पादककेँ कहलखिन-

“अहाँक पत्रिका लेल हम दूटा लेख देब।”

सम्पादक कहलकनि-

“लाउ कहाँ अछि।”

लेख तँ लिखल छेलनि नै, कहलखिन-

“कागत-कलम दिअ अखने लिखि कऽ दइ छी।”

लोहिया जीक जवाब सुनि सम्पादक टकर-टकर मुँह देखए लगलनि। तखनि डाक्टर लोहिया अपन वास्तविक कारण बता देलखिन। कारण बुझला पछाति सम्पादकजी बैसबोक आ लिखबोक ओरियान कऽ देलकनि। किछु घंटा पछाति दुनू लेख तैयार कऽ लोहियाजी दऽ देलखिन।

दुनू लेख पढ़ि सम्पादक गुम्म भऽ मने-मन हुनक प्रतिभाक प्रशंसा करए लगलाह।

ज्ञानक महत्ता सर्वोपरि अछि। ई बूझि एक्को क्षण व्यर्थ गमेबाक चेष्टा नै करक चाही। सदिखन अपनाकेँ नीक काजमे लगौने रहक चाही।



मर्म

एकटा स्कूल छल जइमे हेलब सिखौल जाइ छेलै। नव-नव विद्यार्थी प्रवेश लइ छल आ हेलैक कला सीख-सीख बाहर निकलै छल। स्कूलेक आगूमे खूब नमगर-चौड़गर पोखरि छेलै। जेकरा कातमे तँ कम पानि मुदा बीचमे अगम पानि छल।

शिक्षक घाटपर ठाढ़ भऽ देखए लगला। विद्यार्थी सभ पानिमे धँसल। विद्यार्थी सभकेँ आगू मुहँ माने अगम पानि दिस बढ़ल जाइत देखि शिक्षक कहलखिन-

“बाउ, अखनि अहाँ सभ अनजान छी। हेलब नै जनै छी। तँए अखनि अधिक गहीर दिस नै जाउ। नै तँ डूमि जाइ जाएब। जखनि हेलब सीख लेब तखनि पानिक ऊपरमे रहैक ढंग भऽ जाएत। जखनि पानिक ऊपरमे रहैक ढंग सीख लेब तखनि ओकर लाभ अपनो हएत आ दोसरोकेँ डुमैसँ बचा सकब। अहिना संसारमे वैभवोक अछि। अनाड़ी ओइमे डूमि जाइए, मुदा विवेकबान ओइपर शासन करैए। जइसँ अपनो आ दोसरोक भलाइ होइ छै।”

वैभवक स्थितिमे बेकती अपने कृसंस्कारसँ गहीर खाइ खुनि स्वयं डूमि जाइत अछि।



अधखरुआ

दूटा चेला संग गुरु घुमैले विदा भेला। गामसँ निकलि पाँतरमे प्रवेश करिते बाध दिस नजरि पड़लनि। सगरे बाधक खेत सभमे माटिक ढिमका बनौल छल। तीनू गोटे रस्तेपर सँ हियासि-हियासि देखए लगला जे एना किए छै। कनीकाल गुनधुन कऽ दुनू चेला गुरुकेँ कहलकनि-

“अपने एतै छाहरिमे बैसियौ, हम दुनू भाँइ देखने अबै छी।”

‘बड़बड़ियाँ’ कहि गुरु ओतै बैस रहला। दुनू चेला विदा भेल। कातेक खेतसँ ढिमका देखैत दुनू गोटे सौँसे बाधक ढिमका देखि, घूमि आएल। सभ ढिमकाक बगलमे कूप खूनल छेलै। मुदा कोनो कूपमे पानि नै छेलै। खाली एकेटा कूपमे पानिओ छेलै आ ढेकुलो गाड़ल छेलै। ओना तँ सौँसे बाधे खीड़ाक खेती भेल छल मुदा सभ खेतक लत्ती पानिक दुआरे जरि गेल रहए। खाली एकेटा खेतमे झमटगर लत्तीओ रहै आ सोहरी लगल फड़लो छेलै।

गुरु लग आबि चेला कहलकनि-

“सभ ढिमका कातमे कूप खुनल छै मुदा पानि नै छै खाली एकेटा कूपमे पानिओ छै, ढेकुलो गाड़ल छै आ खेतमे सोहरी लगल खीड़ो फड़ल छै।”

चेलाक बात धियान सँ सुनि गुरु पुछलखिन-

“एना किए छै?”

दुनू चेला चुप्पे रहल। चेलाकेँ चुप देखि गुरु कहए लगलखिन-

“एहेन लोक गामो-घरमे ढेरियाएल अछि जे चट मंगनी पट बिआह करए चाहैए। जेते उथर कूप छै जइमे पानि नै छै, ओ खुननिहारो सभ ओहने उथर अछि। कोनो काजकेँ -चाहे आर्थिक होय आकि बौद्धिक आकि सामाजिक- अगर ढंगसँ नै कएल जेतै तँ ओहने हेतै। बीचमे जे एकटा कूप देखलिये ओ खुननिहार किसान मेहनती छथि। अपन धैर्य आ श्रमसँ माटिक तरक पानि निकालि खीड़ा उपजौने छथि। तँए हुनका मेहनतिक फल भेट रहल छन्हि। बाँकी सभ कामचोर अछि तँए आशपर पानि फेरा गेलै।”



समैक बेरबादी

एकटा बेवसायी खिस्सा सुनलक जे राजा परिक्षित एक्के सप्ताह भागवत सुनि ज्ञानवान भऽ गेल छला। तँए हमहूँ किएक ने भऽ सकै छी। अहिना सोचि ओ कथावाचक भँजियबए लगला। कथावाचक भेटलनि। दुनू गोटे माने कथोवाचक आ बेवसायीओ अपन-अपन लाभक फेरिमे रहथि। कथावाचक सोचथि जे मालदार सुनिनिहार भेटल आ बेवसायी सोचथि जे जिनगी भरि बड़मानी कऽ बहुत धन अरजलों, से नै तँ आबो -मरै बेर- किछु ज्ञान अरजि ली जइसँ मुक्ति हएत।

कथा शुरू भेल। सप्ताह भरि कथा चलल। सप्ताह बितलापर बेवसायी कथावाचकँ माने व्यासकँ कहलकनि-

“अहाँ नीक-नहाँति कथा नै सुनेलौं हमरा ज्ञान कहाँ भेल? दछिना नै देब।”

बेवसायीक बात सुनि व्यासजी कहलखिन-

“अहाँक धियान सदखन पाइ कमाइ दिस रहैए तँ ज्ञान केना हएत?”

दुनू एक-दोसरकँ दोख लगबए लगला। कियो अपन गल्ती मानैले तैयारे ने। दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ी होइत-होइत पटका-पटकी हुअ लगल। तखने एकटा विचारवान बेकती रस्तासँ गुजरै छला। ओ देखलखिन। लगमे जा दुनू गोटेकँ झगड़ा छोड़बैत पुछलखिन। दुनू गोटे अपन-अपन बात ओइ बेक्तीकँ कहलकनि। दुनूक बात सुनि ओ बेकती दुनूक हाथ-पएर बान्हि कहलखिन-

“आब अहाँ दुनू गोटे एक-दोसरक बान्ह खोलू।”

बान्हल हाथसँ केना खुलितै, बन्हन नै खुलल। तखनि ओ निर्णए दैत कहलखिन-

“दुनू गोटेक मन केतौ और छल तँए सफल नै भेलौं। सप्ताह भरिक समए दुनूक गेल तँए अपन-अपन घाटा उठा घर जाउ। एकात्म भेने बिना आध्यात्मिक उदेसक पूर्ति नै होइ छै।”



पहिने तप तखनि ढलिहें

एक दिन एकटा कुम्हार माटिक ढेरी लग बैस, माटिसँ लऽ कऽ पकौल वर्तन धरिक विचार मने-मन करै छल। कुम्हारकेँ चिन्तामग्न देखि माटि कहलकै-

“भाय, तौँ हमर एहेन वर्तन बनाबह जइमे शीतल पानि भरि कऽ राखी आ प्रियतमक हृदए जुड़ा सकी।”

माटिक सवाल सुनि, कनीकाल गुम्म भऽ कुम्हार माटिकेँ कहलक-

“तोहर विचार तखने संभव भऽ सकै छौ जखनि तोरा कोदारिक चोट, मुंगरीक मारि खाइक आ गदहापर चढ़ैक, पएरक गंजन सहैक तथा आगिमे पकैक साहस हेतौ। ऐसँ कम गंजन भेने पवित्र पात्र नै बनि सकमै।”



खलीफा उमरक सिनेह

खलीफा उमर गुलामक संग बुलैले देहात दिस जाइत रहथि। किछु दूर गेलापर देखलखिन जे एकटा बुढ़िया जोर-जोरसँ आँगनमे बैस कानि रहल अछि। रस्तासँ ससरि ओ डेढ़ियापर जा ओइ बुढ़ियासँ कनैक कारण पुछलखिन। हुचकैत बुढ़िया कहए लगलनि-

“हमर जुआन बेटा लड़ाइमे मारल गेल। हम भूखे मरै छी मुदा एक्को दिन खलीफा उमर खोजो-खबरि लइले नै आएल।”

बुढ़ियाक बात सुनि उमर चोट्टे घूमि घरपर आबि एक बोरी गहुम अपने माथपर लऽ बुढ़िया ओइठाम विदा भेला। माथपर गहुमक बोरी देखि गुलाम कहलकनि-

“अपने बोरी नै उठबिओ। हमरा दिअ नेने चलै छी।”

गुलामकेँ उमर जवाब देलखिन-

“हम अपन पापक बोझ कऽ खुदा घर नै जाएब तँ पाप केना कटत? अहाँ तँ हमरा पापक भागी नै हएब।”

गहुमक बोरी बुढ़ियाक घर उमर पहुँचा देलखिन। गहुम देखि बुढ़िया नाओं पुछलकनि। मुस्कीआइत उमर जवाब देलखिन-

“हमरे नाओं उमर छी।”

आसिरवाद दैत बुढ़िया कहलकनि-

“अपन प्रजाक दुख-दरदकेँ अपन परिवारक दुख-दरद जकाँ बूझि कऽ चलब तखने आदर्श बनि सकब। जखनि आदर्श बनब तखने हजारो-लाखो लोकक दुआ भेटत आ अमर हएब।”



जखने जागी तखने परात

प्रसिद्ध उपन्यासकार डाक्टर क्रोनिन बड गरीब रहथि। मुदा जखनि पी.एच.डी. केलनि आ किताब सभ बिकए लगलनि तखनि धीरे-धीरे सुभ्यस्त हुअ लगला। धनकँ अबैत देखि मनो बढए लगलनि। क्रिया-कलाप सेहो बदलए लगलनि। क्रिया-कलापकँ बदलैत देखि पत्नी कहलकनि-

“जखनि हम सभ गरीब छेलौं तखने नीक छेलौं जे कम-सँ-कम हृदैमे दयो तँ छेलए। मुदा आब दया समापत भेल जा रहल अछि।”

पत्नीक बात सुनि क्रोनिन महसूस करैत कहलखिन-

“ठीके कहलौं। धनीक धनसँ नै होइए बल्की मन आ हृदैसँ होइए। हम अपन रस्तासँ भटैक गेल छी। जौं अहाँ नै चेतैबतौं तँ हम आरो आगू बढि ओइ जगहपर पहुँच जैतौं जेतए एक्कोटा मनुखक बास नै होइ छै।”



अस्तित्वक समाप्ति

एकठाम कनी हटि-हटि कऽ तीनटा पहाड़ छेलै। पहाड़क पजरमे नमगर आ गहीर खाधिओ छेलै। जइसँ लोकक आवाजाही नै भऽ पबै। एक दिन एकटा देवता ओइ दिशासँ होइत गुजरै छेला। तीनू पहाड़कें देखि पुछलखिन-

“ऐ क्षेत्रक नामकरण करबाक अछि से केकरा नाओसँ करी? संगहि अपन कल्याण लेल की चाहै छी?”

पहिल पहाड़ कहलकनि-

“हम सभसँ ऊँच भऽ जाइ जइसँ दूर-दूर देखि पड़िऐ।”

दोसर बाजल-

“हमरा खूब हरिअर-हरिअर प्रकृतिक सम्पदासँ भरि दिअ। जइसँ लोक हमरा दिस आकर्षित हुअए।”

तेसर कहलक-

“हमर उँचाइकें छील ऐ खादिकें भरि दिऔ जइसँ ई सौंसे क्षेत्र उपजाउ बनि जाए जइसँ लोकोक आबाजाही भऽ जेतै।”

तीनूक जोगार लगा देवता विदा भऽ गेला। एक बर्ख पछाति तीनूक परिणाम देखैले पुनः एला। पहिल पहाड़ खूब ऊँचगर भऽ गेल छल। मुदा कियो ओम्हर जेबे ने करैत। पानि-पाथर, बिहाड़ि, रौद आ जाडक मारि सभसँ बेसी ओकरे सहए पड़ै। दोसर तेते प्रकृतिक सम्पदासँ भरि गेल जे बोनाह भऽ गेल। बोनैया जानवरक डरे कियो ओम्हर जेबे ने करैत। तेसर पहाड़सँ खाधिओ भरि गेलै आ अपनो समतल भऽ गेल। खाधिसँ लऽ कऽ पहाड़ धरिक जगह उपजाउ बनि गेलै। खेती-वाड़ी करैले लोकक आवाजाही दिन-राति भऽ गेलै।

तेसर पहाड़क नाओपर क्षेत्रक नामकरण करैत देवता कहलखिन-

“यएह पहाड़ अपन अस्तित्व समाप्त कऽ खाधिओकें अपना हृदयमे लगौलक। जइसँ ई क्षेत्र उपजाउ बनि गेल। तँए अहीक नाओपर ऐ क्षेत्रक नाओ राखब उचित।



खजाना

एकटा इलाकामे रौदी भऽ गेलै। सभ तरहक परिवारकेँ सभ तरहक जीबैक रस्ता छेलै। मुदा एकटा दशे कट्टाबला किसान मजदूर छल। जे अपने खेतमे मेहनति कऽ गुजर करै छल। रौदी देखि वेचारा सोचए लगल जे जाबे पानि नै हएत ताबे खेती केना करब? जाँ खेती नै करब तँ खएब की? तँ अनतइ चलि जाइ जे काज लागत तँ गुजरो चलत। जब बर्खा हेतै तँ धुमि कऽ चलि आएब आ खेती करब। ई सोचि सभ तूर नुआ-वस्तु लऽ विदा भऽ गेल।

जाइत-जाइत दुपहर भऽ गेलै। भूखे-पिआसे बच्चा सभ लटुआए लगलै। छोटका बच्चा ठोहि फाड़ि-फाड़ि कानए लगलै। रस्ता कातमे एकटा झमटगर गाछ देखि सभकेँ छाहरिक आश भेलै। सभ तूर गाछतर पड़ि रहल। छोटका बेटा माएकेँ कहलक-

“माए, भूखे परान निकलैए कुछो खाइले दे।”

बेटाक बात सुनि माएक करेज पधिलए लगलै मुदा करैत की, खाइले तँ किछु रहबे ने करै। मुदा तैयो वेचारी कहलकै-

“बौआ, कनीकाल बरदास करू। खाइक जोगार करै छी।”

सभ तूर जोगारमे जुटि गेल। कियो माटिक गोलाक चूल्हि बनबए लगल, तँ कियो जारनि आनए गेल। कियो पानि आनए इनार दिस विदा भेल। सभकेँ सभ काजमे लगल देखि गाछक ऊपरसँ एकटा चिड़ै पुछलकै-

“ऐ मूर्ख, पकबैक तँ सभ जोगार सभ करै छह मुदा पकेबह कथी? जखनि पकबैक कोनो चीज छहे नै तँ छुच्छे चूल्हि जरेबह।”

बड़का बेटा यएह सोचै छल जे केतौसँ किछु कन्द-मूल आनि उसनि कऽ खाएब। मुदा तही बीच चिड़ैक मजाक सुनि खिसिआ कऽ कहलकै-

“तोरे सभ परिवारकेँ पकड़ि आनि पका कऽ खेबौ।”

चिड़ैक मुखिया डरि गेल। मने-मन सोचए लगल जे परस्पर सहयोगक पुरुषार्थ किछु कऽ सकैए। तँए झगड़ब उचित नै। मिलान स्वरमे बाजल-

“भाय, हमरा परिवारकेँ किए नाश करबह। तोरा गाड़ल खजाना

देखा दइ छिअ। वएह लऽ आबह आ चैनसँ जिनगी बितबिहऽ।”

ओ चिड़ै खजाना देखा देलकै। सभ मिलि ओइ खजानाकेँ लऽ घर दिस घूमि गेल।

ओकरा घरक बगलेमे दोसरो ओहने परिवार छेलै। जेकरा सभ बात ओ कहि देलकै। मुदा ओइ परिवारक सभ कोढ़ि आ झगडाउ रहए। खजानाक लोभे ऊहो सभ-तूर विदा भेल। जाइत-जाइत ओइ गाछ तर पहुँचल। पहलके चिड़ै जकाँ ईहो सभ भानसक नाटक करए लगल। गारजन जेकरा जे अढ़बै से करैक बदला झगड़े करए लगै। गाछपर सँ वएह चिड़ै कहलकै-

“भोजनक जोगारे करैमे तँ सभ कटौझ करै छह तखनि पकेबह कथी?”

पहुलके जकाँ परिवारक मुखिया कहलकै-

“तोरे पकड़ि कऽ पकेबह?”

हँसैत चिड़ै उत्तर देलकै-

“हमरा पकड़ैबला कियो और छल जे सभ धन लऽ चलि गेल। तोरा बुत्ते किछु ने हेतह?”



उग्रघारा

द्वापर युगक संध्याकालीन कथा छी। महाभारतक लड़ाइ सम्पन्न भऽ गेल छल। एक दिन एकांतमे बैस अर्जुन त्रेताक राम-रावणक लड़ाइ आ द्वापरक कौरव-पाण्डवक लड़ाइक तुलना मने-मन करै छला। अनासुरती मनमे उठलनि जे लंका जाइकाल रामक सेना एक-एक पाथरक टुकड़ाकेँ जोड़ि जे समुद्रमे पुल बनौलनि, ओ तँ एक तीरोमे बनि सकै छल। ऐ प्रश्नपर जेते सोचथि तेते शंका बढ़ले जान्हि। अंतमे, यह सोचलनि जे पम्पापुरमे हनुमान तपस्या कऽ रहल छथि तँए हुनकेसँ किए ने पूछि लेल जाए।

हनुमानकेँ भँजियबैले अर्जुन विदा भेला। जाइत-जाइत हनुमानक कृटीपर पहुँचलथि। हनुमान तपस्यामे लीन रहथि। कुट्टीक आगूमे बैस अर्जुन हनुमानक धियान टुटैक प्रतीक्षा करए लगला। जखनि हनुमानक धियान टुटलनि तँ अर्जुनकेँ देखलखिन। आसनसँ उठि अतिथि-सत्कार करैत हनुमान अर्जुनकेँ पुछलखिन-

“अहाँ के छी, कोन काजे ऐठाम एलौं हेन?”

अपन परिचए दैत अर्जुन कहए लगलखिन-

“अपने त्रेताक महावीर छी तँए एकटा शंकाक समाधान लेल एलौं हेन।”

“पुछू।”

“लंका जाइकाल जे समुद्रमे एक-एकटा पाथरक टुकड़ा जोड़ि जे पुल बनौल, ओ तँ एक तीरोमे बनि सकै छल?”

अर्जुनक बात सुनि किछु काल गुम्म भऽ हनुमान उत्तर देलखिन-

“हँ, मुदा ओ ओते मजगूत नै होइतै जेते एक-एक पाथरक टुकड़ा जोड़ि कऽ भेलै।”

हनुमानक उत्तरसँ अर्जुन असहमत होइत कहलखिन-

“तीरोक बनल पुल तँ ओहने मजगूत भऽ सकै छेलै?”

ऐ प्रश्नपर दुनूक बीच मतभेद भऽ गेलनि। अंतमे परीक्षाक नौबत आबि गेलै। दुनू गोटे समुद्रक कात पहुँचला। तरकशसँ तीर निकालि अर्जुन

धनुषपर चढ़ा समुद्रमे छोड़लनि। पुल बनलै। अपन विकराल रूप बना हनुमान पुलपर कुदबाक उपक्रम केलनि। अन्तर्यामी कृष्ण सभ देखैत रहथि। मने-मन सोचलनि जे महाभारतक नायक अर्जुन हारि रहल छथि। हुनक हारब हमर हारब हएत। संगहि महाभारतक लड़ाइ सेहो झूठ भऽ जेतै। तँए प्रतिष्ठा बँचबैक घड़ी आबि गेल अछि। जइ सोझे हनुमान पुलपर खसितथि तइ सोझे कृष्ण अपन कन्हा पुलक तरमे लगा देलखिन। हनुमान कुदला। पुल तँ टुटैसँ बँचि गेल मुदा कृष्णक करेज चहकि गेलनि। जइसँ पानिमे खून पसरए लगलै। खूनसँ रंगाइत पानि देखि हनुमान धियान करए लगला जे एना किएक भऽ रहल छै। भँजियबैत ओ ओइ जगहपर पहुँच कृष्णकें देखलखिन।

अचेत कृष्णकें देखि, दुनू हाथ जोड़ि हनुमान क्षमा मंगलखिन।



बेवहारिक

जीवनी आ अनाड़ी माने बेवहारिक आ अबेवहारिकक प्रश्न असान नै। ऐ विशाल संसारमे लाखो-करोड़ो ढंगक जिनगी बना लोक जीबैए। एकक जिनगी दोसरसँ मिलबो करैत आ भिन्नो होइत। तँए एकक बेवहारिक ज्ञान दोसरा लेल नीको होइए आ अधलो।

चारि आदमी स्नातक महाविद्यालयसँ निकलि गाम जाइत रहथि। चारुकँ अपन-अपन ज्ञानपर गर्व रहनि। दुपहर भऽ गेल छल। सभकँ भूख लगलनि। रस्तामे रूकि खाइक ओरियानमे चारु गोटे जुटि गेला। तर्कशास्त्री चिक्कस आनए दोकान गेला। प्लोथिनक झोरामे चिक्कस कीनि अबै छला। मनमे फुडलनि जे झोरा मजगूत अछि कि नै? तथ्य जनैले झोराकँ हाथसँ दबलनि। झोरा फाटि गेल। चिक्कस छिड़िया कऽ माटिमे मिलि गेल। फेर घूमि कऽ चाउर कीनि ओरिया कऽ नेने एला।

कलाशास्त्री जारनि आनए गेल छला। हरिअर-हरिअर सुन्दर गाछ देखि ओ मुग्ध भऽ गेला। गाछसँ सूखल जारनि नै तोड़ि काँचे झाड़ी काटि कऽ नेने आएल एला।

कहुना-कहुना कऽ तेसर पाक-शास्त्री वएह कँचका जारनि पजारि बटलोही चढ़ौलथि। अदहन जखनि बजलै तँ चाउर लगौलथि। थोड़बेकाल पछाति बटलोहीमे चाउरो आ पानिओ खुदबुदाए लगलै। बटलोहीमे खुदबुदाइत देखि पाक-शास्त्री मग्न भऽ गेला। चारिम जे व्याकरण जननिहार छला बटलोहीक खुदबुदीक अवाज सुनि व्याकरणक उच्चारणक हिसाबसँ गलत बूझि, तमसा कऽ ओकरा उल्टा देलखिन। सभटा भात चूल्हिमे चलि गेल। बगलेमे ठाढ़ एक गोटे सभ तमाशा देखैत रहथि। चारुकँ भूखल देखि हुनका दया लगलनि ओ अपन मोटरीसँ नून-सतुआ निकालि चारु गोटेकँ खाइले दैत कहलखिन-

“किताबी ज्ञानसँ बेवहारिक अनुभवक मूल्य अधिक होइ छै।”



समर्पण

समुद्रसँ मिलैले धार विदा भेल। रस्तामे बलुआही इलाका पड़ै छेलै। जुआनीक जोशमे धार विदा तँ भेल मुदा रस्ताक बालु आगू बढ़ै ने दइ छेलै। सभ पानि सौंखि लिअए। धारक सपना टुटए लगलै। मुदा तैयो साहस कऽ धार अपन उद्गम स्रोतसँ जल लऽ लऽ दौग कऽ आगू बढ़ए चाहै छल मुदा तैयो धारक सभ पानि बालु सौंखि लइ छेलै। जइसँ धार आगू बढ़ैमे असफल भऽ जाइ छल। अंतमे झुंझला कऽ निराश भऽ धार बालुकें पुछलकै-

“समुद्रमे मिलैक हमर सपना अहाँ नै पूर हुए देब?”

बालु उत्तर देलकै-

“बलुआही इलाका होइत जाएब संभव नइए। अगर जौं अहाँ अपना प्रियतमसँ मिलए चाहै छी तँ पहिने अपन सम्पति वादलकें सौंपि दिऔ, तखने पहुँच पाएब।”

अपन अस्तित्वकें समाप्त करबाक अद्भुत समर्पणक साहस धारकें हेबे ने करै। मुदा बालुक विचारमे गंभीरता छेलै। किछु काल विचारि धार समर्पण लेल तैयार भऽ गेल। तखनि ओ पानिक बूनक रूपमे अपनाकें बदलि वादलक सवारीपर चढ़ि समुद्रमे जा मिलल।



उत्थान-पतन

एकटा शिष्य गुरुसँ पुछलकनि-

“मनुख शक्तिक भंडार छी, फेर ओ किए डुमैए-गिड़ैए?”

शिष्यक प्रश्न सुनि गुरु कनीकाल सोचि अपन कमंडल पानिमे फेक देलखिन। कमंडल पानिमे तैरए लगल। कनीकालक बाद कमंडल निकालि पेनमे भूर कऽ देलखिन। भूर केला पछाति फेर कमंडलकेँ पानिमे फेकलखिन। कमंडल डूमि गेल। डुमल कमंडलकेँ देखबैत गुरु कहलखिन-

“जहिना छेद भेल कमंडल पानिमे डूमि गेल मुदा बिनु छेद भेल कमंडल नै डुमल तहिना मनुखोक अछि। जइ मनुखमे संयम छै ओ ऐ संसार रूपी पोखरिमे नै डुमैए मुदा जे असंयमी अछि ओ ओइ छेद भेल कमंडल जकाँति डूमि जाइत अछि। अहिना गाएकेँ अगर चालनिमे दुहल जाए तँ दूध धरतीपर गिरत मुदा जौँ साँस वर्तनमे दुहल जाएत तँ वर्तनमे रहत। तहिना इन्द्रिय शक्ति जौँ मानसिक शक्तिकेँ कुमार्ग दिस लऽ जाएत तँ ओ ओही चालनि जकाँ भऽ जाएत। मुदा जौँ सुमार्ग दिस बढ़त तँ ओ जरूर शक्तिशाली मनुख बनत।”



देवता

मनुखक रोम-रोममे ईश्वर-परब्रह्म समाएल छथि। केकरो अहित करबाक इच्छा करब अपना लेल पापकेँ बजाएब छी। दधीचिक पुत्र पिप्लाद अपन माएक मुहँ अपन पिताक हड़डी देवता द्वारा मांगब आ ओइसँ बनौल बज्रसँ अपन प्राण बचाएब सुनलनि। सुनिते पिप्लादकेँ देवताक प्रति असीम घृणा मनमे उठलनि। मने-मन सोचए लगला जे अपन स्वार्थ साधेले दोसरक प्राण हरब, केते नीचता छी। मनमे क्रोध जगलनि। पिताक बदला लइले पिप्लाद तप करैक विचार केलनि।

पिप्लाद तप शुरू केलनि। तप शुरू करिते मनक ताप कमए लगलनि। बहुत दिनक पछाति भगवान शिव प्रकट भऽ कहलखिन-

“वर मांगू?”

प्रणाम कऽ पिप्लाद शिवकेँ कहलखिन-

“अपने अपन रुद्र रूप धारण कऽ ऐ देवता सभकेँ डाहि कऽ भस्म कऽ दिऔ।”

पिप्लादक बात सुनि शिव स्तब्ध भऽ गेला। मुदा अपन वचन तँ पुरबए पडतनि। तँए देवताकेँ जरबैले तेसर आँखि खोलैक उपक्रम करए लगला। ऐ उपक्रमक आरंभमे पिप्लादक रोम-रोम जरए लगल। अपन अंगकेँ जरैत देखि जोरसँ हल्ला करैत शिवकेँ कहए लगलखिन-

“भगवान, ई की भऽ रहल अछि? देवताक बदला हम खुदे जरि रहल छी!”

मुस्की दैत शिव कहलखिन-

“देवता अहाँक देहमे सन्धिआएल छथि। अवयवक शक्ति हुनके सामर्थ्य छियनि। देवता जरता आ अहाँ बँचल रहब से केना हएत? आगि लगौनिहार स्वयं सेहो जरैए।”

पिप्लाद अपन याचना घुमा लेलनि। तखनि भगवान शिव कहलखिन-

“देवता सभ तियागक अवसर दऽ अहाँ पिताक काजकेँ गौरवान्वित केलनि। मरब तँ अनिवार्य अछि। ऐसँ ने अहाँक पिता बँचितथि आ ने वृत्तासुर राक्षस।”

पिप्लादक भ्रम टूटि गेलनि। ओ आत्म कल्याण दिस मूडि गेला।



पाप आ पुण्य

अपन पोथी-पतरा उनटबैत चित्रगुप्त आसनपर बैसल छला। तैबीच दू गोटेकेँ यमदूत हुनका लग पेश केलक। पहिल बेक्तीक परिचए दैत यमदूत कहलकनि-

“ई नगरक सेठ छथि। हिनका घनक कोनो कमी नै छन्हि। खूब कमेबो केलनि आ मंदिर, धरमशाला सेहो बनौलनि।”

कहि यमराज सेठकेँ कातमे बैसा देलक।

दोसरकेँ पेश करैत बाजल-

“ई बड़ गरीब छथि। भरि पेट खेनाइओ ने होइ छन्हि। एक दिन खाइत रहथि आकि एकटा भूखल कुकुर लगमे आबि ठाढ़ भऽ गेलनि। भूखल कुकुरकेँ देखि थारीमे जे रोटी बँचल छेलनि ओ ओकरा आगूमे दऽ देलखिन। अपने पानि पीब हाथ धोय लेलनि। आब अपने जे आज्ञा दिऐ।”

यमदूतक ब्यान सुनि चित्रगुप्त पोथीओ देखथि आ विचारबो करथि। बड़ीकाल धरि सोचैत-विचारैत निर्णए देलखिन-

“सेठकेँ नरक आ गरीबकेँ स्वर्ग लऽ जाउ।”

चित्रगुप्तक निर्णए सुनि यमराजो आ दुनू बेक्तीओ अचंभित भऽ गेल। तीनू गोटेकेँ अचंभित देखि अपन स्पष्टीकरणमे चित्रगुप्त कहए लगलखिन-

“गरीब आ निःसहाय लोकक शोषण सेठ केने अछि। ओइ निःसहाय लोकक विवशताक दुरुपयोग केने अछि। जइसँ अपनो ऐश-मौज केलक आ बँचल सम्पतिक नाओँ मात्र लोकेषणक पूर्ति हेतु व्यय केलक। तइमे लोकहितक कोन काज भेलै? ओइ मंदिर आ धरमशाला बनबैक पाछू ई भावना काज करै छेलै जे लोक हमर प्रशंसा करए। मुदा पसेना चुबा कऽ जे गरीब कमेलक आ समए एलापर ऊहो कुत्तेकेँ खुआ देलक। जौँ ओकरा आरो अधिक धन रहितै तँ नै जानि केते अभावग्रस्त लोकक सेवा करैत।”



परख

एकटा किसानकेँ चारिटा बेटा रहए। बेटा सबहक बुधि परखैले किसान सभकेँ बजा एक-एक आँजुर धान दऽ कहलक-

“तूँ सभ अपन-अपन विचारसँ एकरा उपयोग करह।”

धानकेँ कम बूझि जेठका बेटा आंगनमे छिड़िया देलक। चिड़ै सभ आबि बीच-बीछ खा गेल...

माझिल बेटा ओइ धानकेँ तरहत्थीपर लऽ-लऽ रगड़ि-रगड़ि, भुस्साकेँ मुहसँ फूकि, खा गेल।

बापक देल धानकेँ सम्पति बूझि साझिल बेटा कोहीमे रखि लेलक, जे जौ कहियो बाबू मंगता तँ निकालि कऽ दऽ देबनि।

छोटका बेटा, ओइ धानकेँ खेतमे बाउग कऽ देलक। जइसँ कएक बर बेसी धान उपजलै।

किछु दिन पछाति चारु बेटाकेँ बजा किसान पुछलक-

“धान की भेल?”

चारु बेटा अपन-अपन केलहा काज कहलकनि। चारु बेटाक काज देखि-सुनि किसान छोटका बेटाकेँ बुधियार बूझि परिवारक भार दैत कहलक-

“परिवारमे एहने गुण अपनबए पड़ै छै। एहने गुण अपनौलासँ परिवार सुसम्पन्न बनै छै।”



आलसी

एकटा गाछपर टिकुली आ मधुमाछी रहै छल। दुनूक बीच घनिष्ठ दोस्ती छेलै। भरि दिन दुनू अपन जिनगीक लीलामे लगल रहै छल। अकलबेरामे दुनू आबि अपन सुख-दुखक गप-सप्य करै छल।

बरसातक समए एलै। सतैहिया लादि देलकै। मधुमाछी लेल तँ अगहन आबि गेल मुदा टिकुली लेल दुरकाल। भूखे-पिआसे टिकुली घरक मोख लग मन्हुआएल बैसल छल। मुँह सुखाएल आ चेहरा मुरुझाएल छेलै। चरौर कए कऽ आबि मधुमाछी टिकुलीकँ पुछलकै-

“बहिन, एहेन सुन्नर समैमे एते सोगाएल किए बैसल छी?”

मधुमाछीक बात सुनि करुआएल मोने टिकुली उत्तर देलकै-

“बहिन, मौसमक सुन्नरतासँ पेटक आगि थोड़े मिझाइ छै। तीन दिनसँ केतौ निकलैक समैए ने भेटल, तँए भूखे तबाह छी।”

उपदेश दैत मधुमाछी कहलकै-

“कुसमए लेल किछु बचा कऽ राखक चाही।”

मुडी डोलबैत टिकुली कहलकै-

“कहलौं तँ बहिन ठीके मुदा बचा कऽ रखलासँ आलसीओ भऽ जैतौं आ भूखल सबहक नजरिमे चोरो होइतौं।”



प्रेम

जखनि परिवारमे पति-पत्नी आ बच्चा सबहक बीच सिनेह रहै छै तखनि परिवार स्वर्गोसँ सुन्दर बूझि पडै छै। नम्हर-सँ-नम्हर विपति परिवारमे किएक ने आबए मुदा ढंगसँ चललापर ऊहो आसानीसँ निपटि जाइ छै।

एकटा छोट-छीन गरीब परिवार छल। दुइए परानी घरमे। सभ साल दुनू परानी -सुनिता आ सुशील- अपन विवाहोत्सव मनबैत। गरीब रहने तँ बहुत ताम-झामसँ उत्सव नै मनबैत मुदा मनबैत सभ साल छल। छोट-मोट उपहार एक-दोसरकँ, यदि स्वरूप दइ छल। साले-साल ऐ परम्पराकँ निमाहैत आबि रहल छल।

अहू बर्ख ओ दिन एलै। उत्सवक दिनसँ किछु पहिनेसँ उपहारक योजना दुनूक मनमे बनए लगलै। मुदा दुनूक हाथ खाली। भरि पेट खेनाइओ ने पूरै तखनि जमा कए कऽ की रखैत। मने-मन सुशील योजना बनौने जे पत्नीक केशमे लगबैले किलीप नै छै तँए ऐ बेर किलीपे उपहार देबनि। तहिना सुनितो सोचैत जे पति हाथक घड़ीक चेन पुरान भऽ गेल छन्हि तँए ऐ बेर चेन कीनि कऽ देबनि। दुनू अपन-अपन जोगारमे। मुदा नाजाइज कमाइ नै रहने जोगारे ने बैसै। उत्सवक दिन अबैमे एक दिन बाँकी रहलै। अंतिम समेमे सुशील सोचलक जे आइ साँझमे घड़ी बेचि किलीप कीनि लेब।

इम्हर सुनितो सोचली जे अपन केश कटा कऽ बेचि लेब तइमे घड़ीक चेन भऽ जाएत। साँझू पहर दुनू गोटे- फूट-फूट बाजार गेल।

सुशील घड़ी बेचि किलीप कीनि लेलक आ सुनिता केश बेचि चेन किनलक। खुशीसँ दुनू गोटे घर आबि अपन-अपन वस्तु -चेन आ किलीप- ओरिया कऽ रखि लेलक।

सबरे सूति उठि कऽ दुनू परानी हँसैत एक-दोसरकँ उपहार दइले आगू बढल। सुनिता टोपी पहिरने छेली। किलीप निकालि सुशील सुनिताक टोपी हटा किलीप लगबए चाहलक मुदा केशे नै!

तहिना चेन निकालि सुनिता घड़ीमे लगबए चाहलनि तँ हाथमे घड़ीए नै।

आमने-सामने दुनू ठाढ़। दुनूक मुहसँ तँ किछु नै निकलैत मुदा दुनूक

हृदैमे हर्ष-विस्मयक बीच घमासान लड़ाइ बजैर गेलै । अंतमे हृदए बाजल-
“जे सिनेह दूधक समुद्रमे झिलहोरि खेलैए ओइले किलीप आ चैनक
कोन महत छै ।”



हैरियट स्टो

अमर लेखिका हैरियट एलिजाबेथ स्टो विश्व-विख्यात पोथी, 'टाम काकाक कृटिया' लिखने छथि। जइ समैमे ओ पोथी लिखै छला ओइ समए ओ कठिन परिस्थितिमे जिनगी बितबैत रहथि। ओना अकसरहाँ लोक ऐ पोथीकेँ अमेरिकाक दास प्रथाक विरोधमे लिखल मानैए।

अपना परिस्थितिक सम्बन्धमे अपन भौजीकेँ कहलखिन-

“चूल्हि-चौकाक काज, नुआ-बस्तर धोनाइ, सिआइ केनाइ, जूता-चप्पलक पॉलिस आ मरम्मति केनाइ जिनगीक मुख्य काज अछि। बच्चा आ परिवारक सेवामे भरि दिन सिपाही जकाँ खटै छी। छोटका बच्चा लगमे सुतैए तँए जाधरि ओ सूति नै रहैए ताधरि किछु ने सोचि सकै छी आ ने लिखि पबै छी। गरीबी आ पारिवारिक काज ऐ रूपे दबने अछि जइसँ समैए कम बँचैए। मुदा तैयो एक-दू घंटा सुतैक समए काटि अपना सन लोक, जिनका परिवारक अंग बुझै छियनि तिनका लेल किछु लिखि-पढ़ि लइ छी।”

हुनके लिखल पोथीसँ उत्तरी अमेरिका आ दछिनी अमेरिकामे दास प्रथाक खिलाप क्रान्ति भेल।



बुझैक ढंग

एकटा यात्री वृन्दावन विदा भेल। किछु दूर गेलापर रस्ताक बगलमे मीलक पत्थरपर नजरि पड़लै। ओइ मीलक पत्थरमे वृन्दावनक दूरी आ दिशा लिखल छेलै। ओ यात्री ओतै अँटकि बैस रहल आ बाजए लगल-

“पाथरक अंकन तँ गल्ती नै भऽ सकैए किएक तँ विश्वासी लोकक लिखल छिए। वृन्दावन तँ आबिए गेल छी, आगू बढैक की प्रयोजन?”

थोड़ेकाल पछाति एकटा बुझनिहार आदमी ओइ रस्ते केतौ जाइत रहथि तँ सुनलखिन। मने-मन खूब हँसलथि। कनीकाल ठाढ़ भऽ हँसैत ओइ यात्रीकेँ कहलखिन-

“पाथरपर सिरिफ संकेत मात्र अछि। ऐठामसँ वृन्दावन बहुत दूर अछि। जौं अहाँ ओतए जाए चाहै छी तँ तुरन्ते सभ सामान समेटि विदा भऽ जाउ नै तँ नै पहुँचब।”

भोला-भला यात्री अपन भूल मानि विदा भेल...।

एहेन बहुतो लोक छथि जे शास्त्रो पढ़ै छथि, शास्त्रीय बातो सुनै छथि मुदा धरम धारण करबाक रस्ता पकड़बे ने करै छथि तखनि ओ धरम केना बुझथिन जे धरम की छिए?



श्रमिकक इज्जत

अपन संगी-साथीक संग नेपोलियन टहलैले जाइत रहथि। जेरगर रहने सौंसे रस्ता छेकाएल छेलै। दोसर दिससँ एकटा घसबहिनी माथपर घासक बोझ नेने अबै छेली। ओइ घसबहिनीपर सभसँ पहिल नजरि नेपोलियनक पड़लनि। ओ पाछू घूमि कऽ देखलनि। सौंसे रस्ता घेराएल छेलै। अपन पछिला संगीक हाथ पकड़ि धिंचैत कहलखिन-

“श्रमिकक सम्मान करू। एक भाग रस्ता खाली कऽ दिऔ। यह देशक अमूल्य सम्पति छी। एकरे बले कोनो देशक उन्नति होइ छै।”

घसबहिनी टपि गेल। थोड़े आगू बढ़लापर पुनः नेपोलियन संगी सभकेँ कहलखिन-

“सद्प्रवृत्तिकेँ बढ़ेबाक चाही। ओकरा जेते महत देबै ओते जन-उत्साह जगतै। जइसँ देशक कल्याण हेतै।”



वंश

महान् विचारक सिसरोकेँ एकटा धनिक सरदारसेँ कोनो बाते कहा-सुनी हुअ लगलनि। ने ओ धनिक पाछू हटैले तैयार आ ने सिसरो। दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ीक नौबत आबए लगलै। खिसिआ कऽ ओ धनिक सिसरोकेँ कहलकनि-

“तूँ नीच कुलक छेँ, तँए तोरा-हमरा कथीक वरावरी?”

ऐ बातसेँ सिसरो विचलित नै भऽ साहससेँ उत्तर देलखिन-

“हमरा कुलक कुलीनता हमरासेँ शुरू हएत मुदा तोरा कुलक कुलीनता तोरासेँ अंत हेतौ।”

सभ्यता आ कुलीनता जनमसेँ नै बल्की चरित्र आ कर्तव्यसेँ पैदा लइए।



तियाग

सत्संग, भागवत आ प्रवचनमे बेर-बेर तियागक महिमाक चर्चा होइत रहल अछि। तियागकेँ ईश्वर प्राप्तिक रस्ता बतौल जाइए। बेर-बेर जरायुध ऐ चर्चाकेँ सुनथि। तँए मनमे बिसवास भऽ गेलनि जे सत्ते तियागसँ ईश्वर प्राप्ति होइ छै। जरायुध अपन सभ सम्पति दान कऽ देलखिन। मुदा दान केलो पछाति हुनका ने मनमे शान्ति एलनि आ ने ईश्वर भेटलनि। निराश भऽ जरायुध महाज्ञानी शुकदेव लग पहुँच पुछलखिन-

“जनक तँ संग्रही छला मुदा तैयो हुनका ब्रह्मज्ञान प्राप्ति भऽ गेल छेलनि आ हम सभ किछु तियागिओ कऽ ने ब्रह्मज्ञान पाबि सकलौं आ नहियेँ शान्ति भेटल। एकर की कारण छै?”

धियानसँ जरायुधक बात सुनि शुकदेव उत्तर देलखिन-

“आवश्यक वस्तुकेँ परमार्थमे लगा देब तँ नैतिक आ सामाजिक कर्तव्य बूझल जाइत। आध्यात्मिक स्तरक तियागमे सभ वस्तुक ममत्व छोड़ि ओकरा ईश्वरक घोरोहर बुझए पड़त। शरीर आ मन सेहो सम्पदा छी। ओकरा ईश्वरक अमानत मानि हुनके इच्छानुसार केलापर बुझबै जे सही तियाग भेल आ मोक्षक रस्ता भेटत।”



सद्विचार

एकटा न्यायप्रिय राजा साधुक भेषमे अपन प्रजाक कुशल-क्षेम बुझैले निकललथि। जहिया कहियो ओ राजा साधुक भेषमे निकलथि तहिया खाली एकटा मंत्रीकेँ चेला रूपमे संग कऽ लथि। ने अंगरक्षक रहनि आ ने अमिला-फमिला आ ने केकरो जानकारी देथिन।

बहुतो गोटेसँ सम्पर्क करैत राजा एकटा बगीचामे पहुँचला। ओइ बगीचामे एकटा वृद्ध किसान नवका -बच्चा- गाछ रोपैत रहथि। गाछ देखि राजा किसानकेँ पुछलखिन-

“ई तँ अखरोटक गाछ बूझि पड़ैए?”

मुस्कीआइत किसान कहलकनि-

“हँ भैया, अहाँक अनुमान सोलहन्नी जाइज अछि।”

“बीस-पच्चीस बर्खक गाछ भेलापर अखरोटक फड़ै छै, ताधरि अहाँ जीविते रहब?”

“ऐ बगीचाकेँ हमर बाप-दादा लगौने छथि। खून-पसीना एकबट्ट कऽ एकरा पटौलनि, देखभाल केलनि। जेकर फड़ हम सभ खाइ छी। तँए आब हमरो कर्तव्य बनैए जे ओते हमहूँ रोपि दिऐ। अपनेटा लेल गाछ लगौनाइ तँ स्वार्थक बात भऽ जाइ छै। हम ई नै सोचै छी जे आइ ऐ गाछक उपयोगिता कि छै? भविसमे दोसरकेँ फल दइ बस यएह इच्छा अछि।”

किसानक विचार सुनि राजा मंत्रीकेँ कहलखिन-

“जौं अहिना सभ बुझए लगै जे हमरा लगबैसँ मतलब अछि तँ समाजो आ परिवारोमे सद्विचार पसरि जाएत। जाधरि समाजमे सद्वृत्तिक प्रसार नै हएत ताधरि नीक समाज बनब मात्र कल्पना रहत।”



साहस

सोवियत संघक नेता लेनिन। हिनकापर एकटा सिरफिरा पेस्तौल चला देलकनि। गोली तँ निकलि गेलनि मुदा छर्छा गरदनिमे फँसले रहि गेलनि। तैबीच देशमे एकटा पुल टूटि गेल। पुल मुख्य मार्गमे छेलै, तँए जेते जल्दी भऽ सकैत ओते जल्दी पुल बनौनाइ जरूरी छेलै। आपात् स्थिति घोषित कऽ ओइ पुलक मरम्मति युद्धस्तरपर हुअ लगलै। देशप्रेमी जनता ओइ काजमे लागि गेल। लेनिन सेहो ओइ काजमे जुटला। श्रमिके जकाँ लेनिनो काज करैत रहथिन। गरदनिमे गोली रहनौ ओ बीस-बीस घंटा काज करै छेलखिन। काज करैत देखि एकटा श्रमिक पुछलकनि तखनि ओ कहलखिन-

“अगुआ भऽ कऽ जखनि हमहीं काजमे पाछू रहब तखनि जन उत्साह केना बढ़तै? जेकर खगता देशमे अछि।”



बरदास

अब्राहम लिंकन अमेरिकाक राष्ट्रपति रहथि। हुनक पत्नी चिड़चिड़ा एवं कठोर स्वभावक छेलखिन। जइसँ लिंकनक पारिवारिक जीवन दुःखमय छेलनि। कएक दिन एहेन होइ छेलै जे जखनि परिवारक सभ सूति रहै छेलनि तखनि लिंकन चुपचाप पछिला दरबज्जासँ आबि सुइत रहै छला। आ सुरुज उगैसँ पहिने तैयार भऽ निकलि ऑफिस चलि जाइ छला। दिन भरि अपन काजमे मस्त भऽ बिता लइ छला। संगी-साथीक संग हँसी-मजाक कऽ मन बहला लइ छला।

एक दिन परिवारक एकटा नोकरकँ हुनक पत्नी गारिओ पढ़लखिन आ फटकारबो केलखिन। नोकरकँ बड़ दुख भेलै। ओ कोठीसँ निकलि सोझे लिंकनक ऑफिस जा सभ बात कहलकनि। नोकरक सभ बात सुनि लिंकन बुझबैत कहलखिन-

“ऐ भले आदमी, पनरह बरखसँ हम ऐ परिस्थितिसँ मुकाबला करैत शान्तिसँ रहैत एलौं आ अहाँ एक्के दिनक फटकारमे एते दुखी भऽ गेलौं। बरदास कऽ लिअ।”

अचताइत-पचताइत वेचारा नोकर लिंकनक बात मानि लेलक।



भूल

प्रख्यात दार्शनिक वरटेण्ड रसेल अपन जीवनीमे लिखने छथि, जे हमर पहिल स्त्री सचमुच विचारवान छेली। जखनि ओ मन पडै छथि तखनि हृदय दहैक जाइए। दुनू गोटेक बीच अगाध प्रेम छल। एक दिन कोनो बाते दुनू गोटेक बीच अनबन भऽ गेल। खिसिआ कऽ हम बिनु खेनहि ऑफिस विदा भऽ गेलौं। रस्तामे एकाएक मनमे उपकल जे अपन क्रोधक बात पत्नीकेँ कहि दिअनि। रस्तेसँ घूमि गेलौं। घूमि कऽ घर एलापर पत्नी घुमैक कारण पुछलनि। हमर क्रोध आरो उग्र भऽ गेल। हम कहलियनि-

“आब अहाँले हमरा हृदयमे मिसिओ भरि जगह नै अछि।”

पतिक बात सुनि पत्नी स्तब्ध भऽ गेल मुदा किछु बाजलि नै। वेचारीक हृदयमे ई बात जरूर पकड़ि लेलकनि जे हमरा ओ -पति- कपटी बुझै छथि। आइ धरि हम भ्रममे छेलौं।

दुनूक बीच फाँक बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। होइत-होइत पति पत्नीकेँ तलाक दऽ देलक। वेचारी रसेलक घरसँ सदा-सदा लेल चलि गेल।



धैर्य

इंग्लैंडक प्रसिद्ध विद्वान टामस कूपर अंग्रेजीक शब्दकोष तैयार करैत रहथि। काजमे कूपर तेना ने लीन भऽ गेल छला जे घरक कोनो सुधिए-बुधिए ने रहलनि। पत्नीकेँ घरक सरंजाम जुटबैमे परेशानी होन्हि, तँए ओ पतिपर खूब बिगड़थि। मुदा तेकर कोनो असरि कूपरकेँ नै होन्हि। एक दिन कूपर केतौ गेल रहथि, तैबीच पत्नी खिसिआ कऽ शब्दकोषक सभ काँपी डाहि देलकनि। जखनि ओ घूमि कऽ एला तँ देखलखिन जे वर्षोक मेहनति जरि गेल। मुदा धैर्य एते प्रवल रहनि जे एक्को मिसिआ तामस नै उठलनि। ने एक्कोरत्ती पत्नीपर बिगड़लखिन आ ने अपसोच केलनि। मुस्कीआइत खाली एतबे कहलखिन-

“आठ बर्खक काज अहाँ आरो बढ़ा देलौं।”



मनुखक मूल्य

एक दिन सिकन्दर आ अरस्तू केतौ जाइत रहथि। रस्तामे एकटा नदी छल। जइ नदीमे नावपर पार हुआ पड़े छेलै। पहिने अरस्तू पार हुआ चाहै छला मुदा सिकन्दर हुनका रोकि अपने पार भेला। जखनि सिकन्दर दोसर पार गेला तखनि अरस्तूकेँ पार होइले कहलखिन। पार भेलापर अरस्तू सिकन्दरकेँ पुछलखिन-

“पहिने हमरा पार होइसँ किए मना केलौं?”

हँसैत सिकन्दर उत्तर देलखिन-

“अगर हम नदीमे डूमि जैतौ तैयो अहाँ हमरा सन-सन दसो सिकन्दर पैदा कऽ सकै छी मुदा जौ अहाँ डूमि जैतौ तँ हमरा सन-सन दशोटा सिकन्दर बुत्ते एकटा अरस्तू नै बनौल भऽ सकैए।”

सिकन्दरक विचार सुनि अरस्तू अपन जिनगीक मूल्य बुझलनि।



मदति नै चाही

मिश्रमे एकटा किलेन्थिस नामक लडका एथेंसक तत्ववेत्ता जीनोक पाठशालामे पढ़ै छल। किलेन्थिस बड़ गरीब छल। ने खाइक कोनो ठेकान आ ने देह झँपैले वस्त्रक। मुदा पाठशालामे सही समैपर फीस दऽ दइ छल। पढ़ैमे चन्सगर रहने सुभ्यस्त परिवार सभक विद्यार्थी ओकरासँ इर्ष्या करैत। किलेन्थिसकेँ दबबैले एकटा षडयंत्र ओ सभ रचलक। षडयंत्र यह जे किलेन्थिस पाठशालामे जे फीस दइए ओ चोरा कऽ अनैए। चोरीक मोकदमा किलेन्थिसपर भेलै। पुलिस पकड़ि कऽ जहल लऽ गेलै। जखनि ओकरा न्यायालयमे हाजिर कएल गेलै तखनि ओ जजकेँ कहलक-

“हम निरदोस छी। हमरा फँसौल गेल अछि। तँए हम अपन व्यान लेल दूटा गवाही न्यायालयमे देब।”

जजक आदेशसँ दुनू गवाही बजौल गेल। पहिल गवाही एकटा माली छल आ दोसर वृद्ध औरत। मालीसँ पुछल गेल। माली कहलकै-

“सभ दिन ई लडका हमरा बगीचामे आबि इनारसँ पानि भरि-भरि गाछ पटा दइए जेकरा बदलामे हम मजूरी दइ छिऐ।”

वृद्धासँ सेहो पुछल गेल ओ कहलकै-

“हम वृद्धा छी। हमरा परिवारमे कियो काज करैबला नै अछि। सभ दिन ई बच्चा आबि गहुम पीस दइए, जेकरा बदलामे मजूरी दइ छिऐ।”

गवाहीक व्यान सुनि जज मोकदमा समाप्त करैत सरकारी सहायतासँ पढ़ैले सेहो आदेश देलक। परन्तु किलेन्थिस सरकारी सहायता लइसँ इनकार करैत बाजल-

“हम स्वयं मेहनति कऽ पढ़ब तँए हमरा दान नै चाही। हमरा माए-बाबू कहने छथि जे मनुखकेँ स्वावलंबी बनि जीबाक चाही।”



मेहनतिक दरद

एकटा लोहार छल। मेहनति आ लूरिसँ परिवार नीक-नहाँति चलबै छल। मुदा बेटा जेहने खर्चीला तेहने कामचोर छेलै। बेटाक चालि-चलनि देखि लोहारकेँ बड़ दुख होय। सभ दिन दशटा गारि आ फज्जति बेटाकेँ करै मुदा तैयो बेटा लेल धैनसन। कोनो गम नै। लोहार सोचलक जे ई एना नै मानत। जाबे एकरा खर्च करैले पाइ देनाइ नै बन्न कऽ देबै ताबे अहिना करैत रहत। दोसर दिनसँ पाइ देब बन्न कऽ कहलकै-

“अपन मेहनतिसँ चाइरौटा चौबन्नी कमा कऽ ला तखनि खर्चा देबौ। नै तँ एक्को पाइ देखब सपना भऽ जेतौ।”

बापक बात सुनि बेटा कमाइक प्रयास करए लगल। मुदा लूरि नै रहने हेबे ने करै। अपन पछिला रखल चारिटा चौबन्नी नेने पिता लग आबि कऽ देलक। पिता भाथी पजारि हँसुआ बनबै छल। चारु चौबन्नीकेँ आगिमे दऽ कहलकै-

“ई पाइ तोहर कमाएल नै छियौ।”

पिताक बात सुनि बेटा लजाइत ओतएसँ ससरि गेल।

दोसर दिन चुपचाप माएसँ चारिटा चौबन्नी मंगलक। माए देलकै। चारु चौबन्नी नेने बेटा बाप लग पहुँचल। बेटाक मुहँ देखि पिता बूझि गेल। चारु चौबन्नी बेटा बापकेँ देलक। भीतरसँ बापकेँ तामस रहबे करै। ओ चारु चौबन्नी हाथमे लऽ पुनः आगिमे फेक देलक।

पिताक काज देखि बेटा बुझलक जे बिना कमेने काज नै चलत। तखनि ओ मेहनति करए लगल। तेसर दिन चारिटा चौबन्नी बापक हाथमे देलक। चारु चौबन्नीकेँ लोहार पहलके जकाँ आगिमे फेकए लगलै। आकि हल्ला करैत बेटा बापक हाथ पकड़ि बाजल-

“बाबू, ई हमर मेहनतिक पाइ छी। एकरा किए बेदरदी जकाँ नष्ट करै छिऐ?”

बाप बूझि गेल। मुस्कीआइत बेटाकेँ कहए लगल-

“बेटा, आब तूँ बुझलै जे मेहनतिक कमाइक दरद केहेन होइ छै। जाधरि अन्ट-सन्टमे हमर कमेलहा खरच करै छेलै ताधरि हमरो

एहने दरद होइ छेलए।”

पिताक बात बेटा बूझि गेल तखने सप्पत खेलक जे आइ दिनसँ एक्को पाइ फालतू खरच नै करब।



मैक्सिम गोर्की

बच्चेसँ मैक्सिम गोर्की निराश्रित भऽ गेल रहथि। ओइ दशामे जीबैले झाड़ू लगौनाइसँ लऽ कऽ चौका-वर्तन, चौकीदारी सभ काज केलनि। कएक दिन तँ कूडा-कचड़ाक ढेरीसँ काजक वस्तु ताकि-ताकि निकालि, बेचि कऽ अपनो आ बुढ़ नानीक पेटक आगि मुझबधि। एहेन परिस्थितिमे पढ़ब-लिखब असाध्य कार्य छी। एहेन असाध्य परिस्थितिसँ मुकाबला कऽ अनुकूल बनौनिहार मैक्सिम गोर्कीओ भेला।

रद्दी-रद्दी पत्रिका, फाटल-पुरान अखबार सभ एकत्रित कऽ पढ़नाइ सिखलनि। जखनि पढ़ैक जिज्ञासा बढ़लनि तखनि समए बचा कऽ वाचनालय जाए लगला। रसे-रसे लिखैक अभ्यास सेहो करए लगला। कोनो-कोनो बहाना बना साहित्यकार सभसँ सम्बन्ध बनबए लगला। मैक्सिम गोर्की जे किछु लिखथि ओकरा साहित्यकार सभसँ सुधार करबधि।

वएह मैक्सिम गोर्की रूसक महान् साहित्यकार भेला। अन्यायी शासनक विरुद्ध जनताक अधिकार लेल खाली लिखबे टा नै करथि बल्की हुनका सबहक बीच जा संगठित आ संघर्षक नेतृत्व सेहो करथि। जखनि हुनकर लिखल पोथी तेजीसँ बिकए लगल तखनि ओ अपन खर्चा निकालि बाँकी सभ पाइ संगठन चलबैले दऽ दिए लगलखिन।



मूलधन

एकटा वृद्ध पिता तीन बरख लेल तीर्थाटन करए निकलए चाहथि। निकलैसँ पहिने चारू बेटाकेँ बजा अपन सभ पूजी बरबरि कऽ बाँटि कहलखिन-

“तीन साल लेल हम तीर्थाटन करए जा रहल छी। अगर जीबैत घुमलौं तँ अहाँ सभ पूजी घुमा देब नै तँ कोनो बाते नै।”

अपन हिस्सा रूपैआकेँ जेठका बेटा सुरक्षित रखि पिताक प्रतीक्षा करए लगल। मझिला बेटा सूदिपर लगा देलक। सझिला ऐश-मौजमे फूँकि देलक। छोटका ओकरा पूजी बूझि कारोबार करए लगल।

तीन साल पछाति पिता आएल। चारूसँ पूजी आपस मंगलकनि। घरसँ आनि जेठका ओहिना रूपैआ घुमा देलकनि। मझिला सूद सहित मूलधन घुमौलकनि। सझिला तँ खरच कऽ नेने छल तँए अगर-मगर करैत चुप भऽ गेल। छोटका बेवसायसँ खूब कमेने छल तँए चारि गुणा बेसी घुमौलकनि।

छोटका बेटाकेँ प्रशंसा करैत पिता बजला-

“रूपैआ तँ व्याजोपर लगा बढ़ौल जा सकैए मुदा एहेन काज अधिक पूजीबलाक छिए। मुदा जे अपने पूजी दुआरे बेरोजगार अछि ओकरा लेल नै। ओकरा तँ जएह पूजी छै ओइमे अपन श्रमक संग जोडि जिनगीकेँ ठाढ़ करए पड़तै। तहूमे परिवारक दायित्व बलाकेँ तँ आरो सोचि-विचारि इमनदारीसँ चलए पड़तै। तखने परिवार चैनसँ चलि सकतै।”



कपटी मित

एकटा सज्जन खढ़िया छल। ओ खढ़िया कतेकोसँ दोस्ती केलक। दोस्ती ऐ दुआरे करैत जे बेरपर हमहूँ मदति करबै आ हमरो करत। एक दिन शिकारी कुकुर ओकरा पकड़ैले खिहारलक। खढ़िया भागल। भागल-भागल अपन मिता गाए लग पहुँच कऽ कहलकै-

“अहाँ हमर पुरान दोस छी। कुकुर हमरा रेबाड़ने अबैए। अहाँ ओकरा अपन सींगसँ मारि कऽ भगा दिऔ जइसँ हमर जान बाँचि जाएत।”

खढ़ियाक बात सुनि गाए कहलकै-

“हमरा घरपर जाइक समए भऽ गेल। बच्चा डिरिआइत हएत। आब एक्को क्षण ऐठाम नै अँटकब।”

गाएक बात सुनि खढ़िया निराश भऽ गेल। कुकुर सेहो पाछूसँ अबिते रहए। खढ़िया गाए लगसँ पड़ाएल आ घोड़ा लग पहुँचल। घोड़ो पुरान मिता खढ़ियाक छेलै। घोड़ा लग पहुँच खढ़िया कहलकै-

“दोस, अहाँ अपना पीठपर बैसा लिअ। जइसँ हमरा ओइ कुकुरसँ जान बाँचि जाएत।”

घोड़ा कहलकै-

“हमरा पीठपर केना बैसब? हम तँ बैसनाइए बिसरि गेलौं।”

घोड़ाक बात सुनि खढ़िया निराश भऽ पड़ाएल। जाइत-जाइत गदहा लग पहुँच कहलकै-

“दोस, हम मुसीबतमे पड़ि गेल छी। अहाँ दुलकी चलनाइ जनै छी से कनी कुकुरकँ मारि कऽ भगा दिऔ, जइसँ हमर जान बाँचि जाएत।”

खढ़ियाक बात सुनि गदहा कहलकै-

“घरपर जाइमे देरी हएत तँ मालिक मारत। तँए हम जाइ छी।”

फेर ओत्तौसँ खढ़िया भागल। जाइत-जाइत बकरी लग पहुँच कहलकै-

“दोस, हम मरि रहल छी। अहाँ जान बचाउ।”

अपन ओकाइत देखैत बकरी उत्तर देलकै-

“दोस, झब दे ऐठामसँ दुनू गोटे भागू नै तँ हमहूँ खतरामे पड़ि जाएब।”

बकरीक बात सुनि खढ़िया आरो निराश भऽ गेल। मनमे एलै जे अन्का भरोसे जीअब बेकार छी। अपने बुत्ते अपन दुख मेटा सकै छी। भलहिं मन-मोताबिक जिनगी नै जीब सकी। तखनि खढ़िया छाती मजगूत कऽ पड़ाएल। पड़ाएल-पड़ाएल एकटा झारीमे नुका रहल। कुकुर देखबे ने केलकै। दौगल-दौगल आगू बढ़ि गेल। खढ़ियाक जान बाँचि गेलै।



भीख

एकटा मच्छर मधुमाछी छत्ता लग पहुँचल। छत्तामे ढेरो मधुमाछी छेलै।
छत्ता लग बैस मच्छर मधुमाछीकेँ कहलकै-

“हम संगीत विद्यामे निपुण छी। अहूँ सभ संगीत सीखू। हम सिखा
देब। बदलामे थोड़े-थोड़े मधु दैत रहब जइसँ हमरो जिनगी
चलत।”

मधुमाछी सभ अपनामे विचार करए लगल। मुदा बिना रानी माछीक
विचारसँ कियो किछु नै कऽ सकै छेलै तँए रानीसँ पुछब जरूरी छेलै। सभ
मधुमाछी विचारि कऽ एकटा मधुमाछीकेँ रानीमाछी लग पठौलक। रानीमाछी
सभ बात सुनि कहलकै-

“जहिना संगीत-शास्त्रक ज्ञाता मच्छर, भीख मंगैले अपना ऐठाम
आएल अछि तहिना जाँ हमहूँ सभ मेहनति छोड़ि देब तँ ओकरे
जकाँ दशा हएत। तँए मेहनतिक संस्कार छोड़ि सस्ता संस्कार
अपनौनाइ मुरुखपाना हएत। अगर अहूँ सभकेँ संगीतक सख होइए
तँ मेहनतौ करू आ बैसारीमे संगीतो सीखू।”



भगवान

सिद्ध पुरुष भऽ कबीर प्रख्यात भऽ गेल छला । दूर-दूरसँ जिज्ञासु सभ आबि-आबि दर्शनो करैत आ उपदेशो सुनै छल । मुदा कबीर अपन बेवसाय - कपड़ा बिनब- नै छोड़लनि । कपड़ो बिनथि आ सत्संगो करथि । एकटा जिज्ञासु कबीरक बेवसाय देखि पुछलकनि-

“जाधरि अपने साधारण छेलौं ताधरि कपड़ा बिनब उचित छल मुदा आब तँ सिद्ध-पुरुष भऽ गेलिऐ तखनि कपड़ा किए बिनै छी?”

जिज्ञासुक विचार सुनि मुस्कीआइत कबीर उत्तर देलखिन-

“पहिने पेट लेल कपड़ा बिनै छेलौं । मुदा आब जन-समाजमे समाएल भगवानक देह झँपैले आ अपन मनोयोगक साधना लेल बिनै छी ।”

एकै काज रहितो दृष्टिकोणक भिन्नतासँ उत्पन्न होइबला अंतरकँ बुझलासँ जिज्ञासुक समाधान भऽ गेलनि ।



एकाग्रचित

इंग्लैंडक इतिहासमे अल्फ्रेडक नाओ इज्जतक संग लेल जाइए। ओ अनेको साहसी काज प्रजा लेल केलनि। तँए हुनका महान् अल्फ्रेड, अल्फ्रेड द ग्रेट नाओसँ इतिहासमे चरचा अछि।

शुरूमे अल्फ्रेड साधारण राजा जकाँ क्रिया-कलाप करै छला। जहिना बाप-दादाक अमलदारीमे चलै छेलै तहिना। खेनाइ-पीनाइ, ऐश-मौज केनाइ यएह जिनगी छेलनि। जइसँ एक दिन एहेन भेलै जे हुनकर कोढ़िपना दुश्मन लेल बरदान भऽ गेलै। दुश्मन आक्रमण कऽ अल्फ्रेडकेँ सत्तासँ भगा देलकै। नुका कऽ ओ एकटा किसानक ऐठाम नोकरी करए लगल। वर्तन माँजब, पानि भरब आ चुल्हि-चौकाक काज अल्फ्रेड करए लगल। नम्हर किसान रहने अल्फ्रेडक देख-रेख हुनकर पत्नी करै छेली।

एक दिन ओ कोनो काजे बाहर जाइ छेली। बटलोहीमे दालि चूल्हिपर चढ़ल छेलै। औरत अल्फ्रेडकेँ कहि देलकै जे दालिपर धियान राखब। अल्फ्रेड चूल्हि लग बैस अपन जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगल। सोचैमे एते मग्न भऽ गेल जे बटलोहीक दालिपर धियाने ने रहलै। बटलोहिक दालि जरि गेलै। जखनि ओ औरत घूमि कऽ एली तँ देखालनि जे बटलोहिक सभ दालि जरि गेल अछि।

क्रोधसँ अल्फ्रेडकेँ कहलक-

“अरे मुख युवक, बूझि पड़ैए जे तोरापर अल्फ्रेडक छाप पड़ल छौ। जहिना ओकर दशा भेलै तहिना तोरो हेतौ। जे काज करैछँ ओकरा एकाग्रचित भऽ कर।”

वेचारी औरतकेँ की पता जे जेकरा कहै छिऐ ओ वएह छी। औरतक बात सुनिते अल्फ्रेड चौंक गेल। अपन गलतीक भाँज लगबए लगल। मने-मन ओ संकल्प केलक जे आइसँ जे काज करब ओ एकाग्रचित भऽ करब। खाली कल्पने केलासँ नै हएत। अल्फ्रेड नोकरी छोड़ि देलक। पुनः आबि अपन सहयोगी सभसँ भेंट कऽ धनो आ आदमीओक संग्रह करए लगल। शक्ति बढ़लै। तखनि ओ दुश्मनपर चढ़ाइ केलक। दुश्मनकेँ हरौलक। पुनः सत्तासीन भेल। सत्तासीन भेलापर पैघ-पैघ काज कऽ महान भेल।



सीखैक जिज्ञासा

महादेव गोविन्द रानाडे दछिन भारतक रहथि। ओ बंगला भाषा नै जनै छला। एक दिन रानाडे कलकत्ता गेला। कलकत्तामे अपन काज-सभ निपटा आपस होइले गाड़ी पकड़ए स्टेशन एला तँ एकटा बंगला अखबार कीनि लेलनि। बंगला अखबार देखि आश्चर्यसँ पत्नी कहलकनि-

“अहाँ तँ बंगला नै जनै छी तखनि अनेरे ई अखबार किए किनलौ?”

मुस्कीआइत रानाडे जवाब देलखिन-

“दू दिनक गाड़ी यात्रा अछि। आसानीसँ बंगला सीख लेब।”

नीक-नहाँति रानाडे बंगला लिपि आ शब्दक गठनपर धियान दऽ सीखए लगला। पूना पहुँच पत्नीकेँ धुर-झार अखबार पढ़ि कऽ सुनबए लगलखिन।

एहेन छेलनि साठि वर्षीए रानाडेक मनोयोग। तँए अंतिम समए धरि हर मनुखकेँ सीखैक जिज्ञासा रहक चाही।



अनुभव

बेकती अपन अनुभवसँ सीखबो करैए आ दोसरो लेल दिशा निर्धारित करैए।

एक दिन झमझमौआ बर्खा होइत रहै आ मेधो गरजै, बिजलोको चमकै तथा तेज हवो बहैत रहए। तखने रस्ता टपैत एक आदमीक मृत्यु भऽ गेलै। बर्खा छुटलै। लग-पासक लोक जखनि निकलक तँ रस्तापर ओइ आदमीकेँ मरल देखलक। चारु भरसँ लोक जमा भऽ कियो कहैत वादलक आवाजसँ मृत्यु भेलै। तँ कियो किछु कहै आ कियो किछु।

तखने एक अनुभवी आदमी सेहो पहुँचलथि। ओ कहलखिन-

“जौ आवाजसँ मृत्यु होइतै तँ बहुतो लोक आवाज सुनलक। सबहक होइतै। तँए मृत्यु आवाजसँ नै लगमे ठनका गिरलासँ भेलै।”



आसिरवादक विरोध

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर अभाव आ गरीबीक बीच पढ़ि-लिखि पचास टाकाक मासिक नोकरी शुरू केलनि। हुनक सफलता देखि कृदुम-परिवार सभ आसिरवाद देमए पहुँचए लगलनि। एकटा कुदुम कहलकनि-

“भगवानक दयासँ अहाँक दुख मेटा गेल। आब आरामसँ रहू आ चैनसँ जिनगी बिताउ।”

ई आसिरवाद सुनिते विद्यासागरक आँखिसँ नोर खसए लगलनि। नोर पोछैत कहलखिन-

“जइ अध्यवसायिक बले हम ओहन भीषण परिस्थितिक मुकावला केलौं ओकरे छोड़ि दइले कहै छी? अहाँकेँ ई कहबाक चाही छल जे जइ गरीबीक कष्ट स्वयं अनुभव केलौं ओइ परिस्थितिकेँ बिसरू नै। अपन असाध्य श्रमसँ ओइ अवरुद्ध रस्ताकेँ साफ करू।”



धर्मक असल रूप

श्रावस्तीक सम्राट चन्द्रचूडकेँ अनेक धरम आ ओकर प्रवक्ता सभसँ नीक लगाव छेलनि। राज-काजसँ जे समए बैचनि ओकरा ओ धर्मक अध्ययनो आ सत्संगेमे बितबथि। ई क्रम बहुत दिनसँ चलि अबै छल। एक दिन ओ असमंजसमे पडि गेला। मनमे एलनि जे जखनि धरम मनुखक कल्याण करैए तखनि एतेक मतभेद एक-दोसर प्रवक्तामे किएक अछि?

अपन समस्याक समाधान लेल चन्द्रचूड भगवान बुद्ध लग पहुँचला। ओइठाम ओ अपन बात बुद्धकेँ कहलखिन। चन्द्रचूडक बात सुनि बुद्धदेव हँसए लगलखिन। सत्कारपूर्वक हुनका ठहरै लऽ कहि दोसर दिन भिनसरे समाधानक वचन देलखिन। एकटा हाथी आ पाँचटा अन्हर ओ जुटौलनि।

दोसर दिन भिनसरे बुद्धदेव चन्द्रचूडकेँ संग केने ओइ हाथी आ अन्हरा लग पहुँचला। एकाएकी ओइ अन्हरा सभकेँ हाथी छूबि ओकर स्वरूप बुझबैले कहलखिन। बेरा-बेरी ओ अन्हरा सभ हाथीकेँ छूबि-छूबि देखए लगल। जे जे अंग हाथीक छूलक ओ ओहने स्वरूप हाथीक बतबए लगलनि। कियो खुट्टा जकाँ तँ कियो सूप जकाँ तँ कियो डोरी जकाँ तँ कियो टीला जकाँ कहलकनि।

सबहक बात सुनि बुद्धदेव चन्द्रचूडकेँ कहलखिन-

“राजन, सम्प्रदाय अपन सीमित क्षमताक अनुरूप धर्मक एकांकी व्याख्या करैए। अपन-अपन मान्यताक प्रति जिद्द धऽ अपनेमे सभ लडै छथि। जहिना एक्केटा हाथीक स्वरूप पाँचो अन्हरा पाँच रंगक कहलक, तहिना धरमोक व्याख्या करैबला सभ करै छथि। धरम तँ समता, सहिष्णुता, उदारता आ सज्जनतामे सन्निहित अछि।”



सौन्दर्य

संगीतकार गाल्फर्ड लग पहुँच एकटा शिष्या अपन मनक बेथा कहए लगलनि-

“कुरूपताक कारणे संगीतक मंचपर पहुँचते मनमे आबए लगैए जे आन लडकीक अपेक्षा दर्शक हमरा नापसन्द कऽ हँसी उडबैए। जइसँ सकपका जाइ छी। गेबाक जे तैयारी केने रहै छी ओ नीक जकाँ नै गाबि पबै छी। वएह गीत घरपर बढियाँ जकाँ गबै छी मुदा मंचपर पहुँचते की भऽ जाइत अछि जे हक्का-बक्का भऽ जाइ छी।”

शिष्याक बात सुनि गाल्फर्ड एकटा नमगर-चौड़गर ऐना लऽ, आगूमे रखि, गबैक विचार दैत कहलखिन-

“अहाँ कुरूप नै छी, जेना मनमे होइए। गीत गौनिहारिकेँ स्वरक मिठास हेबाक चाही जेकरा कुरूपतासँ कोनो सम्बन्ध नै छै। जखनि भाव-विभोर भऽ गाएब तखनि अहाँक आकर्षण बढि जाएत। कियो सुनिनिहार कुरूपतापर धियान नै दऽ स्वरपर धियान देत। जइसँ मनक हीनता समाप्त भऽ जाएत आ आत्म-विश्वास बढि जाएत।”

फ्रान्सक वएह गायिका मेरी वुडनाल्ड नाओंसँ प्रख्यात भेली।



स्तब्ध

दोसर विश्वयुद्ध समाप्त भऽ गेल छल। इंगोएशियन माने आंग्ल-रूसी संधिपर हस्ताक्षर करैले चर्चिल मास्को एला। संधिपर हस्ताक्षरो भऽ गेल। मास्को छोड़ैसँ एक दिन पहिने अनासुरती स्तालिन आ मोलोटोव चर्चिल लग पहुँच कहलकनि-

“लड़ाइ-उड़ाइ तँ बहुत भेल। नीक समझौतो भऽ गेल। काहि अहाँ जेबो करब तँ आइ थोड़े मौज-मस्ती कऽ लिअ। हमरा ऐठाम चलि भोजन करू।”

स्तालिनक आग्रह सुनि चर्चिल मने-मन सोचए लगला जे महान् तानाशाह स्तालिन नोत देबए एला, आइ जरूर किछु अद्भुत वस्तु देखैक मौका भेटत। चर्चिल नोत मानि स्तालिनक संग विदा भेला। रस्तामे सिपाही सभ अभिवादन करनि। थोड़े दूर गेलापर एकटा पीअर रंगक दु-महला मकानक आगूमे कार रुकल। सभ कियो उतरला। स्तालिनक संग चर्चिल मकानक भीतर गेला। भीतर जा चर्चिलकेँ बैसबैत स्तालिन कहलखिन-

“ऊपरका तल्लामे लेनिन रहै छला। ओ गुरु छथि तँ ओइ तल्लाक उपयोग हम नै करै छी। ओ म्युजियम बनल अछि। निच्चाँमे तीनटा कोठरी अछि एकटामे दुनू परानी रहै छी। दोसरमे बेटी रहैए आ तेसरमे पार्टी सदस्य लेल बैसकी बनौने छी।”

स्तालिनक बात सुनि चर्चिल छगुन्तामे पड़ि गेला जे जइ तानाशाहक डरे पूजीवादी जगत थरथराइत अछि ओइ तानाशाहक रहैक बेवस्था एहने छै। मने-मन सोचैत चर्चिल गुम्म रहथि आकि स्तालिन कहलकनि-

“थोड़ेकाल हमरा छुट्टी दिअ। भोजन बनबए जाइ छी।”

ई सुनि चर्चिल अचंभित होइत पुछलखिन-

“अपने भानस करै छी, भनसिआ नै अछि?”

मुस्कीआइत स्तालिन उत्तर देलखिन-

“नै। अपने दुनू परानी मिलि भानस करै छी।”

स्तालिनक बात सुनि चर्चिल हतप्रभ होइत कहलखिन-

“बड़ बढ़ियाँ, आइ घरेवालीकेँ भानस करए कहियनु। अहाँ गप-सप्य करू।”

“हम लाचार छी। पत्नी घरपर नै छथि। ओ पाँच बजे कपड़ा मिलसँ औती।”

चर्चिल स्तब्ध भऽ गेला।



एकता

एकटा पैघ भवनक निर्माण होइ छेलै। निर्माणस्थल लग एक भाग पजेबा, दोसर भाग बालु, तहिना लकड़ी, सिमटी, चून इत्यादि जमा छल। ढेरीसँ पजेबा बाजल-

“अकास ठेकल कोठा हमरेसँ बनत, तँए कोठाक श्रेय हमरे भेटक चाही।”

पजेबाक बात सुनि सिमटी आ बालु प्रतिवाद करैत कहलकै-

“तौं झूठ बजै छै। तोरा ई नै बूझल छौ जे एकसँ दोसर पजेबाक बीच जौं हम नै रहबौ तँ तूँ ढनमनाइते रहमे। संगे तोरा ईहो नै बूझल छौ जे जेते दूर तक तौं जेमे तेते दूर तक हमहूँ संगे जेबौ आ तोरोसँ ऊपर हमहीं सुइत कऽ रक्षो करबौ।”

बालु आ सिमटीक बात सुनि खिड़की आ केबाड़ीक लकड़ी तामसे थरथराइत कहलकै-

“तोरा तीनू बुत्ते बड़ हेतौ तँ देबाल बनि जेमे, मुदा बिना हमरे ने छत बनि सकमे आ ने मुँह-कान चिक्कन हेतौ। जाबे हम नै रहबौ ताबे कुकुर-बिलाइक घर रहमे।”

सभ सामानक बीच कटौझ चलै छल। कारीगर चाह पीब बीड़ी सुनगेलक। बिड़ीओ पीए छल आ मने-मन हँसबो करै छल। जखनि भरि मन बीड़ी पीलक, मूड साफ भेलै, तखनि तीनूकेँ चुप करैत कहलक-

“अगर तूँ सभ मिलाने कऽ लेमे, तइसँ की हेतौ? जाबे हम नै इलमसँ तोरा सभकेँ बनेबौ ताबे ओहिना माटिपर पड़ल रहमे आ कौआ-कुकुर आबि-आबि गंदा करैत रहतौ।”

सबहक विचार सुनि निर्णय करैत भवन कहलकै-

“अपना-अपना जगहपर सबहक महत छौ। मुदा जाबे एक-दोसरसँ मेल कए कऽ नै रहमे ताबे भवन नै कहेमे। ओहिना पजेबा, सिमटी, चून, लकड़ी रहमे। तँए अपन-अपन बड़प्पन छोड़ि मिलानक रस्ता पकड़ जइसँ कल्याण हेतौ।”



विधवा बिआह

राजस्थानक इतिहासमे हठी हम्मीरक विशेष स्थान अछि। ओ एहेन जिद्दी छल जे जे उचित बुझै छेलै, करै छल। भलहिं केतबो विरोध आ निन्दा किअक ने होय। जखनि हम्मीर बिआह करै जोकर भऽ गेल तखनि बिआहक चरचा शुरू भेल। विद्यार्थिए जीवनमे हम्मीर विधवाक दुर्दशाकेँ गहराइसँ अध्ययन केने छल। पढ़ैएक समए संकल्प कऽ नेने छल जे हम विधवे औरतसँ बिआह करब। हम्मीरक बिआहक चरचा पसरलै। मुदा हम्मीर एकदम संकल्पित छल जे विधवेसँ बिआह करब। कुटुम परिवार सभ हम्मीरपर बिगडै मुदा तेकर एक्को पाइ गम नै। पंडित सबहक माध्यमसँ परिवारबला कहबौलक जे विधवा अमंगल सूचक होइत तँए एहेन काज नै करैक चाही। मुदा हम्मीर केकरो बात सुनैले तैयारे नै।

एकटा बाल-विधवाकेँ हम्मीर देखलक। विधवाकेँ देखि हृदए पसीज गेलै। तखने ओइ विधवाकेँ हम्मीर कहलक-

“हम अहाँसँ बिआह करब। भलहिं परिवारक केतबो विरोध हुआए।”

हम्मीरक बात सुनि विधवा खुशीसँ अह्लादित भऽ उठल। हम्मीर बिआहक दिन तँइ कऽ कुटुम-परिवार आ पुरहित-पंडितकेँ छोडि अपन संगी-साथी आ सैनिक सभकेँ संग केने जा बिआह कऽ लेलक।

जखनि हम्मीर मेबारक शासक बनल तखनि सभ विरोधी सहयोगी बनि गेलै। पंडित सभ घोषणा केलक-

“विधवा नास्ति अमंगलम्।”



देश सेवाक व्रत

सुभाषचन्द्र बोस बच्चे रहथि। एक दिन सुतली रातिमे माए लगसँ उठि निच्चाँमे सूतए लगला। बेटाकेँ निच्चाँमे सुतैत देखि माए पुछलखिन जे एना किएक करै छी?

सुभाष जवाब देलखिन-

“माए, आइ स्कूलमे मास्टर साहेब कहने छेलखिन जे हमर पूर्वज ऋषि-मुनि जमीनेपर सूतबो करथि आ कठिन मेहनैतो करै छला। हमहूँ ऋषि बनब। तँए कठिन जिनगी जीबैक अभ्यास शुरू कऽ रहल छी।”

सुभाषचन्द्रक पिता जगले रहथिन। सभ बात सुनि सुभाषकेँ पिता कहलखिन-

“बेटा, जमीनेपर सुतनाइ पर्याप्त नै होइ छै। एकरा संग-संग ज्ञानोक संचय आ मनुखोक सेवा आवश्यक अछि। आइ माइए लग सूति रहू, जखनि नम्हर हएब तखनि तीनू काज संगे करब।”

खाली शिक्षकेक बात नै पितोक बातकेँ सुभाष गीरह बान्हि लेलनि। आई.सी.एस. केला पछाति जखनि नोकरीक बात सोझहामे एलनि तखनि ओ कहलखिन-

“हम जिनगीक लक्ष्य तँइ कऽ नेने छी। नोकरी नै करब। मातृभूमिक सेवा करब।”



आत्मबल-१

फ्रान्सक कथा छी। रस्ताक बगलक पहाड़ीपर बैस एक गोटे अपन जुत्ता मरम्मति करबैत रहथि। एकटा ढेरबा बच्चा जुत्ता मरम्मति करै छल। ओइ बच्चाक बगए-वानिसँ गरीबी झलकैत रहए। मुदा आत्मबल आ लगन मजगूत छेलै। जुत्ता मरम्मति करा ओ आदमी एक रूपैआ पारिश्रमिक दऽ चलए लगल। मुदा माएक विचार ओहिना ओइ बच्चाक हृदैमे जीबै छल। बच्चा अपन उचित पाइ काटि बाँकी घुमबए लगल। ओ महानुभाव -जुत्ता मरम्मति करौनिहार- सभ पाइ रखि लइले कहलक। तैपर बच्चा बाजल-

“हमर जेतबे उचित मजूरी हएत, ओतबे लेब। माए कहने छथि जे जेतबे श्रम करी ओतबे मजूरी ली।”

बच्चाक बात सुनि ओ गुम्म भऽ ओइ बच्चाकेँ ऊपरसँ निच्चाँ घरि निडहारए लगल। वएह बच्चा फ्रान्सक राष्ट्रपति दगाल भेला।



स्वाभिमान

सुभाष चन्द्र बोस स्कूलक पढ़ाई समाप्त कऽ कौलेजमे नाओं लिखौला। ओइ कौलेजमे अंग्रेजीक शिक्षक अंग्रेज छल। नाओं छेलनि सी.एफ. ओटन। ओहुना सत्तामे रहनिहारक बोली जनताक बोलीसँ भिन्न होइ छै। मुदा ओटनमे आरो बेसी रोब छेलै। बात-बातमे ओ भारतीय जिनगीक मजाक उड़बैत छला। भारतवासीक जिनगीक प्रति घृणा पैदा करब ओ अपन बहादुरी बुझै छल।

सुभाषबाबूकेँ ओटनक बेवहार पसिन्न नै होन्हि। मुदा विद्यार्थी रहने मन मसोसि कऽ रहि जाथि। एक दिन वर्गमे सुभाष बैसल रहथि। ओटन भारतवासीक प्रति व्यंग्य करए लगल। व्यंग्य सुनि सुभाषक हृदयमे आगि धधकए लगलनि। क्रोधे ओ बेकाबू भऽ गेला। अपन जगहसँ उठि आगू बाढ़ि ओटनक गालमे कसि कऽ दू थापर लगबैत कहलखिन-

“भारतवासीमे अखनो स्वाभिमान जीबै छै। जौं कियो ऐ बातकेँ बिसरि चुनौती देत तँ अहिना मारि खाएत।”



कलंक

गामक कोन लेखा जे पचकोसीक लोक किसुन भायकेँ इमानदार बुझै छन्हि। ओना ओ एकचलिया लोक छथि मुदा गामो आ परोपट्टाक लोक बहुचलिया। तँए किसुन भायकेँ जेते प्रशंसा होइत ओतबे निन्दे। ओना ज्ञान-अज्ञानक बीच, सुख-दुखक बीच, धरम-पापक बीच, उत्थान-पतनक बीच, प्रशंसा-निन्दाक बीच तँ पहिनेसँ संघर्ष होइत आएल अछि। मुदा किसुन भाय अनकर प्रशंसा-निन्दाकेँ ओते महत नै दैत जेते अपन सैद्धान्तिक जिनगीकेँ। अपन जिनगीक रस्तापर सदिखन सचेत रहै छेलथि। कएक दिन एहेन होइत जे किसुन भायक विचारसँ अलग सौंसे गामक लोकक विचार होइत। मुदा तेकर एक्को पाइ गम हुनका नै। अपन रस्तापर ओ असगरो निर्भीकसँ ठाढ़ रहै छला। मुदा विचार बदलैले तैयार नै होथि।

जिनगीक आरंभे किसुन भाय खेतीसँ केलनि। खेत तँ बहुत नै छेलनि मुदा जेतबे छेलनि तइमे मेहनतिक बले परिवार चला लथि। बाढ़ि, रौदी आ आरो-आरो प्राकृतिक आफत तथा उपद्रव जकाँ मानवीय आफतक मुकावला करबाक लूरी सीख नेने छथि। तँए आन परिवार जकाँ परिवारमे चिन्तो नै होन्हि। खानदानी खेतीकेँ केतौ बदलि तँ केतौ सुधारि कऽ करथि। जइसँ गामोक खेतिहर अचता-पचता कऽ हुनके अनुकरण करै छल।

तेसर साल टहलैले पंजाब गेल रहथि। टहलैले की जइतथि, खेती देखैले गेल रहथि। पंजाबक खेती अगुआएल तँए देखब जरूरी बूझि पड़लनि। पंजाबमे झिमनिक खेती देखलखिन। मिथिला क्षेत्रमे जेते-जेते घेड़ा, होइत तेते-तेते झिंगुनी देखलखिन। फड़ो अटुट। झिंगुनी देखि किसुन भायक मनमे गड़ि गेलनि। मने-मन सोचलनि जे जइ पंजाबक माटि गोंग अछि तखनि जब एहेन अछि तँ अपन माटि (मिथिलाक माटि) मे केहेन हएत, तत्काल ओ नै सोचि सकलथि। मुदा बीआ नेने एला। समैपर बीआ रोपलनि। ओइ चारि कट्टा झिंगुनिक खेतीसँ किसुन भाय एकटा जरसी गाए किनलनि। अपना लेल ओते बीआ शुरूहेक फड़ रखि लेलनि जे छः कट्टा खेती अगिला साल करब। धुर-झाड़ जखनि झिंगुनी बेचए लगला तखनि गामोक लोक बीआ मंगलकनि। पचता फड़क बीआ लोक सभले रखि देलखिन अगता फड़क समए तँ निकलि गेल छल।

ऐ बेर गाममे, झिंगुनिक अनधुन खेती भेल। किसुन भायक उपजा तँ पछिले साल जकाँ भेल मुदा गामक लोकक दब भऽ गेलै। दब होइक कारण छेलै उपजबैक ढंग आ पचता बीआ। सौंसे गामक लोक हुनका ठक कहि कलंकित करए लगलनि। केतेक गोटे सोझहोमे कहलकनि। ठकक कलंकसँ किसुन भाय सोगाए लगला। जेना केते भारी कुकर्म कऽ नेने होथि। मनमे सदिखन यएह नचैत रहनि जे-

“एना भेलै किएक?”

ऐ प्रश्नक उत्तर मनमे जगबे ने करनि। अनासुरती एक दिन हृदैसँ आवाज उठलनि-

“किसुन, तोहर दोख एकोपाइ नै छह। अनेरे सोगाएल छह। तोहर कलंकक कारण बीआक मुरहन आ दौजी गुणे भेल छह।”

हृदैक आवाज सुनि किसुन भाय पुछलखिन-

“अगर हम ऐ बातकेँ मानि अपनाकेँ निरदोस बुझिए लेब तैयो आन केना बूझत?”

“हँ, तोरा ओइ दिन तक कलंकक मोटरी कपारपर रखए पड़तह जइ दिन तक ऊहो सभ मुरहन आ दौजीक भेद बूझि नै जाएत।”



बुलकी

एकटा खेत-बोनिहारक घरवाली नाकक बुलकी लेल रूसि रहलि। बुलकी किनैक उपए पतिकेँ नै। हर जोति कऽ जखनि ओ बोनिहार आएल तँ घरवालीकेँ रूसल देखलक। मुँह-तुँह फुलौने ओसारपर बैसलि। धिया-पुता खाइले कनैत। बोनिहार अपन तामसकेँ घोंटि घरवाली लग जा कऽ कहलकै-

“किए रूसल छी? भूखे बच्चो सभ लहालोट होइए। आबो भानस करू।”

अपन रोष झाड़ैत पत्नी बाजलि-

“जाबे बुलकी नै आनि देब ताबे ने खाएब आ ने किछु करब।”

खुशामद करैत पति कहलकै-

“आइए साँझमे हाटसँ कीनि कऽ आनि देब। अखनि भानस करू गऽ।”

पतिक बात पत्नी मानि गेलि। बोनिहार कर्ज रूपैआ अनैले विदा भेल। दस रूपैआ अना दर सूदपर अनलक। रूपैआ घरवालीक हाथमे दऽ देलक। भानस भेलै। सभ खेलक। बेरू पहर दुनू परानी हाटसँ बुलकी कीनि अनलक।

दोसर साँझमे बुलकी पहिरि सुगिया-दादीकेँ गोड़ लगैले बोनिहारिन गेलि। सुगिया दादी ओसारपर बैस पोता-पोतीकेँ नल-दमयन्तीक खिस्सा सुनबैत रहथि। दादीकेँ गोड़ लागि बोनिहारिन बुलकी देखैले कहलकनि। बुलकी देखि दादी कहए लगलखिन-

“कनियाँ। सोन-चानी गरीब-गुरबा घरमे नै रहै छै। जइ घरमे पेटेक भूख नै मेटाइ छै ओइ घरमे सिंगारक चीज केना रहतै। अनेरे अपन सख करै छह। कहुना-कहुना बच्चा सभकेँ पालह जे कुल-खानदान जीबैत रहतह।”

दादीक बात सुनि बोनिहारिन आंगन आबि पतिकेँ कहलक-

“गलती भेल जे हम रूसि कऽ अहाँसँ बुलकी किनेलौं। अखनि रखि दइ छिए, काहि घुमा कऽ कर्जाबलाक रूपैआ दऽ एबै।”



भद्रपुरुष

एक दिन एकटा वृद्धा कोठीसँ निकलैत एकटा भद्र-पुरुषकेँ कहलखिन-

“अहाँ, ऐ कोठीक मालिकसँ कनी भेंट करा दिअ?”

ओ भद्र-पुरुष कहलखिन-

“कोन काज अछि कहू?”

वृद्धा-

“हमरा बेटीक बिआह छी। तीन साए रूपैआक खगता अछि। अगर रूपैआ नै हएत तँ बिआह रूकि जेतै।”

मुड़ी डोलबैत कहलकनि-

“चलू।”

ओ भद्र-पुरुष अपन कारमे वृद्धाकेँ बैसा लऽ गेलखिन। थोड़ेक दूर गेलापर कारसँ उतरि सामनेक मकानमे प्रवेश केलनि। वृद्धाकेँ संगे नेने गेलखिन। भीतर गेलापर वृद्धाकेँ ओसारपर बैसा अपने कोठरीमे गेला। कोठरीमे जा पाँच साए रूपैआ नोकरकेँ दऽ ओइ वृद्धाकेँ दऽ अबैले कहलखिन। पाँचो सौ रूपैआ नेने आबि नोकर वृद्धाकेँ दैत कहलक-

“भाय, पाँच सौ रूपैआ अछि। तीन सएमे बेटीक बिआह सम्हारि लेब आ दू सएसँ कोनो धंधा शुरू कऽ लेब। जइसँ आगूक जिनगी आसानीसँ चलत।”

रूपैआ हाथमे लऽ वृद्धा ओइ नोकरक मुँह दिस देखैत कहलक-

“भाय, कोठीक मालिक कहाँ भेटलथि?”

नोकर-

“जिनका संग अहाँ कारमे एलों वएह ऐ कोठिक मालिक- बाबू चितरंजन दास छथि।”

जइ आदमी लेल सौंसे समाज परिवार होइत, जे अनको दुखकेँ अपन दुख बूझि जीबैक प्रेरणा दैत वएह तँ भद्र-पुरुष होइत।



झूठ नै बाजब

बंगालक पूर्व मुख्यमंत्री डाक्टर विधानचन्द्र राय बच्चेसँ मानवीय गुणक अंगीकार करैत रहथि। जे गुण हुनक पितासँ भेटैत रहनि। सत्यक प्रति निष्ठा आ साहस दिनानुदिन बढ़ैत गेलनि। जखनि विधानचन्द्र डाक्टरी पढ़ैत रहथि तखने अध्यापक मोटर एक्सिडेंटक सम्बन्धमे झूठ गवाही दइले कहलकनि। अध्यापकक इच्छा रहनि जे विधानचन्द्र छात्र छी तँए जे कहबै से करत। मुदा झूठ नै बाजैक संकल्प विधानचन्द्र केने रहथि। अध्यापकक कहलापर विधानचन्द्र झूठ बजैसँ इनकार करैत कहलकनि-

“हम जे देखलिये सएह कहबै। मुदा झूठ नै बजब।”

जेकर परिणाम विधानचन्द्रकेँ भोगए पड़लनि। परीक्षामे फेल कऽ देल गेला। मुदा फेल होइसँ ओ ओते दुखी नै भेला जेते खुशी अपन संकल्प निमाहैसँ भेला।



आर्दश माए

आर्मेनियाक सर्वोच्च सेनापति सीरोज ग्रिथक व्यक्तित्व हुनक माएक बनौल छेलनि। जखनि ग्रिथ बच्चे रहथि तखने पिता मरि गेलखिन। विधवा नार्विन ग्रिड कपडा सीबि-सीबि गुजरो करथि आ बेटोकें पढ़बथि। गरीब परिवारक ग्रिथ अछि ई बात स्कूलोक शिक्षक सभ जनैत। फीस माफ होइले ग्रिथ आवेदन देलक। फीस माफो भऽ गेलै। फीस माफक समाचार ग्रिथ माएकें कहलक। माए बिगडि कऽ बाजलि-

“हम मेहनति कए कऽ गुजर करै छी, तखनि फीस किएक ने देबै। हम मेहनती छी नै कि गरीब। हमर अपन स्वाभिमान कहैए जे गरीब नै छी।”

स्वाभिमानी माए अपन बच्चाक एहेन चरित्र बनौलक जे देशक सर्वोच्च सेनापति भेल।



नारी सम्मान

नेपोलियन बोनापार्ट अपन टुइ-लेरिस नामक महलमे स्नान-घरक मरम्मति करबैले सचिवकेँ कहलखिन। सचिव महलक अधिकारीकेँ फ्रान्सक कृशल कारीगरकेँ बजा मरम्मति करैले कहलकै। कारीगर आबि मरम्मति करए लगलै। जखनि मरम्मति भऽ गेलै तखनि नारीक नग्न चित्र सभ सेहो बना देलकै।

नेपोलियन नहाइले गेला। नहाइसँ पहिने चित्र सभ देखलखिन। चित्र देखि नेपोलियन चोट्टे घूमि कऽ आबि अधिकारीकेँ बजौलखिन। अधिकारी आएल। हृदैक क्रोधकेँ दबैत नेपोलियन अधिकारीकेँ कहलखिन-

“नारीकेँ प्रतिष्ठा देब सीखू। स्नान घरमे जे नारीक नग्न चित्र बनबौने छी ओ निन्दनीय अछि। जइ देशमे नारीकेँ विलासक साधन बनौल जाएत ओइ देशक बिनाश निश्चित हेतै।”

नेपोलियनक आदेश सुनि अधिकारी कारीगरकेँ बजा सभ चित्र मेटिबौलक।



अनुशासन

अंग्रेजी शासनक खिलाप आन्दोलन उग्र रूप धेने जा रहल छल। आन्दोलन चलबैले क्रान्तिकारी दलकेँ डकैतीओ करए पड़ै। एक दिन राम प्रसाद विस्मिलक नेतृत्वक दल एकटा गाममे डकैती करैले पहुँचल। एकटा परिवारमे सभ घुसल। जेतए जे किछु दलकेँ भेटलै लऽ कऽ निकलल। सभ एकत्रित हुअ लगल आकि अपन साथीक गिनती करए लगल। गिनतीमे एक गोटे कमैत रहए। घरेमे चन्द्रशेखर एकटा बुढ़ियाक कैदमे पड़ल छल। ओ बुढ़िया अपन जेबर आ नगदीबला बक्सापर बैस चन्द्रशेखरक गट्टा पकडने छेली। चन्द्रशेखर चुपचाप आगूमे ठाढ़। ने बाँहि झमारैत आ ने किछु बजैत। सभ कियो घर पैसि देखलक जे चन्द्रशेखर बुढ़ियाक पालामे पड़ल छथि।

क्रान्तिकारी पार्टीक बीच अनुशासन छेलै जे ने महिलापर हाथ उठौल जाएत आ ने ओकर जेबर लेल जाएत। आजाद बुढ़ियाकेँ बुझबैत कहथिन-

“माता जी, अहाँ बक्सापर सँ हटि जाउ। हम खाली नगद लेब। जेबर नै लेब।”

आजादक विनम्र बातसँ बुढ़ियाक साहस बढ़ि गेल छेलै। जखनि चन्द्रशेखरसँ संगी सभ पुछलकनि तखनि ओ सभ बात कहलखिन। आजादक बात सुनि सभ ठाहाका दऽ हँसए लगल। गट्टा छोड़बैले एक गोटे बढ़ए लगला आकि चन्द्रशेखर कहलखिन-

“माताजीक सभ सम्पति घुमा दिअनु।”

सम्पतिक नाओं सुनि भावुक बुढ़िया चन्द्रशेखरक गट्टा छोड़ि देलकनि। तखनि ओ घरसँ संगी सबहक संगे निकलला।



सादा जिनगी

सन १९४९ई.क बात छी। ओइ समए स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री उत्तर प्रदेश सरकारमे गृहमंत्री रहथि। एक दिन लोक निर्माण विभागक किछु कर्मचारी हुनका डेरामे कूलर लगबैले आएल। शास्त्रीजी डेरामे नै रहथि। परिवारक बच्चो आ पत्नीओकेँ कूलर देखि खुशी भेलनि।

साँझमे लालबहादुर शास्त्री डेरा एला। डेरा अबिते देखलखिन जे कूलर लगबैले लोक निर्माणक कर्मचारी सभ छथि। कूलरसँ शास्त्री जीकेँ खुशी नै भेलनि। ओ कूलर लगबैसँ मना कऽ देलखिन। परिवारक सभ स्तब्ध भऽ गेल। पत्नी कहलकनि-

“जे सुविधा सरकार दऽ रहल अछि ओकरा मना किएक करै छी?”

गंभीर स्वरमे शास्त्रीजी उत्तर देलखिन-

“ई जरूरी नै अछि जे हम सभ दिन मंत्रीए रहब। कूलरसँ सबहक आदति बिगडि जाएत। परिवारमे बेटीओ अछि जेकर बिआह हेतै। दोसर घर जाएत। अगर जौ ओकरा ओइ परिवारमे एहेन सुविधा नै होय तखनि तँ कष्ट हेतै।”



विचारक उदय

गाँधीजी बच्चे रहथि। हुनक बड़का भाय हुनका मारलकनि। गाँधीजी कनैत माए लग आबि कहलखिन। गाँधीक बात सुनि माए कहलखिन-

“तोहूँ किएक ने मारलह?”

माएक बात सुनि गाँधीजी कानब छोड़ि कहलखिन-

“जे गलती भैया केलनि सएह करैले हमरो कहै छी। आकि हुनका मनाही करबनि।”

बेटाक बात सुनि माए कहलखिन-

“बौआ, हम तोहर परीक्षा लेलियऽ। अगर तोरामे एहेन विचारक विकास हेतह तँ आगू चलि कऽ सौंसे दुनियाँक प्रति सिनेह आ प्रेम पौबह।”

बच्चाक समुचित विकासक आरंभ परिवारेसँ शुरू होइत अछि।



पुष्ट इकाइसँ समर्थ राष्ट्र बनैत

फ्रान्स हालैंडपर आक्रमण कऽ देलक। फ्रान्स नम्हर देशो आ सम्पन्नो। मुदा होलैंड छोटा आ पछुआएलो। मुदा फ्रान्स हालैंडसँ जीत नै पबैत। ई देखि, फ्रान्सक राजा लुइ-चैदहम बिगड़ि मंत्री कालवर्टकेँ बजा पुछलखिन-

“हमर देश एते पैघ आ सामरिक सम्पन्न रहितो पछड़ि किए रहल अछि?”

राजाक बात सुनि कालवर्ट नम्र भऽ उत्तर देलकनि-

“महत्ता आ समर्थता। कोनो देशक विस्तार आ वैभवपर निर्भर नै करैत। ओ निर्भर करैए ओइ देशक देश-भक्त आ बहादुर नागरिकपर। जे अपना देशक अपेक्षा हालैंडमे मजगूत अछि।”

मंत्रीक बात सुनि राजा अपन सेना आपस बजा लेलक। हालैंडमे बच्चा-बच्चाकेँ राष्ट्रक सशक्त इकाईक रूपमे ढालल जाइत। जइसँ ओ शक्तिशाली बनि ठाढ़ अछि।



डर नै करी

उगैत सुरुज जकाँ जिनगी अपन दिशामे अपना ढंगसँ बढैत जा रहल छल। एक विरामपर जा जिनगी पाछू मुहँ घूमि कऽ तकलक तँ चौक गेल। चंडालिनी सन कारी आ कुरूप छाया पाछू-पाछू अबै छल। छायाकेँ देखि जिनगी ललकारि कऽ पुछलक-

“अभागिनी, तौ के छै? हमरा पाछू-पाछू किएक अबै छै? तोहर कारी आ कुरूप काया देखि हमरा डर होइए। जो भाग। हमरासँ हटि कऽ रह।”

छाया छिप गेल। मुदा जिनगी धिंघयाइत बढल। पुनः छाया आबि कहलकै-

“बहिन, हम तोहर सहचरी छियौ। तोरे संग हमहूँ चलि रहल छी। आ अंतमे दुनू गोटे संगे रहब। तँए डरैक कोनो बात नै। तौ हमरा नै चिन्है छै, हमरे नाओँ मृत्यु छी।”

मृत्युकेँ पाछू लगल अबैत देखि जिनगी डरि गेल। सकपका कऽ गिर पड़ल।



आसिरवाद उलटि गेल

एक गोटेकेँ दूटा बेटा छेलै। दुनूक बीच तीन बर्खक जेठाइ-छोटाइ छेलै। गामेक स्कूलमे दुनू भाँइ पढ़बो केलक। अपर प्राइमरी स्कूल रहने दुनू-भाँइ पचमे तक पढ़लक। बाप-माए दुनू बेटाक बिआह कऽ देलक। जाबे धरि छोटका बेटाक दुरागमन नै भेल छेलै ताबे धरि तँ परिवार शान्त रहलै, मुदा छोटकाक दुरागमन होइते परिवारमे खटपट शुरू हुअ लगलै। एक्को दिन एहेन नै होय जइ दिन दुनूक बीच झगड़ा नै होइत। सभ दिन दुनू दियादनीकेँ झगड़ा करैत देखि बापकेँ बरदास नै भेलै। दुनू बेटाकेँ बजा बाप कहलकै-

“बौआ, सभ दिन झगड़ा केने घरसँ लक्ष्मी पड़ा जेथुन तँए अखनि हमहूँ जीविते छी दुनू भाँइ भीन भऽ जाह। जे चीज छह दुनूकेँ बाँटि दइ छिअ।”

जेठका बेटाकेँ नगद आ जेवर-जात हिस्सा भेलै आ छोटकाकेँ दू बीघा खेत आ बड़द भेलै। दुनू भाँइ खुशीसँ भीन भऽ गेल। नगद आ गहना-गुरिया पाबि जेठका खूब ऐश-मौज करए लगल।

दुनू परानी छोटका दिन-राति मेहनति करए। गामक लोक जेठकाकेँ करमगर आ छोटकाकेँ करमघट्टू कहए लगलै।

समए बितए लगलै। दुइए साल पछाति पाशा पलटए लगलै। जेठका बेटाक रुपैओ आ गहनो सठि गेलै मुदा छोटकाक उन्नति हुअ लगलै। नगद आ जेबर सठने जेठका चोरि करए लगल। एक दिन चोरि करए गेल तँ घरेमे पकड़ा गेल। जइसँ मारिओ खूब खेलक आ जहलो गेल।

गामक लोकक आसिरवाद उनटए लगल। जही मुँहसँ जेठकाकेँ करमगर आ छोटकाकेँ करमघट्टू कहै छेलै ओही मुँहसँ लोक जेठकाकेँ करमघट्टू आ छोटकाकेँ करमगर कहए लगलै।



रत्न गमेवाक दुख

एकटा गोताखोर कएक दिनसँ असफल होइत आएल छल। भरि-भरि दिन परिश्रम करै छल मुदा किछु हाथ नै लगै। जइसँ परिवार चलब कठिन भऽ गेलै। आन काज करैक लूरि रहबे ने करै जे करैत। भोरे घरसँ निकलि नदीक महारपर जा बैस रत्नक आशमे टक-टक पानि दिस तकैत रहै छल। निराश भऽ गोताखोर मनमे विचारलक जे आइ ऐ काजक आखिरी दिन छी। जाँ आइ किछु नै भेटत तँ काहिसँ छोड़ि देब। जाल लऽ नदीक महारपर बैस, मने-मन भगवानसँ कहए लगलनि-

“अगर अहाँ मदति नै करब तँ हम जीब केना?”

भगवानसँ प्रार्थना कऽ गोताखोर पानिमे पैसि डुमकी लगौलक। एकटा पोटरी भेटलै। पोटरी नेने ऊपर भेल। किनछरिमे बैस पोटरी खोललक। छोट-छोट पाथर ओइ पोटरीमे। पाथर देखि गोताखोर निराश भऽ गेल। मनमे क्रोधो उठलै। एकाएकी ओइ पाथरकेँ पानिमे फेकए लगल। पाथरो फेकैत आ मने-मन अपना भाग्योकेँ कोसैत। फेकैत-फेकैत एकटा पाथर बँचलै। ओइ पाथरकेँ जखनि फेकए लगल आकि ओइपर नजरि पड़लै। पाथर चमकैत रहए। ओ नीलम पाथर रहए। गोताखोर चीन्हि गेल। मुदा ताघरि तँ सभटा फेक देने छल। अपसोच करए लगल मुदा सभ तँ पानिमे चलि गेल छेलै तँए अपसोच कइए कऽ की हेतै। अपसोच करैत देखि भगवान चिड़ै बनि आबि कहए लगलखिन-

“ऐ गोताखोर, खाली तौहींटा एहेन अभागल नै छै, ढेरो अछि जे जीवन रूपी रत्न-राशिकेँ अहिना गमबैए। जो, जएह बँचल छौ ओकरे बेचि कऽ गुजर कर गऽ। मुदा ज्ञान बढ़ा। जइसँ धनो पबैक लूरि भऽ जेतौ आ मनुखो बनि जीमे।”



निसाँ

एकटा वेपारी अफीम खाइ छल। ओ अपना नोकरोकेँ अफीमक चहटि लगा देलक। एक दिन दुनू गोटे बाजार जाइक विचार केलक। दोकानमे जे सामान सभ सठल रहै ओकर पुरजी बनौलक। रूपैआ गनलक। दुरस्त बाजार रहने दुनू गोटे घरेपर भरि पेट खा लेलक। बाजार विदा भेल। किछु दूर गेलापर दुनू गोटे खेनाइ बिसरि गेल। रस्तामे होटल छेलै, दुनू गोटे घोड़ासँ उतरि खाइले गेल। घोड़ाकेँ छानि कऽ चरैले छोड़ि देलक। दोकानमे दुनू गोटे खा सोझे बजार विदा भेल। बजारक कात जखनि पहुँचल तँ वेपारीकेँ मन पड़लै जे घोड़ा ओतै छूटि गेल। मनहूस भऽ दुनू गोटे माथपर हाथ दऽ बैस रहल। थोड़ेकाल गुनधुन करैत घोड़ा आनए दुनू गोटे घूमि गेल। घूमि कऽ दोकान लग आएल तँ घोड़ाकेँ चरैत देखलक। लगाम लगा दुनू गोटे चढ़ि बजार दिस विदा भेल। बाजार पहुँच दोकानमे सौदाबारी किनलक। सामान समेटि, मोटरी बान्हि जखनि रूपैआ देमए लगलै तँ रूपैआक झोरे नै। दुनू गोटे मन पाड़ए लगल जे रूपैआक झोरा की भेल? किछु काल पछाति मन पड़लै जे झोरा तँ ओतै छूटि गेल जेतए बैसल छेलौं। दुनू गोटे बपहारि काटए लगल। एकटा ग्रामीण महिला सामान किनै छेली, दुनूकेँ कनैत देखि वेपारीकेँ कहलक-

“ई गति खाली अहीं दुनू गोटेकेँ मात्र नै बल्की सभ नसेरीकेँ होइ छै।”



सामना

वनमे अनेको सुगर परिवार छल आ एकटा सिंह सेहो रहै छेलै। जखनि कखनो सिंहकेँ भूख लगै तखनि टहलि सुगरकेँ पकड़ि खा जाइत। दोसर-तेसर सुगर सिंहकेँ देखते पड़ा जाइत। एक दिन सभ सुगर मिलि बैसार केलक। बैसारमे तँइ केलक-

“जखनि एका-एकी मरिए रहल छी तखनि लड़ि कऽ किए ने मरब।”

ऐ विचारसँ सभ सुगरमे साहस जगलै। सभ मिलि लड़ैले विदा भेल। सभ हल्लो करै आ चिकड़ि-चिकड़ि सिंहकेँ गरीएबो करै। जेते जोरगर सुगर छल ओ आगू-आगू आ अबलाहा सभ पाछू-पाछू विदा भेल। सिंहकेँ देखते सभ जोरसँ हल्ला करैत दौगल। आइ धरि सिंहकेँ एहेन मुकाबलासँ भँट नै भेल रहए। सिंह डरा गेल। अपन जान बँचबैले पड़ाएल। सिंहकेँ पड़ाइत देखि सुगर पाछूसँ खिहारलक। सिंह वनसँ बाहर भऽ गेलै। वन खाली भऽ गेलै। सभ सुगर निचेनसँ रहए लगल।



शिष्टाचार

एकटा इनारपर चारिटा पनि-भरनी पानि भरैले आएल छेली। एक्केटा डोल छेलै तँए एक गोटे पानि भरै छेली आ तीन गोटे गप-सप्प करै छेली। सभ अपन-अपन बेटाक बड़ाइ करैत। पहिल औरत बाजलि-

“हमर बेटाक आवाज एते मधुर अछि जे रजो-रजवारमे ओकरा सम्मान भेटतै।”

दोसर कहलकै-

“हमरा बेटाक शरीरमे एते तागति अछि जे नमहर भेलापर बड़का-बड़का पहलमानकँ पटकत।”

तेसर बाजलि-

“हमर बेटा एहेन तेजगर अछि जे सभ साल इस्कूलमे फस्ट करैए।”

मुड़ी निच्च्याँ केने चारिम कहलक-

“आने बच्चा जकाँ हमर बेटा साधारण अछि।”

पनिभरनी सभ इनारपर गप-सप्प करिते छल आकि स्कूलमे छुट्टी भेलै। अबैत-अबैत चारुक बेटा इनार लग देने गुजरैत रहए। एकटा गीत गबैत दोसर कुदैत-फनैत, तेसर किताब खोलि किछु पढ़ैत आ चारिम पाछू-पाछू चुपचाप अबै छल। इनार लग अबिते चारिम अपन माएक भरल घैल माथपर लऽ लेलक आ माएक हाथमे अपन बस्ता दऽ देलक। आगू-पाछू दुनू माए-बेटा आंगन विदा भेल।

इनारे लग बैसल एकटा बुढ़िया सभ बात सुनै छेली। ओ चारु पनिभरनीकँ रोकि, बजली-

“ई चारिम लड़का जे अछि ओ सभसँ नीक अछि। एकर शिष्टाचार सभसँ नीक छै।”



ठक

एकटा ठक लोमड़ी गाछक निच्चाँमे छल। गाछपर बैसल मुर्गाकेँ पट्टी दऽ रहल छेलै जे भाय तूँ नै सुनलहक जे सभ पशु-पक्षी आ जानवरक बीच सभा भेल। जइमे सर्वसम्मतिसेँ निर्णय भेलै जे अपनाके कियो केकरो अधला नै करत, तौँ किएक गाछपर छह निच्चाँ आबह आ दुनू गोटे अपन जिनगीक दुख-सुखक गप-सप्य करह। लोमड़ीक चालाकी मुर्गा बुझै छल तँए गाछपर सेँ हूँह-कारी दैत रहै मुदा निच्चाँ नै उतरै। ताबे दूटा आवारा कुकुरकेँ दौगल अबैत लोमड़ी देखलक। कुकुरकेँ देखते पड़ाएल। लोमड़ीकेँ पड़ाइत देखि गाछपर सेँ मुर्गा कहलकै-

“भाय, भगै किए छह? जखनि सबहक बीच समझौता भऽ गेलै तखनि तोरा किए डर होइ छह?”

लोमड़ी भगबो करैत आ उत्तरो दइत-

“भऽ सकैए जे तोरे जकाँ ओकरो नै बूझल होय।”



पत्नीक अधिकार

गृहस्ताश्रम ओहन आश्रम होइत जइमे आत्मसंयम, पारस्परिक सद्भाव आ सद्प्रवृत्तिक अभ्यास आसानीसँ कएल जा सकैए। एक दिन हजरत उमरसँ भेंट करए एक आदमी आएल। थोड़े काल बैसल तँ उमरक पत्नीकेँ जोर-जोरसँ उमरपर बजैत सुनलक। उमर चुपचाप सुनैत। किछु उत्तर नै दैत। ओइ आदमीकेँ बड़ छगुन्ता लगलै जे पत्नी यत्र-कुत्र कहि रहल छन्हि मुदा किछु उत्तर उमर नै दइ छथिन। ओइ आदमीकेँ नै रहल गेलै। ओ उमरकेँ पुछलकनि-

“अपनेक पत्नी यत्र-कुत्र कहि रहल छथि मुदा अहाँ मुड़ीओ उठा कऽ ओम्हर नै तकै छी?”

गंभीर स्वरमे उमर जवाब देलखिन-

“भाय, ओ हमर मैल-कुचैल कपड़ा खिंचै छथि, खाना बनबै छथि, सेवा करै छथि आ सभसँ पैघ बात जे हमरा पाप करैसँ सेहो बँचबै छथि। तखनि जौ ओ बिगड़ि कऽ दू-चारिटा बाते कहै छथि तँ की हुनका एतबो अधिकार नै छन्हि।”



शिनीची सिनेह

तीन दिनसँ चूल्हि नै पजरने, दुनू परानी सियान तँ बरदास केने रहथि मुदा बच्चा सभ भूखे ओसारपर ओंघरनियो दैत आ हुचकि-हुचकि कनबो करैत। अनेको प्रयास सियान केलक मुदा खेनाइक कोनो गर नै लगलै। अंतमे निराश भऽ सियान अपन जिनगीकेँ बेकार बूझि, आत्महत्या करैक विचार मनमे ठानि लेलक। आत्महत्या करैले विदा भेल। निराश मन दुखक अथाह सागरमे डुमए लगलै आकि पाछूसँ एक आदमी कान्हपर हाथ दऽ कहलकै-

“मित्र, ऐ अमूल्य जिनगीकेँ गमौलासँ की हएत? हम मानै छी जे अहाँक विपति अहाँकेँ आत्महत्या करैले बेबस कऽ देलक। मुदा की अहाँ ऐ विपतिकेँ हँसैत-हँसैत पाछू नै धकेल सकै छी?”

आत्मीयताक शब्द सुनि सियान बोम फाँडि कनए लगल। कनबो करैत आ अपन सभ मजबूरी ओइ आदमीकेँ कहबो करैत। मजबूरी सुनि शिनीचीओकेँ आँखिमे नोर आबि गेलै। तत्काल ओ सियानकेँ भोजनक जोगार करैले किछु रूपैआ दऽ देलखिन। सियान घूमि कऽ घर आबि भोजनक बेवस्था केलक।

वएह शिनीची जापानक प्रसिद्ध कवि छथि। अहीठाम ओ संकल्प केलनि जे अप्पन कमाइक तीन-चैथाइ भाग ओहन बेक्तीक सेवामे लगाएब जे कष्टमय जिनगीमे पड़ल अछि।

घरपर आबि शिनीची एकटा गुप्तदानक पेटी बना मुख्य चौराहापर रखि देलनि। ओइ पेटीक ऊपरमे लिखि देलखिन-

“जइ सज्जनकेँ सचमुच पाइक खगता होन्हि ओ ऐ पेटीसँ अपना काज जोकर निकालि लथि”

सभ दिन साँझकेँ शिनीची आबि पेटी खोलि देखि लथि। जौँ पेटी खाली रहैत तँ दऽ दथि।



सिखबैक उपए

एकटा गरुड छल। ओकरा एकटा बच्चा छेलै। बच्चाकेँ पीठपर लऽ गरुड एकठामसँ दोसर ठाम चरौर करै छल। साँझू पहरकेँ बच्चाकेँ पीठपर लदने घर अबै छल। उडै जोकर बच्चा भऽ गेल छेलै मुदा पीठपर बैसैक जे आदति लागि गेल छेलै से छोड़बे ने करैत। कएक दिन गरुड बुझौलकै मुदा ओ अपन बानि छोड़बे ने करैत। मने-मन गरुड सोचलक जे सोझे कहनेसँ नै मानत तँए रस्ता धड़बए पड़त।

दोसर दिन बच्चाकेँ पीठपर नेने गरुड उडैत विदा भेल। जखनि खूब ऊपर गेल तखनि आस्तेसँ अपन पाँखि समेटि बच्चाकेँ छोड़ि देलक। बच्चा निच्चाँ गिरए लगल। अपनाकेँ निच्चाँ गिरैत देखि बच्चा पाँखि फड़फड़बए लगल। आस्तेसँ निच्चाँ उतरल। आँखि उठा-उठा गरुड देखबो करैत आ बँचबैक उपएओ सोचैत। निच्चाँमे आबि बच्चा पाँखि चलबैक प्रयास करए लगल, जइसँ उड़ब सीख लेलक। साँझुपहर जखनि सभ एकठाम भेल तखनि बच्चा बापक शिकाइत करैत माएकेँ कहलक-

“माए, आइ जौँ पाँखि नै फड़फड़ेने रहितौँ तँ बाबू बिचचे रस्तामे मारि दइतए।”

माए बूझि गेलि। हँसैत बेटाकेँ कहलक-

“बौआ, जे अपनेसँ नै सिखत, स्वावलंबी बनत, ओकरा सिखबैक एकटा ईहो रस्ता छिऐ।”



कर्तव्यपरायन तोता

एकटा जमीनदार रहथि। हुनका बहुत खेत रहनि। धानक खेती केने रहथि। खेतक चारू कोणपर रखवार खोपड़ी बना ओगरबाहि करै छल। रखवारकेँ रहितो तोता सभ उड़ैत आबि, धानो खाइत आ सीस काटि-काटि लैयो जाइत। एकटा एहेन तोता छल जे अपने खेतेमे खा लैत आ उड़ै काल छह गोट सीस काटि लोलमे लऽ उड़ि जाइत। एक दिन रखवार ओकरा जालमे फँसा लेलक। तोताकेँ नेने जमीनदार लग रखबार लऽ गेल।

तोताकेँ देखि जमीनदार पुछलकै-

“धानक सीस काटि केतए जमा करै छै ”

निर्भीक भऽ तोता उत्तर देलकनि-

“दूटा सीस कर्ज सठबैले दूटा कर्ज लगबैले आ दूटा परमार्थ लेल लऽ जाइ छी। कुल छह-टा सीस, अपन पेट भरलापर, लऽ उड़ि जाइ छी।”

अचंभित होइत जमीनदार पुछलकै-

“की मतलब?”

तोता-

“बूढ़ माए-बाप छथि जिनका उड़ि नै होइ छन्हि, तनिका लेल दूटा सीस। दूटा बच्चा अछि तेकरा लेल दूटा सीस आ पड़ोसिआ दुखित अछि दूटा सीस हुनका लेल।”

तोताक बात धियानसँ सुनि जमीनदार गुम्म भऽ गेला। किछु समए मने-मन विचारि रखवारकेँ कहलखिन-

“ऐ तोताकेँ चीन्हि लहक। जौं कहियो धोखासँ पकड़ाइओ जा तँ छोड़ि दिहक।”



तस्वीर

एकटा चित्रकार तीनटा तस्वीर बनौलक। एकटा सोचमे, दोसर हाथ मलैत आ तेसर माथ धुनैत। एक गोटे तीनू तस्वीरकँ देखि चित्रकारसँ पुछलक-

“तीनू तीन रंगक बूझि पड़ैए।”

उत्तर दैत चित्रकार कहलक-

“ई तीनू एक्के आदमीक तीन अवस्थाक छी।”

“कोन-कोन अवस्थाक छी।”

“पहिल बिआहसँ पहलका छी। जखनि युवक कल्पनामे उड़ैए। सोचैए जे केते सुन्नर कनियाँ भेटत। दोसर बिआह पछातिक छी। जखनि पारिवारिक जिनगी शुरू होइ छै आ जिम्मेवारी बढ़ै छै। जिम्मेवारी बढ़लाक बादे समस्यासँ टकराए पड़ै छै। तखनि बूझि पड़ै छै जे कोन जंजालमे पड़ि गेलौं तँए हाथ मलैए। तेसर तस्वीर ओ छी जखनि स्त्रीक वियोग आकि विरोध होइ छै। तखनि माथ घुनैत सोचैए पड़ै छै जे हमर कपार फूटि गेल। अपने किरदानीसँ अपन, परिवारक आ खानदनक नाक कटा देलिये। जाँ हमहूँ सही रस्तापर आबि चलैत रहितौं तँ एहेन दिन नै देखए पड़ैत।”



मितक प्रयोजन

एकटा पैध पोखरि छल। ओकर उत्तरबरिया महारमे मोर रहै छल आ दछिनबरियामे मोरनी। दुनू असगरे-असगरे रहैत। एक दिन मोर मोरनी ऐठाम जा बिआहक प्रस्ताव रखलक। मोरक प्रस्ताव सुनि मोरनी पुछलकै-

“अहाँकै कएटा दोस अछि?”

नजरि दौगबैत मोर उत्तर देलकै-

“एकओटा नै।”

मोरक जवाब सुनि मोरनी बिआह करैसँ इनकार कऽ देलक। तखनि मोरक मनमे एलै जे सुखसँ जीबैले दोस जरूरी अछि। ओतएसँ विदा भऽ मोर पुबरिया महार होइत चलल। पुबरिया महारमे सिंह रहै छल। आ पछबरियामे काछु। सिंह बैसल-बैसल झपकी लइ छल। मोर सिंहक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मोरकँ बजैक साहसे ने होय। बड़ी खान धरि मोरकँ ठाढ़ भेल देखि सिंह पुछलकै-

“की बात?”

निराश मोने मोर कहलकै-

“भैया, हम अहाँसँ दोस्ती करए एलौं हेन। किएक तँ जिनगी लेल मितक खगता होइ छै।”

सिंह मानि दोस्ती कऽ लेलक। सिंहसँ दोस्ती भेला पछाति मोर पछबरिया महार आबि काछुसँ सेहो दोस्ती केलक। पछबरिए महारक गाछपर टिटही सेहो रहै छल। जे अपन काज इमानदारीसँ करै छल। जखनि कखनो शिकारीक आगमन होय आकि कोनो आफत अबैबला होय तँ टिटही सभकँ जानकारी दऽ दैत।

दोस्ती केला पछाति मोर मोरनी लग आबि सभ बात कहलक। मोरनी बिआह करैले राजी भऽ गेल। दुनूक बीच बिआह भऽ गेलै। दुनू एकै ठाम रहए लगल।

एक दिन एकटा शिकारी शिकारक भाँजमे पहुँचल। भरि दिन शिकारी शिकारक पाछू हरान भेल रहए मुदा केतौ किछु नै भेलै। थाकिओ गेल रहै आ भूखो लागि गेल रहए। गाछक निच्यँमे सुसताए लगल। गाछक निच्यँमे चिड़ैक चट देखि गाछपर चढ़ि चिड़ैकँ पकड़ैक विचार केलक। गाछपर सँ

मोर-मोरनी सेहो शिकारीकेँ देखैत। शिकारीकेँ गाछपर चढ़ैत देखि दुनू परानी -मोर-मोरनी- सोचए लगल जे आइ दुनूक जान जाएत। मोर उड़ैत टिटही लग गेल। टिटही जोर-जोरसँ बोली देमए लगलै। सिंह बूझि गेल। शिकार पकड़ैले सिंह विदा भेल। ताबे कछुआ सेहो पानिसँ निकलि किनछरिमे आबि गेलै। सिंहकेँ देखि शिकारी भगैक ओरियान करए लगल आकि काछुपर नजरि पड़लै। काछुकेँ पकड़ए शिकारी किनछरिमे गेल आकि काछु ससरि पानिमे चलि गेल। शिकारी पानिमे पैइसए लगल आकि गादि -दलदल- मे लसकि गेल। ने आगू बढ़ि होय आ ने पाछू भऽ होय। ताबे सिंह आबि शिकारीकेँ पकड़ि लेलक। शिकारीकेँ पकड़ल देखि मोरनी मोरकेँ कहलक-

“बिआह करैसँ पहिने जे मितक संख्या पुछने रही से देखलिये।
आइ जौं दोस्ती नै केने रहितौं तँ की होइत?”



स्वार्थपूर्ण विचार

एकटा बच्चाक मृत्यु भऽ गेलै। अभिभावक संग किछु गोटे ओकरा उठा कऽ असमसान लऽ गेल। बर्खा होइत रहए। असमसानमे सभ विचारए लगल जे एहेन दुरकाल समैमे लाशकेँ की कएल जाय? अपनामे सभ विचारिते छल आकि बिलसँ एकटा सिआर निकलि कहलकै-

“एहेन समैमे लाशकेँ जरौनाइसँ नीक माटिमे गारनाइ हएत। धरती माएक गोदमे समरपित करब सभसँ नीक हएत।”

सिआरक बात समाप्तो नै भेल छल आकि काछु कहए लगलै-

“धारमे फेक दिअौ। ऐसँ नीक दोसर नै हएत।”

ताबे एकटा गीध उडैत आबि कहए लगलै-

“सभसँ नीक हएत जे ओहिना फेक दिअौ, धारेमे नहा लिअ आ गामपर चलि जाउ।”

कठियारीबला सभ तीनूक चलाकी बूझि गेल। तीनूकेँ धन्यवाद दैत विदा केलक। बर्खो छूटि गेलै। सभ मिलि चीता खुनि जारनि दऽ डाहि देलक।



संगीक महत

एकटा गाछ लग एकटा फूलक लत्ती जनमि कऽ लटपटाइत बढ़ैत गाछक फुनगी धरि पहुँच गेल। गाछक आश्रए पाबि ओ लत्ती फुलाए-फड़ए लगल। लत्तीक फड़-फूल देखि गाछक मनमे द्वेष जगए लगलै जे हमरे बले ई लत्ती एते बढ़ि, फड़ै-फुलाइत अछि। जाँ हम सहारा नै दैतिऐ तँ कहिया-केतए ने माल-जाल चरि नष्ट कऽ देने रहितै। लत्तीपर रोब जमबैत गाछ कहलकै-

“तोरा हम जे आदेश दिऔ से तूँ कर। नै तँ मारि कऽ भगा देबौ।”

वृक्ष लत्तीकँ कहिते छल आकि दूटा बटोही ओही रस्ते जाइ छल। लत्तीसँ सुशोभित गाछ देखि एकटा राही दोसरकँ कहलक-

“संगी, ऐ वृक्षकँ दखियौ जे केते सुन्दर लगैए। निच्चाँमे केते-शीतल केने अछि। ऐठाम बैस बीड़ी-तमाकुल कऽ लिअ, तखनि आगू बढ़ब।”

लत्ती संग अपन महत सुनि गाछक रोब समाप्त भऽ गेलै। ओइ दिनसँ दुनू मिलि प्रेमसँ रहए लगल।



उपहास

कोनो अधलो प्रचलन माने चलनि आकि ढर्राकेँ तोडब अपने-आपमे कठिन कार्य होइत। जखनि कखनो कियो समाज आकि परिवारमे गलत कार्यकेँ छोडि स्वस्थ आकि तर्कयुक्त कार्य आरंभ करैत तँ खाली परिवारेटा मे नै समाजोमे सभ उपहास करैए। जइसँ धैर्यवान तँ स्थिर रहैत मुदा साधारण मनुख अधीर भऽ जाइत।

पहिने इंग्लैंडमे छतरी -छत्ता- ओढ़नाइ गमाडपन बूझल जाइ छेलै। जइ दुआरे लोक बरखोमे भीजैत चलैत मुदा छाता नै ओढ़ैत। ऐ गलत प्रथाक विरोध करैत हेनरी जेम्स छाता ओढ़ब शुरू केलनि। सदिखन ओ छाता संगेमे राखथि। जइसँ जेम्ह होइत चलथि व्यंग्यक बौछार हुअ लगनि। मुदा तेकर एक्को पाइ परवाह नै करथि।

देखा-देखी लोक हुनकर अनुकरण करए लगल। किछु दिन पछाति सभ छाता राखए लगल। जइसँ चलनि बनि गेल। चलनि एते बढि गेलै जे स्त्रीगणो आ राजमहलोक सभ छाता ओढ़ए लगल।

बादमे जएह सभ व्यंग्य करैत वएह सभ हेनरी जेम्सकेँ बधाइ देमए लगलनि। बधाइ देनिहारकेँ हेनरी जेम्स कहथिन-

“जे कियो, उपहास आ व्यंग्यक विरोधसँ नै डरत, वएह छोट-सँ-पैध धरि परिवर्तन कऽ सकैए।”

चाहे शिक्षा हो आकि खेती आकि आन-आन जिनगीक पहलू, रुढ़िवादी पुरान प्रथाकेँ तोड़ए पड़त। जाबे ओ नै टुटत ताबे नव समाजक निर्माण कल्पना रहत। तँए किछु प्रथाकेँ तोड़ि आ किछुकेँ सुधारि चलए पड़त। ऐ लेल सभमे साहस आनए पड़त।



महादान

अज्ञानक निवारण करब सभसँ पैघ पुण्य परमार्थ छी। जे स्वध्याय आ ज्ञानार्जनसँ होइए। उत्तराखंडमे एकटा पुरान नगरमे सुबोध नामक राजा राज्य करै छला। राजा सुबोधक निअम छेलनि जे राजक काज शुरू करैसँ पहिने, आएल याचक सभकेँ दान दइ छला। ऐ निअममे कहियो भूल नै भेलनि।

एक दिन सभ याचककेँ दान दऽ देलखिन मुदा विचित्र स्थिति पैदा भऽ गेलनि। एकटा याचक ओहन आएल छल जे दान लेल तँ हाथ पसारै छल मुदा मुहसँ किछु नै बजैत। सभ हरान होइत जे हिनका की देल जान्हि? एतथर्द बुधियार सबहक सलाहकार बोर्ड बनौलनि। कियो विचार दन्हि जे वस्त्र देल जाए तँ कियो अन्न देबाक सलाह देथिन। कियो सोना-चानीक विचार देथिन। मुदा समस्याक यथार्थ समाधान हेबे ने करैत। सुबोधक पत्नी उपवर्गा रहथिन।

उपवर्गा कहलकनि-

“राजन, जइ आदमीक मुहसँ बोल नै निकलै ओकरा आन कोनो चीज देब उचित नै। तँए एहेन लोककेँ मुँहमे बोल देब सभसँ उत्तम हएत। अर्थात् ज्ञानदान। ज्ञानसँ मनुख अपन सभ इच्छा-आकांक्षा पूर्ति कऽ सकैए आ दोसरोकेँ मदति कऽ सकैए।”

उपवर्गाक विचार सभकेँ जौ चलनि। ओइ आदमी लेल शिक्षा बेवस्था कएल गेल। ओइ दिन सुबोध अपन दानक सार्थकता बुझलनि।



भाग्यवाद

भाग्यवाद, शकुन, फलित ज्योतिष जकाँ अनेको प्रकरण अछि जे जनसमुदायकेँ जंजालमे ओझरा शोषणक रस्ता शोषक लेल खोलि दइए। एकटा ज्योतिषी सुख-दुख, जनम-मरणक बात कहि मनसम्फे धन जमा कऽ ताड़ी-दारू खूब पीए छला। एक दिन एकटा जमीनदारक ऐठाम पहुँच, हुनक हाथ देखि कहलखिन जे एक बरखक अभियनतरे अहाँक मृत्यु भऽ जाएत। ज्योतिषीक बातक बिसवास कऽ जमीनदार दिनो-दिन सोगाए लगला। जमीनदारकेँ तीनटा बेटा। तीनू पिताक आज्ञापालक। पिताकेँ सोगाइत देखि मझिला बेटा पुछलकनि-

“बाबूजी, अपने दिनानुदिन किएक रोगाएल जाइ छी?”

चिन्तित मोने जमीनदार उत्तर देलखिन-

“बौआ, हमर औरदा पूरि गेल। सालक भीतरे मरि जाएब।”

“ई, अहाँ केना बुझलिये?”

“ज्योतिषी हाथ देखि कहलनि।”

मझिला बेटा ज्योतिषीकेँ बजा पुछलकनि-

“अहाँ अपने केते दिन जीब?”

हँसैत ज्योतिषी उत्तर देलखिन-

“तीस बरख।” ज्योतिषीक बात सुनि ओ घरसँ फरुसा आनि सोझे ज्योतिषीक गरदनपर लगा देलक। ज्योतिषीक मुड़ी धरसँ अलग भऽ गेल। तखनि ओ पिताकेँ कहलक-

“हिनकर उमेर तीस बरख बँचले छेलनि तखनि आइ किएक मरला? ई सभ ठक छी। ठकक बातमे पडि अहाँ अनेरे सोगाएल जाइ छी।”

जमीनदारक भ्रम टूटि गेलनि। धीरे-धीरे निरोग हुआ लगला।



सदृति

स्कन्द पुराणक कथा छी । एक बेर कात्यायन देवर्षि नारदसँ पुछलकनि-

“भगवान, आत्म-कल्याण लेल भिन्न-भिन्न शास्त्रमे भिन्न-भिन्न उपए आ उपचार बतौल गेल अछि । गुरुजन सेहो अपन-अपन विचारानुसार केते तरहक साधन-विधानक महात्म्य बतौने छथि । जेना- जप, तप, तियाग, वैराग्य, योग, ज्ञान, स्वध्याय, तीर्थ, व्रत, धियान-धारण, समाधि इत्यादि अनेको रस्ता कहने छथि । जे सभ करब असंभवे नै असाध्यो अछि । सामान्यजन तँ निर्णए ने कऽ सकैए जे ऐमे केकरा चुनल जाए? कृपा कऽ अपने एकर समाधान करिऔ जे सर्वसुलभ सेहो होय आ सुनिश्चित मार्ग सेहो होय ।”

धियानसँ नारद कात्यायनक बात सुनि कहलखिन-

“हे मुनिश्रेष्ठ, सदज्ञान आ भक्तिक एक्के मार्ग अछि । जे छी मनुखकेँ सत्कर्ममे प्रवृत्त करब । स्वयं संयमी बनि अपन सामर्थ्यसँ गिरल आदमीकेँ उठबए आ उठलकेँ उछालैमे नियोजित करए । सत्प्रवृत्तिअ असल देवी छी । जेकरा जे जेते श्रद्धासँ सिंचैए ओ ओते विभूतिकेँ अर्जित करैए । आत्म-कल्याण आ विश्व-कल्याणक समन्वित साधना लेल परोपकार-रत् रहब श्रेष्ठ अछि । चाहे बेकती कोनो जाति आकि धर्मक किएक ने होथि ।”



आश्रम नै स्वभाव बदली

एकटा युवक उद्धत स्वभावक छल। बात-बातमे खिसिआ कऽ आगि-अंगोड़ा भऽ जाइत। जौं कियो बुझबै-सुझबै छेलै तँ ओ घर छोड़ि संयासी बनैक धमकी दइ छेलै। युवकसँ परिवारक सभ परेशान रहैत। एक दिन पिता खिसिआ कऽ संयासी बनैले कहि देलक।

घरसँ किछुए दूर हटि संयासीक आश्रम छेलै। जे ओकरा बूझल छेलै। घरसँ निकलि युवक सोझे संयासीक आश्रम पहुँच गेल। आश्रमक संचालक ओइ युवकक उदंडतासँ परिचित छला। युवककेँ आश्रममे पहुँचते, संचालक रस्तापर अनै दुआरे पुचकारि कऽ लगमे बैसा विचार पुछलखिन। ओ युवक संयासक दीक्षा लइक विचार व्यक्त केलक। दोसर दिन दीक्षा दइक आश्रासन संचालक दऽ देलखिन।

दीक्षाक विधानमे पहिल कर्म छल गोसाँइ उगैसँ पहिने समीपक धारमे नहा कऽ एनाइ। आलसी प्रवृत्ति आ जाड़सँ डरैबला युवककेँ ई आदेश खूब अखड़लै। मुदा करैत की? निअम पालन तँ करए पड़तै।

कपड़ाकेँ देवालक खुट्टीपर टांगि युवक नहाइले गेल। जखनि युवक नहाइले गेल आकि संचालक कपड़ाकेँ चिरी-चोट फाड़ि देलक। नहा कऽ थरथराइत युवक आएल तँ देखलक। तामसे आरो थरथराए लगल। मुदा करैत की?

दीक्षाक मुहूर्त संचालक सँझुका बनौलक। ताधरि मात्र किछु फल-फलहरी खेबाक छेलै। तँए ओइ युवक लेल नून मिलौल करैला परोसि कऽ थारीमे देल गेलै। एक तँ करैला ओहिना तीत दोसर छुच्छे। कंठसँ निच्चाँ युवककेँ उतरबे ने करए।

भोरमे उठब, जाड़मे नहाएब, फाटल-चीटल कपड़ा पहिरब आ तैपरसँ तीत करैला खेनाइ। युवक खिन्न हुआ लगल। संचालक सभ बुझथि। युवककेँ बजा संचालक कहलखिन-

“संयासी बनब कोनो खेल नै छिऐ। ऐ दिशामे बढनिहारकेँ डेग-डेगपर मनकेँ मारए पड़ै छै। परिस्थितिसँ ताल-मेल बैसा, संयम बरैत, अनुशासनक पालन करए पड़ै छै। तखनि कियो संयासी बनैए।”

भरि दिन युवक अपन प्रस्तावपर सोचैत-विचारैत रहल। तेसर पहर
अबैत-अबैत ओ पुनः घूमि कऽ घर आबि गेल। संयम साधना आ मनोनिग्रहक
नामे तँ संयास छी। जे घरोपर रहि लोक पालन कऽ सकैए।
स्वभाव बदलने वातावरणो बदलि जाइ छै।



पुरुषार्थ

संसारक कुशल-क्षेम बुझैले भगवान एक दिन नारदकेँ पृथ्वीपर पठौलखिन। पृथ्वीपर आबि नारद एकटा दीन-हीन बूढ़ आदमी लग पहुँचला। ओ वेचारे -वृद्ध-आदमी- अन्न-वस्त्र लेल कलहन्त छल। नारद जीकेँ देखते चीन्हि गेलखिन। कनैत-कलपैत कहए लगलनि-

“अहाँ घूमि कऽ जखनि भगवान लग जाएब तखनि कहबनि जे हमरा सन-सन लोक लेल जीबैक जोगार करथि।”

बूढ़क बात सुनि उदास मोने नारद आगू बढ़ला। आगू बढ़िते एकटा धनीक आदमीसँ भेंट भेलनि। ऊहो नारदकेँ चीन्हि गेलनि। ओ धनीक नारदकेँ कहलकनि-

“भगवान हमरा कोन जंजालमे फँसौने छथि जे दिन-राति परेशान-परेशान रहै छी। कम धन दितथि जे गुजरो चलैत आ चैनोसँ रहितौं। तँए भगवानकेँ कहबनि जे जंजाल कम कऽ दथि।”

दुनूक बात सुनलापर नारद मने-मन सोचए लगला जे कियो धने तबाह तँ कियो निर्धने तबाह। सोचैत-विचारैत नारद आगू बढ़ला। थोड़े आगू बढ़लापर बाबाजीक झुण्ड भेटलनि। नारदकेँ देखि बाबाजी घेरि कऽ कहए लगलनि-

“स्वर्गमे तोहीं सभ मौज करबह। हमरो सभले राजसी ठाठ जुटाबह नै तँ चुट्टासँ मारि-मारि भुस्सा बना देबह।”

नारद घूमि कऽ भगवान लग पहुँचला। यात्राक वृत्तान्त भगवान नारदसँ पुछलकनि। तीनू घटनाक वृत्तान्त नारद सुना देलखिन। हँसैत नारायण कहए लगलखिन-

“देवर्षि, हम केकरो कर्मक अनुसार किछु दइले बेवस छी। जे कर्महीन अछि ओकरा केतएसँ किछु देबै। अहाँ फेर जाउ। ओइ वृद्ध गरीबकेँ कहबै जे भाय अपन गरीबी मेटबैले संघर्ष करू। अपन पुरुषार्थकेँ जगाउ। तखनि सभ किछु भेटत। दोसर ओइ धनीककेँ कहबै जे अहाँकेँ धन दोसराक उपकार करैले देलौं। से नै कऽ संग्रही बनि गेलौं तँए अहाँ धनक जंजालमे फँसि गेल छी। आ ओइ बाबाजी सभकेँ कहबै जे परमार्थिक भेष बना कोढ़ि आ स्वार्थी बनि गेल छी, तँए अहाँ सभकेँ नरक हएत।



नैष्ठिक सुधन्वा

महाभारतमे सुधन्वा आ अर्जुनक बीच लड़ाइक कथा आएल अछि। दुनू महाबलि युद्ध विद्यामे निपुन। दुनूक बीच लड़ाइ छिड़ल। धीरे-धीरे लड़ाइ जोर पकड़ैत गेलै। लड़ाइ एहेन भयंकर रूप लऽ लेलकै जे निर्णयक दौड़ आबिए ने रहल छेलै।

अंतिम बाजी ऐ विचारपर अडल जे फैसला तीन वाणमे हुआए। या तँ एतबेमे कियो हारि जाए नै तँ लड़ाइ बन्न कऽ दुनू हारि कबूल कऽ लिअए। जीवन-मरणक प्रश्न दुनूक सामने। कृष्ण सेहो रहथिन। कृष्ण अर्जुनकेँ मदति करैत रहथिन। हाथमे जल लऽ कृष्ण संकल्प केलनि जे “गोवरधन उठौला आ ब्रजक रक्षा करैक पुण्य हम अर्जुनक वाणक संग जोड़ै छी।”

सुधन्वा संकल्प केलक-

“पत्नी धरम पालनक पुण्य अपन अस्त्रक संग जोड़ै छी।”

दुनू अस्त्र अकास मार्गसँ चलल। अकासेमे दुनू टकराएल। अर्जुनक अस्त्र कटि गेल। सुधन्वाक अस्त्र आगू बढ़ल मुदा निशान चूकि गेलै।

दोसर अस्त्र पुनः उठल। कृष्ण अपन पुण्य अस्त्रक संग जोड़ैत कहलखिन-

“गोहिसँ हाथीक जान बचाएब आ द्रौपदीक लाज बँचबैक पुण्य जोड़ै छी।”

अपन अस्त्रक संग जोड़ैत सुधन्वा बाजल-

“नीतिपूर्वक उपारजन आ दोषरहित चरित्रक पुण्य जोड़ै छी।”

दुनू अस्त्र अकासेमे टकराएल। सुधन्वाक वाण अर्जुनक वाणकेँ काटि धरासायी कऽ देलक। तेसर अस्त्र बाँकी रहल। ऐपर निर्णय आबि गेल। अर्जुनक वाणक संग जोड़ैत कृष्ण कहलखिन-

“बेर-बेर ऐ धरतीपर अवतार लऽ धरतीक भार उतारैक पुण्य जोड़ै छी।”

अपन वाणक संग जोड़ैत सुधन्वा कहलक-

“स्वार्थ लेल धनकेँ एक्को क्षण बिनु सोचल आ सदति परमार्थमे

लगौल पुण्य जोड़ै छी।”

दुनू वाण आकास मार्गसँ चलल। अर्जुनक वाण कटि कऽ निच्चाँ गिड़ल। दुनू पक्षमे के अधिक समर्थ, ई जानकारी देवलोकमे पहुँचल। देवलोकसँ फूलक वर्षा सुधन्वापर हुआ लगल। लड़ाइ समाप्त भेल। भगवान कृष्ण सुधन्वाक पीठि ठोकि कहलखिन-

“नरश्रेष्ठ, अहाँ साबित कऽ देलों जे नैष्ठिक गृहस्थ साधक कोनो तपस्वीसँ कम नै होइ छै।”



सद्गृहस्त

एकटा गृहस्त छला। संयमसँ जीवन-यापन करै छला। परिवारकेँ सुसंस्कारी बनबैमे सदिखन लगल रहथि। नीतिपूर्वक आजीविकासँ जिनगी बितबथि। परिवारक काज आ खर्चसँ जे समए आ धन बँचैत रहनि ओ परमार्थमे लगबथि। ओ गृहस्त कहियो तपोभूमि नै गेला मुदा घरेमे तपोवन बना नेने छला। देवतो प्रसन्न रहै छेलखिन।

एक दिन गृहस्तक क्रियासँ खुशी भऽ इन्द्र आबि वर मांगैले कहलखिन। गृहस्त असमंजसमे पड़ि गेला जे की मंगबनि। जखनि असंतोषे नै तखनि अभाबे कथीक? स्वाभिमानी गमौलाक उपरान्ते कियो केकरोसँ किछु पबैए। ई बात सोचि गृहस्त मने-मन विचारए लगला जे जइसँ ऋणो-भार नै हुअए आ देवतो अपमान नै बुझथि से करबाक अछि। बड़ीकाल धरि सोचैत-विचारैत गृहस्त इन्द्रसँ मंगलकनि-

“हमर छाया जेतए पड़ै ओतए कल्याणक बर्खा होय।”

इन्द्र वरदान तँ दऽ देलखिन मुदा अर्चंभित भऽ गृहस्तसँ पुछलखिन-

“हाथ रखलापर कल्याणो होइ छै आ आनंदो, प्रशंसो आ प्रत्युपकारक संभवनो होइ छै। मुदा छायासँ कल्याण भेलोपर लाभसँ बंचित रहए पड़ै छै। तखनि एहेन विचित्र वर किएक मंगलौ?”

मुस्कीआइत गृहस्त कहलखिन-

“देव, सोझहाबलाक कल्याण भेने अपनामे अहंकार पनपैए। जइसँ साधनामे बाधा उपस्थिति होइए। छाया केकरापर पड़लै, के केते लाभान्वित भेल, ई पता नै लागब जीवन लेल श्रेयस्कर छी।”

साधनाक यएह रूप पैघ होइ छै। एहने क्रमक प्रगतिक रस्तापर चलैत-चलैत बेकती महामानव बनैए।



सद्भाव

अपन शिष्यक संग महात्मा इसा केतौ जाइत रहथि। साँझ पडि गेलै। राति बितबैले एकठाम ठहरि गेला। संगमे पाँचेटा रोटी खाइले छेलनि। रोटीक हिसाबे खेनिहार अधिक तँए सभकेँ पेट भरब कठिन छेलै। अपनामे शिष्य सभ यह गप-सप्प करैत रहए। इसो सुनलखिन। मुस्कीआइत इसा कहलखिन-

“सभ रोटीकेँ टुकड़ी-टुकड़ी तोडि एकठाम कऽ लिअ आ चारु भागसँ सभ बैस, खाउ। जइसँ सभकेँ एक रंग भोजन भेट जाएत।”

महात्मा इसाक विचार मानि, सभ सएह केलक। संतोषक जनम सबहक हृदैमे भऽ गेल। सभ कियो खेनाइ शुरू केलक। रोटी सठति-सठति सबहक पेटो भरि गेलै। तखनि एकटा शिष्य बाजल-

“ई गुरुदेवक चमत्कार छियनि।”

शिष्यक बात सुनि इसा कहलखिन-

“ई अहाँ लोकनिक सद्भावक सहकार छी नै कि चमत्कार। अगर अहाँ सभ अपनामे छीना-झपटी करितौ तँ ई संभव नै होइतए। जैठाम सद्भावसँ परिवारक सम्बन्ध होइ छै तैठाम अहिना प्रभुक अयाचित सहयोग भेटैए।”



आलस्य वनाम पिशाच

वन विहार करैले वासुदेव, बलदेव आ सात्यकि घोड़ापर चढ़ि निकलला। घनघोर जंगल रहने तीनू गोटे रस्तामे भटकि गेला, जाइत-जाइत एहेन सघन वनमे पहुँच गेलथि जैठामसँ ने पाछू होएब बननि आ ने आगू बढ़ब। मुन्हारि साँझ भऽ गेल गेल छेलै। अन्हारमे चलब आरो कठिन भऽ गेलनि। अचताइत-पचताइत तीनू गोटे अँटकि गेला। एकटा झमटगर गाछ छेलै जहिक निच्चाँमे घोड़ा बान्हि तीनू गोटे राति बितबैक कार्यक्रम बनौलनि। खाइ-पीबैले किछु रहबे ने करनि तँए गाछेक निच्चाँमे दूबिपर सुतैक ओरियान केलनि। मुदा मनमे शंका होइत रहनि जे जाँ तीनू गोटे सूति रहब आ घोड़ा कियो खोलि कऽ लऽ जाए? तीनू गोटे विचारलनि जे एक-एक पहर जागि अपनो आ घोड़ोक ओगरबाहि कऽ लेब आ बेरा-बेरी सूतिओ लेब।

पहरा करैक पहिल पारी सात्यकिक भेलनि। वासुदेव आ बलदेव सूति रहला। सात्यकि जगल रहला। कनीकाल पछाति गाछपर सँ पिशाच उतरि सात्यकिकेँ मल्लयुद्ध करैले ललकारलक। ओहने उत्तर सात्यकियो देलक। दुनूक बीच घुस्सा-घुस्सी हुआ लगल। साँसे पहर दुनूक बीच मल्लयुद्ध चलैत रहल। सात्यकिक देहमे चोटो लगलै, छालो ओदरलै। पहर बित गेल।

दोसर पारी बलदेवक आएल। सात्यकि सूति रहल। बलदेव पहरा करए लगल। थोड़ेकाल पछाति पिशाच पुनः आबि चुनौती देलकनि। बलदेवो ओहने उत्तर देलकै। पिशाचक आकार सेहो नम्हर भऽ गेल छेलै। दुनूक बीच मल्लयुद्ध शुरू भेल। पिशाच बलदेवोकेँ दुरगति कऽ देलकनि। दोसरो पहर बितल। तेसर पहरक पारी वासुदेवक छेलनि। पुनः पिशाच आबि हुनको चुनौती देलकनि। मुदा वासुदेव हँसबो करथि आ कहबो करथिन-

“बड़ मजगर अहाँ छी। निन्न आ आलससँ बँचैले मित्र जकाँ मखौल करै छी।”

पिशाचक बल घटए लगलै। आकारो छोट होइत गेलै। भिनसर भेल। नित्यकर्मसँ तीनू गोटे निवृत्ति भऽ चलैक तैयारी करए लगला। तखनि सात्यकि आ बलदेव अपन रतुका चरचा करैत जेतए-जेटए चोट लगल रहनि सेहो देखोलखिन। हँसैत वासुदेव कहलखिन-

“ई पिशाच आरो किछु नै छी । ई मात्र कृसंस्कार रूपी क्रोध छी । ओकरो ओहने प्रत्युत्तर भेटलै तँए बढैत गेल । मुदा जखनि ओकरा उपेक्षाक रूपमे देखलिये तखनि ओ छोट आ दुर्बल भऽ गेल ।”



स्वर्ग आ नर्क

विद्यालयक ओसारपर बैस गुरु आ शिष्य गप-सप्प करैत रहथि। एकटा शिष्य गुरुसँ स्वर्ग आ नर्कक सम्बन्धमे पुछलकनि। शिष्यकेँ बुझबैत गुरु बजला-

“स्वर्ग आ नर्क अही धरतीपर अछि। जे कर्मक अनुसार अही जिनगीमे भेटै छै।”

गुरुक उत्तरसँ शिष्य संतुष्ट नै भेल। शंका बनले रहलै। पुनः गुरुसँ अपन शंका व्यक्त केलक। गुरु बुझलनि जे बिना बेवहारिक जिनगी देखौने शिष्य संतुष्ट नै हएत। ओ उठि शिष्य सभकेँ संग केने गाम दिस विदा भेला।

गाममे एकटा बहेलियाक घर छेलै। ओइठाम पहुँचते सभ देखलक जे पेट-पोसैले बहेलिया जीव-हत्या कऽ रहल अछि। तेतबे नै, जीव हत्यो केने ने देहपर वस्त्र छै आ ने भरि पेट भोजन भेटै छै। धियो-पुतोक देहपर माछी भिनकै छै। एक्को क्षण ओतए रहैक इच्छा केकरो नै होइ छेलै। चुपचाप गुरुजी शिष्यक संग ओतएसँ विदा भऽ गेला। दोसर ठाम पहुँचला। ओ बेश्याक घर छेलै। युवावस्थामे ओ बेश्या खूब पाइओ कमेने छेली आ भोगो केने छेली। मुदा बुढ़ाडीमे आबि अनेको रोगसँ ग्रसित भऽ परिवारो-समाजोसँ तिरस्कृत भेल छेली। पेटक दुआरे भीख मंगै छेली। सभ कियो देखि ओतएसँ विदा भऽ गेला।

तेसर परिवार गृहस्तक छल। जैठाम जा सभ देखलखिन जे गृहस्त जेहने संयमी छथि तेहने परिश्रमी। स्वभावसँ उदार आ सद्गुणी सेहो छथि। जइसँ परिवार सुख-समृद्धिसँ भरल-पूरल छेलै। गृहस्तक परिवार देखि गुरुजी शिष्यक संग आगू बढ़ि चारिम परिवारमे पहुँचला। पोखरिक मोहारपर एकटा संत कुटी बनौने रहथि। शिक्षा आ प्रेरणा पबैले दिन-राति समाजक लोक अबैत-जाइत रहै छल। संतजी मस्त-मौला जिनगी बितबैत रहथि। ने मनमे एक्को मिसिआ क्रोध आ ने कोनो तरहक चिन्ता।

चारु परिवार देखि शिष्यक संग गुरुजी विद्यालय दिस चलला। रस्तामे शिष्यकेँ कहलखिन-

“पहिल जे दुनू परिवार देखलिये ओ नरकक रूपमे छल आ बादक जे दुनू परिवार देखलिये ओ स्वर्गक रूपमे।



यथार्थक बोध

शिखिध्वज ब्रह्मज्ञानी बनए चाहैत रहथि। ओ सुनने रहथि जे तियाग आ वैराग्यसँ मनुख ब्रह्मज्ञानी बनैए। तँए शिखिध्वज घर-परिवार छोड़ि जंगलमे कुटी बना रहए लगला। ओइ वनमे तपस्वी शतमन्यु सेहो रहै छेलखिन। शतमन्युकें पता लगलनि जे एकटा नवांकुर घर-परिवार छोड़ि कुटी बना रहैए।

शतमन्यु आबि शिखिध्वजकें कहलखिन-

“गामक घर-गिरहस्ती उजारि वनमे वएह सभ सरंजाम जुटबैमे लागि गेलौं, तइसँ की लाभ? वैराग्य तँ अहंता आ लिप्सासँ हेबाक चाही। जौं भऽ सकए तँ घरेमे तपोवन बना सकै छी।”

शतमन्युक विचार सुनि शिखिध्वजकें वास्तविकताक बोध भऽ गेलनि। ओ घूमि कऽ घर आबि परिवारक बीच रहि सेवा-साधनामे जुटि गेला। शिखिध्वज एकाकी मुक्तिक जगह सामूहिक मुक्तिक मार्ग अपनौलनि। हुनके वंशमे बाल्यखिल्य ऋषि भेलखिन, जे सौंसे जम्बूद्वीपकें देवभूमि बना देलखिन।



विद्वताक मद

एक दिन महाकवि माघ राजा भोजक संग वन-विहार कऽ घुमल अबैत रहथि। रस्तामे एकटा झोपडी देखलखिन। ओइ झोपडीमे एकटा वृद्धा टोकरी माने तकली कटैत रहथि। ओइ वृद्धासँ माघ पुछलखिन-

“ई रस्ता केतए जाइत अछि?”

वृद्धा माघकेँ चीन्हि गेली। ओ हँसैत उत्तर देलखिन-

“वत्स, रस्ता तँ केतौ नै जाइत अछि। जाइत अछि ओइपर चलैबला राही। अहाँ सभ के छी?”

माघ-

“हम सभ यात्री छी।”

मुस्कीआइत वृद्धा बाजलि-

“तात्, यात्री तँ सुरुज आ चान दुइए टा छथि। जे दिन-राति चलैत रहै छथि। सच-सच कहू जे अहाँ के छी?”

थोड़े चिन्तित होइत माघ कहलखिन-

“माँ, हम क्षणभंगुर आदमी छी।”

थोड़े गंभीर होइत पुनः वृद्धा कहलकनि-

“बेटा, यौवन आ धने टा क्षणभंगुर होइए। पुराण कहैए जे ऐ दुनूक बिसवास नै करी।”

माघक चिन्ता आरो बढ़लनि। रोषमे कहलखिन-

“हम राजा छी।”

हुनका मनमे एलनि जे राजाक नाओं लेलासँ ओ सहमि जेती। मुदा ओ वृद्धा निर्भीक भऽ उत्तर देलकनि-

“नै भाय, अहाँ राजा केना भऽ सकै छी? शास्त्र तँ दुइए टा राजा-

“यम आ इन्द्र मानने अछि।”



अनंत

“हरि अनंत हरि कथा अनंता” तुलसी

एक दिन भगवान बुद्ध आनंदक संग एकटा सघन वनसँ गुजरैत रहथि।
रस्तामे दुनू गोटेक बीच ज्ञानक चर्च चलै छल। आनंद पुछलखिन-

“देव, अपने तँ ज्ञानक भंडार छिऐ। अपने जे जनै छी ओ हमरा
बुझा देलौं?”

आनंदक बात सुनि उलटि कऽ बुद्धदेव पुछलखिन-

“ऐ जंगलक जमीनपर केते सूखल पात पड़ल छै, जइ गाछक
निच्चाँमे ठाढ़ छी ओइ गाछमे केते सूखल पात लगल छै? आ
अपना सबहक पएरक निच्चाँ केते पड़ल छै। सभ मिला कऽ केते
हएत?”

बुद्धदेवक प्रश्नसँ आनंद निरुत्तर भऽ गेला। आनंदकेँ उत्तर नै दैत देखि
तथागत कहलखिन-

“ज्ञानक विस्तार ओते अछि जेते ऐ वन प्रदेशमे सूखल पातक
परिवार। अखनि धरि हमहूँ एतबे बुझलौं हेन जे जेते वृक्षक ऊपर
सूखल पात अछि। मुदा पएरक निच्चाँ जे अछि ओ हमहूँ ने बुझै
छी।”



हँसैत लहास

जिनगीकें जिनगी बूझि मनुखकें जीबाक चाही। जौं से नै भेल तँ जिनगीक कोनो महत तँ नै रहि जाइत। जे कियो जिनगीकें कमेनाइ-खेनाइ धरि रखैत, ओकर संस्कार मरलोपर ओहिना रहि जाइत।

एक दिन दूटा शव एक्के बेर श्मशान पहुँचल। कटिआरीक लोक डाहैक ओरियान करए लगल। एकटा शव दोसरकें देखि ठहाका मारि हँसए लगल। हँसैत शवकें देखि दोसर शव पुछलक-

“बंधु, एहेन कोन बात भऽ गेल जे अहाँ हँसि रहल छी। मुदा दुनू गोटे एक्के स्थितिमे छी?”

हँसैत शव उत्तर देलक-

“बंधु, अहाँकें मन अछि कि नै मुदा हमरा तँ मन अछि। दुनू गोटे संगे गामक स्कूलमे पढ़ने रही। पढ़लाक बाद अहाँ वणिक वृत्तिमे लागि दिन-राति पाइएक हिसाबो आ भोग-विलासमे लागि गेलौं। आब अहाँक ओहन स्थिति भऽ गेल अछि जे असमसानो घाटपर पाइएक हिसाब आ भोगे-विलासक गर लगबै छी।”

“और अहाँ?” -दोसर पुछलक।

“जाधरि जीबै छेलौं मस्तीमे रहलौं। ने कहियो बेसी पाइक खगता भेल आ ने तइले मनमे चिन्ता। जहिना चिन्ता मुक्त पहिने छेलौं तहिना अखनि छी। अच्छा आब अहूँ जाउ आ हमहूँ जाइ छी। अच्छिया तैयार भऽ गेल। नमस्कार।” कहि पहिल शव चीता दिस बढ़ि गेल आ दोसर कनगुरिया ऑगरीपर हिसाब जोड़ए लगल।



अनगढ़ चेतना

ज्ञान अनगढ़ चित्तकेँ सुगढ़ बनबैए। जइसँ सोचै आ चलैक दिशा निर्धारित होइए। ओना मनुखक अनगढ़ताक प्राप्ति जन्मजात होइ छै। जहिना शरीरक रक्षा लेल भोजनक प्रयोजन होइत अछि तहिना मनुखता प्राप्त करैले विद्याक।

वशिष्ठजी रामकेँ भयंकर वनमे विचरण करैबला उनमत्तक आँखिक देखल कथा सुनबैत कहलखिन-

“उनमत्त देखैमे तँ स्वस्थ बूझि पड़ैत मुदा ओकर जे क्रिया-कलाप होइत ओ विल्कुल पागल सदृश होइत। सदिखन रस्ताक व्यतिक्रम करैत। जहाँ-तहाँ बौआएलो घुमैत आ अन्ट-सन्ट रस्ता सेहो बनबैत। जइसँ अपनो देह-हाथक नोकसान करैत आ काँट-कृशमे ओझराइलो रहैत। मुदा तैयो अपनाकेँ बुधियार बूझि दोसराक नीको विचारकेँ मोजर ने दैत। जइसँ सदिखन भय माने डर आ चिन्तासँ मन त्रस्त रहैत। मुदा तैयो ने अधला रस्ता छोड़ैत आ ने केकरो नीक करैत।”

वशिष्ठक विचार सुनि राम पुछलखिन-

“भगवन, ओ उन्मादी केतए रहैए, ओकर नाओं की छिऐ आ ओकर कोनो उपचार छै की नै?”

वशिष्ठ-

“वत्स, ओ कियो आन नै, मनुखक अनगढ़ चेतना छी। जे जालमे फँसल ओइ चिड़ै सदृश अछि जे मरैक रस्ता देखि फड़फड़ाइत तँ अछि मुदा निकलैक रस्ते ने देखैत।”



सत्य विद्या

विद्याध्ययन साधना छी । जइसँ अन्तः क्षेत्र शुद्ध आ पुरुषार्थक जनम होइत । जेकरा संपादित केने बिना मानव जीवनक सभ उपलब्धि व्यर्थ ।

जिनगी भरि भरद्वाज मुनि तपस्या करैत रहला । जखनि मरैक बेर एलनि तँ देवदूत लेमए एलनि । देवदूतकेँ भारद्वाज मुनि कहलखिन-

“हमरा अही लोकमे फेर जनमए देल जाउ । स्वर्ग जा कऽ की करब?”

मुनिक बात सुनि, आश्चर्यित होइत देवदूत पुछलकनि-

“तपक लक्ष्य तँ स्वर्ग प्राप्त करब होइए ।”

भारद्वाज कहलखिन-

“ज्ञान संचय आ पूर्ण सत्य तक पहुँचैले, अखनि हमर ज्ञान-संपदा बहुत कम अछि । तँए, ओते जनम धरि तपस्या करए चाहै छी जाधरि सत्यकेँ लगसँ नै देखि सकिए । स्वर्गसँ ज्ञान बहुत पैघ होइए । स्वर्गसँ सुविधा भेटै छै मुदा ज्ञानसँ आनंद ।”



समता

गुरुकुलमे जे विद्याध्ययन होइत ओ अमृत सदृश होइत। किएक तँ ओ साधनाक नै उच्च स्तरीय आदर्शक निर्माण करैत। ऐ हेतु गुरुकुलक छात्र उपभोगकें नै उपयोगक महत् सत्-प्रयोजन लेल अपन अगिला माने भावी दिशाधाराकें निर्धारित करैए।

एक दिन सम्पन्न घरसँ आएल छात्र गुरुकुल संचालक आत्रेयसँ पुछलकनि-

“भगवन, जे कियो अपना घरसँ नीक भोजन आ नीक वस्त्र मंगा सकै छथि ओ ओकर उपयोग किए ने कऽ सकै छथि? ऊहो किए निर्धने परिवारक छात्र जकाँ जीवन-यापन करत?”

गंभीर मुद्रामे आत्रेय कहलखिन-

“छात्र, श्रेष्ठ माने उत्तम मनुख, जइ समाजमे रहै छथि ओ ओइ समाजक अनुकूल जीवन-यापन करै छथि। यह समता अपनो आ दोसरो लेले सौजन्य उत्पन्न करैए। सम्पन्नता प्रदर्शन इर्ष्या आ अहंकारकें उत्पन्न करैए। जइसँ विग्रहक जनम होइए। जे सहयोगक नींवकें दोमि दइए। विषमतेसँ समाजमे अनेको विग्रह ठाढ़ होइत अछि। अपराध बढ़ैए, जइसँ अनाचारक जनम सेहो होइत अछि। ऐठाम माने गुरुकुलमे समान जीवन जीबैक रस्ता सिखौल जाइत अछि। धनिक अपन धन गरीबकें उठबैमे लगबए नै कि निजी सुविधा-संवर्द्धनमे।”

समताक दूरगामी सत्-परिणामकें छात्र बूझि अधिक उपयोगक विचारकें बदलि लेलक।



जेते चोट तेते सक्कत

कोशाम्बीक राजा शूरसेनसँ मंत्री भद्रक पुछलकनि-

“राजन, अपने श्रीमंत छी। राकुमारक शिक्षा लेल एकसँ एक विद्वान् रखि सकै छिए। तहन अपने ऐ पुष्प सन बच्चाकेँ वन्य प्रदेशमे बनल गुरुकुलमे किए पठबै छियनि? जैठाम सुविधाक घोर अभाव छै। एहेन कष्टमय जीवनचार्यामे बच्चाकेँ पठाएब उचित नै?”

मंत्रीक विचार सुनि मुस्कीआइत शूरसेन उत्तर देलखिन-

“हे भद्रक, जहिना आगिमे तपौलासँ सोना चमकै छै तहिना कष्टपूर्ण जीवनचर्यासँ मनुख बनैए। कष्टे मनुखकेँ धैर्य, साहस आ अनुभव दइ छै।

वातावरणक प्रभाव सभसँ बेसी नव उमेरक बच्चेपर पड़ैए। ऋषि सम्पर्क आ कष्टमय जिनगी राजमहलमे थोड़े भेट सकैए। ऐठाम तँ हम ओकरा भोगीए-विलासी बना सकै छी। जौ क्षणिक मोहमे पड़ब तँ ओकर भविष्ये चैपट्ट भऽ जेतै। तँए ओकर उज्ज्वल भविस लेल गुरुकुल पठाएब उचित अछि।”



परिष्कार

गुरुकुलमे विद्याध्ययन सभ जाति, सभ वर्ण आ सभ समुदाय लेल हितकारी अछि। अगर जाँ किनको अपन पैतृक बेवसाय करबाक होन्हि, तिनको पैघ उपलब्धि लेल संस्कारक शिक्षाक ग्रहन अत्यन्त अनिवार्य अछि।

एक गाममे क्षत्रिय आ वैश्य रहै छल। ब्राह्मणक बालक तँ गुरुकुल पढ़ैले चलि गेला। दुनूक -क्षत्रीओ आ वैश्योक- मनमे छल जे हम योद्धा बनब तँ हम वणिक। अनेरे विद्याध्ययनमे समए किए लगाएब। मुदा जखनि कनी असथिर भऽ सोचलक तँ अपनापर शंका जरूर भेलै। मनमे खुट-खुटी एलै। मने-मन सोचलक जे से नै तँ कुल पुरोहितसँ किए ने पूछि लियनि। दुनु जा कऽ पुरोहितसँ पुछलकनि। कुल पुरोहित उत्तर देलखिन-

“ब्रह्मविद्याक तात्पर्य संयासी बनि भीख मांगब नै होइत। ओ जीवनक अंतिम भागमे अधिकारी बेकती द्वारा ग्रहण कएल जाइ छै। ब्रह्मिद्याक प्रयोजन गुण, कर्म, स्वभावक परिष्कार करब होइ छै। जे सभ स्तरक प्रगति लेल आवश्यक अछि। क्षत्रिय आ वैश्य जाँ ओइ विद्याकँ ग्रहण करत तँ अपन-अपन जिनगीक कार्य क्षेत्रमे अधिक सफल आ सुन्दर ढंगसँ सम्पादन करत।”

प्राचीनकालमे गुरुकुलमे, कठिनसँ कठिन कार्यक भार छात्रकँ देल जाइ छल। जइसँ भारीसँ भारी काज करबाक अभ्यास बनै छेलै।

कुल पुरोहितक परामर्श मानि ऊहो दुनु -क्षत्रिय और वैश्य- अपन-अपन बालककँ गुरुकुल भेजब शुरू केलक।

गुरुकुलसँ अध्ययन कऽ लौटलापर ऊहो अपन काजकँ, बिनु अध्ययन केलहाक तुलनामे अधिक सफल भेल।



कथनी नै करनी

एकटा लोहार तीर बनबैक विद्यामे निपुन छल । तीरो अद्भुत बनबै छल ।
तीर बनबैक कलाकेँ सीखैले दोसर लोहार आबि पुछलक-

“भाय, तौ केना वाण बनबै छह, से हमरो कहऽ।”

पहिल लोहार जवाब देलक-

“भाइ, कहले टा सँ सभ लूडि नै होइ छै । तँए हम वाण बनबै छी,
तूँ धियानसँ देखह ।”

सुनि दोसर लोहार लगमे बैस देखए लगल । तखने एकटा बरियाती
बगलक रस्तासँ गुजरै छल । बरियातीओ खूब झमटगर । दर्जनो गाडी, रंग-
बिरंगक बजाक संग सजाबटो सुन्दर रहए । दोसर लोहार, तीर बनौनाइ देखब
छोड़ि, बरियाती देखए लगल । जखनि बरियाती आँखिक अढ़ भऽ गेल,
तखनि ओ लोहार बाजल-

“बड़ सुन्दर बरियाती छेलै ।”

तीर बनबैबला लोहार कहलक-

“भाय, हमरा ने तखनि देखैक फुरसत छल आ ने अखनि तोहर
बात सुनैक अछि । जाधरि कोनो काजकेँ तत्परतासँ नै कएल
जाएत ताधरि काजक सफलताक कोन आश । तँए जे काज
तत्परता आ एकाग्रतासँ कएल जाएत, वएह काज सफल हएत ।”

अपसोच करैत दोसर लोहार सोचए लगल जे एकाग्रताक अभ्यास करब
सभसँ जरूरी अछि । जौ से नै करब तँ जीवनमे कहियो कोनो काजमे
सफल नै हएब ।

ज्ञानक सूत्र केतौसँ भेटए ओकर अंगीकार जरूर करक चाही ।



शालीनता

विद्या बेक्तीकेँ विनम्र बनबैए। ओकर अन्तरंगक स्तरकेँ ऊपर उठबैए। शिक्षा केतौ भेट सकैए मुदा विद्याक सूत्र केतौ-केतौ भेटैए। जइ बेक्तीकेँ विद्याक सूत्र भेट जाइत ओइ बेक्तीक काया-कल्प भऽ जाइत। छान्दोग्य उपनिषदक छठम प्रपाठमे उद्दालक आ श्वेतकेतुक संवाद अछि।

विद्यालयक परीक्षा पास कऽ श्वेतकेतु आएल। मुदा ने ओकर आत्म परिष्कृत भेल आ ने उदंडता कमल। जइसँ श्वेतकेतुक पिता उद्दालककेँ दुख भेलनि। खिसिआ कऽ कहलखिन-

“अगर व्यक्तित्वमे शालीनताक समावेश नै भेल तँ अनेरे कियो किए पढ़ैमे समए नष्ट करत?”

महसूस करैत श्वेतकेतु कहलकनि-

“अगर ई रहस्य जौं हमर शिक्षक जनितथि तँ जिनगी भरि शिक्षके किएक रहितथि वा तँ ऋषि बनैबतथि वा द्रष्टा।”

श्वेतकेतुक विचार सुनि पिता मने-मन सोचए लगला जे पुत्रक प्रति पितोक दायित्व होइत। एकटा गुलरिक फड़ आनि उद्दालक फोड़लनि। गुलरिक भीतरमे छोट-छोट अनेको बीआ छेलै। ओइ बीआकेँ देखबैत कहलखिन-

“ऐ नान्हि-नान्हिटा बीआक भीतर विशाल वृक्ष छिपल अछि। तहिना जेकरा आत्म-ज्ञान भऽ जाइ छै ओ वृक्षे सदृश विकासो करै छै आ फड़बो-फुलेबो करै अछि। तोहूँ ओइ तत्वकेँ चिन्हह।”



मजूरी

एक दिन गाड़ीक प्रतीक्षामे लियो टाल्सताय स्टेशनपर ठाढ़ रहथि। एकटा अमीर परिवारक महिला, साधारण आदमी बूझि हुनका कहलकनि-

“हमर पति सामनेबला होटलमे छथि। अहाँ जा कऽ हुनका ई चिट्ठी दऽ अबियनु। ऐ काज लेल दू आना पाइ देब।”

चिट्ठी नेने टाल्सताय होटल जा दऽ देलखिन। घूमि कऽ आबि अपन कमेलहा दू आना पाइओ लऽ लेलनि। कनीकाल पछाति एकटा अमीर आदमी आबि, प्रणाम कऽ टाल्सतायसँ गप-सप्य करए लगल। ओ आदमी हुनकासँ नम्रतापूर्वक गप करैत। गप-सप्यक क्रममे ओ आदमी टाल्सतायकेँ आदर सूचक शब्द “काउंट” सँ सम्बोधित करैत रहनि। बगलमे बैसल ओ महिला सभ किछु देखैत-सुनैत। ओ महिला एक गोटेकेँ पुछलक-

“ई के छथि?”

ओ आदमी लियो टाल्सतायक नाओं कहलखिन। टाल्सताइक नाओं सुनि ओ महिला, टाल्सताय लग आबि क्षमा माँगि अपन दुनू आना पाइ घुमा दइले कहलकनि। हँसैत टाल्सताय उत्तर देल-

“बहिन जी, ई हमर मजूरीक पाइ छी। एकरा हम किन्नहु नै घुमाएब।”



जीवन यात्रा

गंगोत्रीसँ गंगाजल धरतीसँ बाहर निकलि चलि पड़ल। पहाडसँ निच्चाँ आरो निच्चाँ होइत मैदानमे पहुँचल। एक गोटे ऐ प्रक्रियाकँ गंभीरतासँ देखि रहल छल। आगू मुहँ जल बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। जइमे अनेको जल-नद आबि-आबि मिलैत गेल। जइसँ एक विशाल नदी बनि गेल। ओ नदी जाइत-जाइत समुद्रमे मिलि गेल। जे बेकती देखि रहल छेलै। ओइ बेकतीक मनमे भेलै जे जलक ई मुरुखपाना छी। किएक तँ जे हिमालयक उच्च शिखर छोड़ि, अनेक प्रकारक दुख उठा, नोनगर पानिमे मिलल। एकरा मुरुखपाना नै कहबै तँ की कहबै? ओइ बेकतीक मनः स्थितिकँ नदी बूझि गेल। कहलक-

“अहाँ हमर यात्राक मर्म नै बूझि सकलौं। केतबो ऊँच हिमालय किए ने हुअ मुदा ओ अपूर्ण अछि। पूर्णता तँ गहराइमे होइ छै, जैठाम पहुँचलापर मनक सभ कामना समाप्त भऽ जाइ छै। हम हिमालय सन महान ऊँचाइक आत्मा छी जे पूर्णता पबैले निरन्तर चलैत समुद्रक गहराइमे पहुँचलौं तँए, हमरा बेहद खुशी अछि, अप्पन लक्ष्य धरि पहुँच गेलौं।”



ज्योति

जनक और याज्ञवल्क्यक बीच ज्ञानक चरचा चलै छल। जनक पुछलखिन-

“सुर्यास्त भेलापर -सुरूज डुमलापर- अन्हारक सघन वनमे रस्ता केना ताकल जाए?”

जनकक प्रश्न सुनि मुस्कीआइत याज्ञवल्क्य उत्तर देलखिन-

“तरेगन रस्ता बता सकैत।”

याज्ञवल्क्यक उत्तरसँ असन्तुष्ट होइत जनक पुछलखिन-

“अगर मेघौन होय? संगे दीपकक प्रकाश सेहो नै उपलब्ध होय, तखनि?”

जनकक प्रश्नक गंभीरताकेँ बुझैत याज्ञवल्क्य कहलखिन-

“अपना सुझि-बुझिक सहारा लेबाक चाही।”

विवेकक प्रकाश हर मनुखमे होइ छै। जे कहियो नै बुझाइत। हे राजन, ओइ सूतल विवेककेँ जगाएबे ऋषि समुदायिक पवित्र कर्तव्य छी।



पवनक विवेक

चन्द्रमाकेँ दू सन्तान- एक बेटा आ एक बेटी। बेटाक नाओं पवन आ बेटीक आँधी। एक दिन आँधीक मनमे उपकल जे पिता सांसारिक पिता जकाँ हमरो दुनू भाए-बहिनमे भेद करै छथि। आँधीक बेथाकेँ चन्द्रमा बूझि गेलखिन। बेटीक आत्मनिरीक्षण लेल चन्द्रमा एकटा अवसर देबाक विचार केलनि।

दुनू भाए-बहिनकेँ बजा कहलखिन-

“बाउ, अहाँ सभ स्वर्गक इन्द्रक काननक परिजात नामक देववृक्षकेँ देखने छी?”

दुनू भाए-बहिन-

“हँ।”

पिता- “अहाँ दुनू ओतए जाउ आ सात खेपि ओकर परिक्रमा कए कऽ आउ।”

पिताक आज्ञा मानि दुनू गोटे चलि देलक। आँधी हू-हू-आ कऽ दौगल। जइसँ गरदा, खढ़-पात आ कूड़ा-कड़कट उड़बैत लगले पहुँच आ सात बेर परिक्रमा कऽ चोट्टे घूमि कऽ आबि गेल। मने-मन आँधी सोचैत जे हमर काज देखि पिता प्रशंसा करता।

पवन पाछू घूमि कऽ आएल। ओकरा संग सौँधी-सुगंध सेहो आएल। जइसँ सौँसे घर गमकि उठल।

मुस्कीआइत चन्द्रमा बेटीकेँ कहलखिन-

“बेटी, अहाँ नीक जकाँ बूझि गेल हेबै जे जे अधिक तेज गतिसेँ चलत ओ खाली झोरा लऽ कऽ औत मुदा जे स्वाभाविक गतिसेँ चलत ओ मनकेँ मुग्ध करैबला सुगंध सेहो लौत। जइसँ सौँसे वातावरण सुगंधित होएत।

वानप्रस्थक यात्रा पवन देव सदृश उदेसपूर्ण होइत।



आत्मबल-२

जइ समैमे डाक्टर राधाकृष्णन कौलेजमे पढ़ति रहथि, घटना ओइ समैक छी । कौलेजमे पादरी शिक्षक अधिक ।

एक दिन एकटा प्रोफेसर, क्लासमे हिन्दू धर्मक निन्दा खुलेआम केलनि । बालक राधाकृष्णन सेहो क्लासमे रहथि । प्रोफेसरक बातसँ हुनका एते क्रोध भेलनि जे सम्हारि नै सकला । उठि कऽ ठाढ़ होइत पुछलखिन-

“महाशय, की इसाई धरम आन धर्मक निन्दा केनाइ सिखबैए?

राधाकृष्णनक प्रश्न सुनि ओ तमसा कऽ बाजला-

“और की हिन्दुधर्म दोसराक प्रशंसा करैए।”

राधाकृष्णन जवाब देलखिन-

“हँ, हमर धरम कोनो धर्मक अधला नै करैए । गीतामे कृष्ण कहने छथिन ‘कोनो देवताकँ उपासना केलासँ हमरे उपासना होइत अछि ।’ आब अहीं कहू जे हमर धरम केकर निन्दा करैए।”

प्रोफेसर निरुत्तर भऽ गेला ।



खुदीराम बोस

स्वतंत्रता संग्रामक प्रखर सिपाही खुदीराम बोसकेँ मुजफ्फरपुर जेलमे फाँसी भेलनि। जइँ समए फाँसी भेल रहनि ओइँ समए खुदीरामक वएस मात्र अठारह बरख आठ मासक छेलनि। ओना हुनकर जनम बंगालमे भेल छेलनि मुदा ओ अपनाकेँ भारत माताक बेटा बुझै छला। हुनकापर अंग्रेज किंग फोर्डक हत्याक आरोप लगौल गेल छेलनि। ओ जेहने कर्मठ तेहने हँसमुख छला। फाँसीसँ किछु समए पहिने जेलर उदार पूर्वक आम आनि खाइले दैत कहलकनि-

“चुपचाप खा लिअ। कियो बुझए नै।”

खुदीराम आम रखि लेलनि। साँझूँ पहर जखनि दोहरा कऽ जेलर आबि पुछलकनि तँ ओ जवाब देलखिन-

“जखनि आइँ फाँसीए होइबला अछि, तँ डरसँ किछु खाइ-पीबैक मन नै होइए। अहाँक आम ओहिना कोनमे राखल अछि।”

आमक गुद्दा खा कऽ बोस खोंइचाक खप्पामे मुहसँ हवा भरि ओहिना रखि देने। कोनमे पहुँच जखनि जेलर आम उठौलक तँ पचकि गेलै। जैपर जेलर भभा कऽ हँसल। जेलरक हँसी देखि खुदीरामो खूब जोरसँ ठहाका मारि हँसल।

मृत्युक एक्को पाइ डर हुनका नै छेलनि।

खुदीरामक फाँसीक चरचा, लोकमान्य तिलक अपन पत्रिका “केशरी”मे “देशक दुर्भाग्य” शीर्षक नाओंसँ लेख लिखलनि। जैपर तिलककेँ छह मासक कारावास भेलनि।



शिष्यकेँ शिक्षेता नै परीक्षो

गुरुकुलमे ई अनिवार्य नै जे नीक -आलीशान- मकानक बन्द कोठरीएटा मे शिक्षा देल जाए। अनिवार्य ई जे छात्रक मनः स्थितिक अनुरूप प्रकृतिक पाठशालामे बेवहारिक शिक्षा भेटै। जइसँ व्यक्तित्वमे प्रखरताक समावेश संवर्धन भऽ सकए।

महर्षि जरत्कारुक गुरुकुलमे छात्र विदुध प्रवेश पौलक। किछुए दिन पछाति विदुधक प्रतिभासँ गुरु जरत्कारु प्रभावित होइत कहलखिन-

“बाउ, पौरुषक -पुरुषत्व- परीक्षामे उत्तीर्ण भेलेपर कियो बरिष्ठ - महान- बनि सकैए। अहाँ पराक्रमक संग-संग पोथीओ पढ़ू।”

महर्षिक परामर्शसँ सहमत होइत विदुध कहलकनि-

“अपनेक जे आदेश हुअए, तैयार छी।”

विदुध कऽ एक सए गाए प्रभुदारण्यमे चरबैक आदेश दैत कहलखिन-

“जखनि हजार गाए भऽ जाए तखनि घूमि कऽ आएब।”

पोथी सभ सेहो लऽ लेलक।

सए गाएकेँ हजार गाए बनबैमे विदुधकेँ बारह बरख समए लगल। बच्चो सभ पुष्ट। किएक तँ कोनो बच्चाकेँ दूध पीबैमे कोताही नै करैत।

ऐ बारह बरखक बीच विदुध अनेको साधक, विद्वानसँ सम्पर्क बना सीखबो केलक आ रस्ताक बाधासँ सेहो निपटल। जइसँ ओकर प्रतिभामे आरो चारि चान लागि गेलै घूमि कऽ एलापर चेहरासँ ब्रह्मतेज टपकैत। किएक तँ अपन बुधिक प्रयोगसँ पढ़बो केलक आ बुझबो आ सीखबो केलक।

विदुधक मेहनति आ साहस देखि जरत्कारु हृदैसँ आनन्दित होइत अपन आश्रमक भार दऽ नम्हर काज करए अपने चलि गेला।



लौह पुरुष

ई घटना १९४६ई.क छी। बम्बई बंदरगाहमे नौ-सैनिक विद्रोह केलक। अंग्रेज शासक ओकरा -नौ-सैनिककँ- गोलीसँ भुजि देबाक धमकी देलक। जेकरा जवाबमे भारतक नौ-सेना माटिमे मिला देब कहलक। स्थिति भयानक बनि गेल। पाछू हटैले कियो तैयार नै। ओइ समए सरदार वल्लभ भाय पटेलक हाथमे बम्बईक नेतृत्व छेलनि। जिनकापर सभ टकटकी लगौने। मुदा सरदार पटेलक मनमे एक्को मिसिआ घबडाहटि नै। बम्बईक गवर्नर बजा कऽ मारे अन्ट-सन्ट कहलकनि। गवर्नरक बात सुनि, शेरक बोली सदृश गरजि कऽ सरदार पटेल उत्तर देलकनि-

“ओ -गवर्नर- अपना सरकारसँ पूछि लिअ जे अंग्रेज भारतसँ मित्र जकाँ विदा हएत आकि लाश बनि।”

अंगेरज गवर्नर सरदार पटेलक जवाबसँ ठर्रा गेल। आखिरकार ओकरा समझौता करए पड़ल। वएह सरदार पटेल स्वतंत्र भारतक पहिल गृहमंत्री बनला।

कोनो आदमीमे साहस ओहिना नै बनैत। पुरुषार्थक बलपर विकसित होइत।



जंग लगल

एक बेर भगवान बुद्धक समक्ष श्रेष्ठ पुत्र सुमंत आ श्रमिक पुत्र तरुण संगे प्रब्रज्या लेलक। दुनू गोटे भावनापूर्वक संघारामक अनुशासनक पालन करए लगल। किछु मासक प्रगतिक जानकारी दैत प्रधान भिक्षु (संघाराम) कहलकनि-

“तरुणक अपेक्षा सुमंत अधिक स्वस्थ आ पढ़ल-लिखल अछि। भावनो प्रवल छै। मुदा सौंपल गेल काज आ साधनोक उपलब्धि तरुणमे सुमंतक अपेक्षा अधिक अछि। जेकर कारण बूझिमे नै अबैए।”

संघारामक विचार सुनि तथागत -बुद्ध- कहलखिन-

“अखनि सुमंत जंग लगल लोहाक औजार सदृश अछि। जंग छुटैमे किछु समए लागत।”

तथागतक बात संघाराम नीक-नाहाँति नै बूझि सकल। तँए प्रश्न वाचक नजरि-सँ-नजरि मिला टकर-टकर मुँह दिस तकैत रहलनि।

स्पष्ट करैत बुद्ध कहलखिन-

“सुमंतक अधिक समए आलस्य आ प्रमादमे बितल अछि। जइसँ व्यक्तित्व, जंग लगल औजार सदृश भऽ गेल अछि। मुदा तरुण एहेन उपकरण अछि जेकरामे जंग छूबो नै केलक अछि। तँए, लगले फल पाबि रहल अछि। सुमंतक जंग छोड़बैमे पर्याप्त समए आ साधना लागत। तखनि जा कऽ अभीष्ट फल निकलत।”



जीवकक परीक्षा

आदर्श शिक्षक खाली अध्ययने नै छात्रकें ओइ विद्यामे एहेन पारंगत बना दैत, जइसँ ओ स्वर्ण बनि चमकि उठैत। तक्षशिला विश्वविद्यालयमे सात बरख आयुर्वेदक शिक्षा पाबि आचार्य वृहस्पति जीवकक परीक्षा लऽ कऽ विदा करबाक समए निकाललनि। समए निकालि गुरु (वृहस्पति) जीवककें हाथमे खुरपी दैत कहलखिन-

“एक योजनक बीच एकटा एहेन पौधा उपाड़ि कऽ नेने आउ जेकर औषधि नै बनैत होय।”

खुरपी लऽ जीवक विदा भेल। मास दिन घुमैत रहल मुदा एक्कोटा एहेन गाछ नै भेटलै जेकर औषधि नै बनैत होय। मास दिन पछाति जीवक घूमि कऽ आबि वृहस्पतिकें कहलकनि-

“गुरुदेव, हमरा एक्कोटा एहेन गाछ नै भेटल जेकर औषधि नै बनैत होय।”

जीवककें गरदनि लगबैत वृहस्पति कहलखिन-

“वत्स, अहाँ सफल भेलौं। आब अहाँ जाउ, आयुर्वेदक प्रचार करू।”



तप

श्रमे ओ देवता छी जे सभ सिद्धिक स्वामी छी। आयुष्यकेँ पूर्वाङ्गमे एकर सम्पादन लेल विधाता मनुखकेँ शक्ति सम्पन्न बना दइ छथिन। जखने एकर -श्रमक- उपेक्षा होइत तखने समाज अवेवस्थित हुअ लगैत।

राजा बिराल मुनि बैवस्वतकेँ प्रणाम कऽ चुपचाप बैस गेला। सूक्ष्मदर्शी गुरु -बैवस्वत- बूझि गेलखिन जे कोनो गंभीर चिन्तामे बिराल पडल छथि।
पुछलखिन-

“बिराल, आइ अहाँ अशान्त जकाँ बूझि पडै छी। कथीक चिन्ता अछि से हमरो कहूँ?”

अपन अन्तर्वेदनाकेँ प्रगट करैत बिराल कहलखिन-

“देव, नै जानि किएक प्रजाजन अशान्त छथि। सभ कियो धरम आ शान्तिसँ विमुख भेल जा रहल छथि। जइसँ धन-धान्यक अभाव आ प्रेम-भाव टूटि रहल अछि। अपराध वृत्ति बढि रहल अछि।”

बिरालक विचार धियानसँ सुनि बैवस्वत कहलखिन-

“जइ देशमे लोक मेहनतिसँ देह चोरौत, श्रमकेँ सम्मान जनक स्थान नै देत, ओइठाम केना समृद्धि भऽ सकैए।”

श्रम ओहन तप छी जइसँ समाजक सभ दोष मेटा जाइत अछि। तँए, श्रमकेँ साधना बूझि सभकेँ ऐमे लागि जेबाक चाही। जइ परिवार, समाज आ देशमे श्रमकेँ जेते महत देल जाएत, ओ ओते उन्नति करत।



उल्टा अर्थ

शिक्षा केहेन देल जाए, की देल जाए ई गंभीर प्रश्न छी।

एक गोटेकेँ दूटा संतान छल। एक बेटा दोसर बेटी। सम्पन्न परिवार।
दुनू संतानकेँ बच्चेसँ सुख-सुविधा भेटैत रहल। जइसँ वयस्क होइत-होइत
अनेको व्यसनक आदति लागि गेलै।

अपन दुनू बच्चाकेँ बिगडल देखि पिताक मनमे चिन्ता भेलै। भीतरे-भीतर
सोगाए लगल। जइसँ रोगी जकाँ खिन्न हुआ लगल। एक दिन एकटा मित्र
पुछलकनि-

“मित्र, अहाँ दिनानुदिन खिन्न किएक भेल जा रहल छी?”

मित्रक बात सुनि ओ उत्तर देलक-

“मित्र, सभ किछु अछैतो दुनू बच्चा बिगड़ि गेल अछि। वएह चिन्ता
मनकेँ पकड़ने अछि।”

दुनू गोटे विचारि तँइ केलक जे दुनू बच्चाकेँ एक मास महाभारतक
कथा, जइमे धरम आ सदाचारक सभ तत्व मौजूद अछि, सुनौल जाए। सएह
केलक।

मास दिन महाभारतक कथा सुनला पछाति दुनू आरो बिगड़ि गेल। बेटा
अपना मितकेँ कहलक-

“भगवान श्री कृष्णकेँ सोलह हजार रानी छेलनि तँ दस-बीससँ
सम्बन्ध राखब केना अधला हएत?”

तहिना बेटीओ अपन बहिनाकेँ कहलक-

“कृन्तीकेँ कुमारिमे बेटा भेलै जे श्रेष्ठ नारीक श्रेणीमे छथि तखनि
हम कोन अधला काज करै छी।”

आब प्रश्न उठैत जे एना किएक भेल?

अखनि धरि जे कथा श्रवणक बेवहार अछि ओ अपूर्ण अछि। दृष्टिकोण
बदलैले एहेन प्रभावी वातावरण बनबए पड़त जइमे कथाक चर्च आ क्रियामे
समुचित समन्वय हेबाक चाही। तखने दृष्टिकोण बदलत आ समुचित उपयोगी
बनत।



जाति नै पानि

दुद्धदेवक प्रमुख शिष्य आनंद श्रावस्तीमे भिक्षाटन करैत रहथि। गरमी मास तँए रौदो तीख। हुनका पिआस लगलनि। लगमे पानिक कोनो जोगार नै देखि किछु आगू बढ़ला। एकटा युवतीकेँ इनारपर पानि भरैत देखलखिन। पानि देखि मनमे सबूर भेलनि। इनार लग पहुँच ओइ युवतीकेँ आनंद कहलखिन-

“दाय, हमरा बड़ जोर पिआस लगल अछि कनी पानि पियाउ?”

पानि नै दऽ ओ युवती कहलकनि-

“साधुबाबा, हम चंडालक बेटी छी हमर छूबल पानि केना पीब?”

कनीकाल गुम्म रहि आनंद कहलखिन-

“बुच्ची, हम तोरा तँ जाति नै पुछलियऽ। पानि मंगलियऽ।”

पिआससँ तरसैत आनंदकेँ देखि ओइ युवतीकेँ दया लगल। मुदा मनमे विचित्र द्वन्द्व उपकि गेलै। अंतमे ओ पानि भरि आनंदकेँ देलकनि पानि पीब आनंद तृप्त भऽ गेला।

महात्मा नारायण स्वामी कहने छथि जे जाति-पाति आ अस्पृश्यताक बंधन हिन्दू जाति लेल कलंक छी। यएह बंधन सभ जातिकेँ छिन्न-भिन्न केने अछि। एकरे चलैत सभ जातिक बीच घृणा आ द्वेष पसरल अछि।



ऊँच-नीच

एक राति, जखनि पुजेगरी मंदिरक केबाड़ बन्न कऽ चलि गेल, स्तम्भक माने खुट्टाक पाथर देवमूर्ति बनल पाथरसँ पुछलक-

“की भाय, हम सभ तँ एक्के पहाड़क पाथर छी। फेर अहाँक पूजा होइए आ हम जे मकानक -मंदिरक- भार उठैने छी से हमर कोनो मोजरे नै?”

देवताक आसनपर बैसल पाथर मने-मन विचार करए लगल। मुदा प्रश्नक जवाब नै बूझि कहलक-

“भाय, हम ऐ रहस्यकेँ नै जनै छी। पुजेगरी विद्वान छथि हुनकासँ बूझि काल्हि कहबह।”

प्रातःकाल पुजेगरी आबि पूजा करए लगल। फूल-पात चढ़ा, दुनू हाथ जोड़ि पुजेगरी धियान केलनि आकि देव-पाथर पुछलखिन-

“मंदिरमे जेते पाथर अछि सभ तँ गुण-जातिसँ एक्के अछि। फेर हम किएक पूजनीए छी?”

पुजेगरी-

“हे देव, अपने बड़ पैघ बात पुछलौं। एक गुण, घर्म आ जातिक सभ वस्तुक उपयोग एक्के पद लेल होय, ई सर्वथा असंभव अछि। प्रकृति केकरो एक रंग नै रहए दइए। जे मनुखोमे अछि। बहुतो मनुखमे एक तरहक प्रतिभा आ गुण-घर्म होइए मुदा ओहूमे अपन श्रेष्ठ कर्मक कारणे कियो सभसँ आगू बढ़ि जाइत आ कियो पाछू पड़ि जाइत। तँए एकर अर्थ ई नै जे ओ -पाछू पड़ल- अपनाकेँ हेय बुझए। किएक तँ परिवर्तन सृष्टिक निअम छिए। आइ जे ऊपर अछि ओ काल्हिओ ऊपरे रहत एकर कोनो गारंटी नै छै। तहिना जे निच्चाँ अछि ओ सभ दिन निच्चेँ रहत सेहो बात नै।”



पागलखाना

एकटा छोट-छीन देश आनन्द लोक। देशमे लोकक संख्या जमीने अनुकूल। उर्वर माटि मीठ पानि, मधुर हवाक मिलान तँए मनुखसँ लऽ कऽ गाछ-विरिछ, फल-फूल, जीव-जन्तु धरि आनंदसँ रहैत। दुनियाँक आन देशमे तँ ढेरो सम्प्रदाय अछि मुदा ओइ देशमे दुइएटा। दू सम्प्रदाय रहनीं कहियो अपनामे झगडा-झंझटि नै होइत। एक्के इनारक पानि पिऐत, एक्के पोखरिमे नहाइत। एक्के स्कूलमे पढ़ैत आ मौका-कुमौका एक्के जहलोमे रहैत। तेतबे नै, बाढ़ि, रौदी, बिहाड़ि, शीतलहरी सेहो संगे झेलैत।

एक दिन दुनू सम्प्रदायक बीच एकटा गाममे झगडा ऐ लेल भऽ गेलै जे दुनू अपन-अपन सम्प्रदायकेँ दोसरसँ पैघ कहए लगलै। एकटामसँ झगडा शुरू भेल आ सगरे देश पसरि गेल। झगडोक रूप बदलए लगलै। गारि-गरौबैलसँ पटका-पटकी होइत खून-खच्चर हुआ लगलै। अंतमे दुनू सम्प्रदाय दू देश बना लेलक।

दुनू देशक सिपाही सिमापर बाँसक खुट्टा गारि-गारि सिमान काएम करए लगल। अदहासँ जखनि आगू बढ़ल तँ सिमापर एकटा पागलखाना पड़ैत रहए।

दुनू देशक सिपाही पगलखानाक बगलमे बैस विचारए लगल जे ऐठाम केना सिमा काएम करब? दुनूमे सँ कियो अपना दिस पगलखाना लेमए नै चाहैत। दुनूक बीच विवाद शुरू भेल। दुनू अपन काज रोकि अपना-अपना सरकारकेँ खबरि देलक। सरकार पागलक संख्या पता लगबए चाहलक जे दुनू सम्प्रदायक कए-कए गोट पागल अछि। तइले आदेश देलक। दुनू देशक सिपाही मिलि कऽ पागलखाना जा पुछलक-

“अपन-अपन सम्प्रदायक नाओं कहू?”

सभ पागल हल्ला करैत कहए लगलै-

“अरे बेकूफ, भाग एतऽ सँ हम सभ एक छी आ एक रहब।”

